भील
जनजातीय गीत

गोविन्द गेहलोत
डॉ. महेश चन्द्र शांडिल्य

भील
जनजातीय गीत

गोविन्द गेहलोत
डॉ. महेश चन्द्र शांडिल्य

सम्पादक
डॉ. कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक – निदेशक
आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मुल्ला रमूज़ी संस्कृति भवन,
आधार तल, बाणगंगा, भोपाल
मध्यप्रदेश–462003 फोन–2551878, 2760668

प्रकाशन – वर्ष 2006

मूल्य – 50/– (रुपये पचास केवल)

स्वत्वाधिकार – आदिवासी लोक कला अकादमी,
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला अकादमी,
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

आवरण – भील जनजातीय चित्र, श्रीमती भूरी बाई
मुद्रण – राज प्रिंटर्स, भोपाल

- पुस्तिका से संबंधित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्यक्षेत्र भोपाल होगा।
- पुस्तक में छपी सामग्री के किसी भी माध्यम द्वारा उपयोग के पूर्व अकादमी से अनुमति लेना आवश्यक होगी।
- पुस्तिका में प्रकाशित समस्त सामग्री संकलनकर्त्ता, लेखक की अपनी है, आवश्यक नहीं है कि अकादमी इससे सहमत हो।

अनुक्रम

जन्म गीत / 7
सावां गीत / 20
झूमरली गीत / 65
भजन / 70
फाग गीत / 81
अन्य गीत / 99
मंत्र / 112
मृत्यु गीत / 118

जन्म गीत

कांकड़ आंबो मोरिया रे भँवरा, एकेली क्या जाय
बाळा की माय साथी पूजण जाय सातमा सखी न ले जायगा
पयली चिट्ठी बाळा का दाजी क दीजो,
दाजी आव रे जायो सार,
दूसरी चिट्ठी रे बाळा की जि माय क दीजो,
जि माय आव व झूलो राळ
तीसरी चिट्ठी रे बाळ का मामा क दीजो,
मामा आवरे गहणा लाव रे,
चौथी चिट्ठी रे बाळ की मामी क दीजो,
मामी आव वो झग्गा टोपी लाव वो,
पांचवीं चिट्ठी रे बाळा का नाना दाजी क दीजो,
नाना दाजी आव रे लाड़ लड़वा,
छटी चिट्ठी रे बाळ की मोमइ क दीजो,
मोमइ आव रे बाळ न्हवाड़,
सातवीं चिट्ठी रे बाळा की बुवा क दीजो,
बुवा आव वो पतासा वाट,
आठवीं चिट्ठी रे बाळ की मावसी क दीजो,

मावसी आव तो छग्गा टोपी लाव वो,
नवीं चिट्ठी रे बाळा की मामी क दीजो,
मामी आव वो गहणो पेराव वो।

– ग्राम के काकड़ (सीमा) पर आम में बौर आ गये हैं। बालक की माता अकेली जलवाय पूजन को नहीं जाती है, संग में सहेलियों को ले जाती हैं।

गीत में कहा गया है कि बालक का जलवाय पूजन का कार्यक्रम है, इसलिए पहली चिट्ठी बालक के दादा को देना और लिखना कि दादा आओ और बालक को उत्तम संस्कारित करो। दूसरी चिट्ठी बालक की दादी माँ को लिखना और लिखो कि आकर बालक का पालना बाँधें। तीसरी चिट्ठी बालक के मामा को भेजो और लिखना कि वह बालक के लिए गहने लायें। चौथी चिट्ठी बालक की मामी को भेजो कि वह बालक के लिए झग्गा–टोपी लायें। पाँचवी चिट्ठी बालक के नाना को लिखना कि वह लाड़–प्यार करें। छठी चिट्ठी बालक की नानी को लिखना कि वह आयें और बालक को स्नान करवायें। सातवीं चिट्ठी बालक की बुआ को लिखना कि वह आकर बतासे बाँटे। आठवीं चिट्ठी बालक की मौसी को देना कि वह बालक के लिए झग्गा–टोपी लायें। नवीं चिट्ठी बालक की मामी को देना कि वह आकर गहने पहनावें।

इस प्रकार गीत में जन्म संस्कार के बारे में प्रचलित रीति–रिवाज का वर्णन किया गया है।

जन्म गीत

वांझा घर पाळनो बंधाड़ूयो, भगवान बाळो आप्यो॥
बाळा का दाजी आव परदा लगाड़ दे, बाळ के छिपाई दीजो॥
भगवान बाळो आम्यो।
वांझा पार पाळनो बंधाड़ूयो, भगवान बाळो आप्यो॥

बाळा का मामा आओ, अरदा खोलि दीजो परदा खोलि दीजो॥
बाळा के वताई देजो, भगवान बाळो आप्यो॥
वांझा घर पाळनो बंधाड़्यो, भगवान बाळो आप्यो॥

– भगवान ने बाँझ के घर बालक को जन्म दिया और पालना बँधवाया। बालक के दादा आओ और परदे लगाकर बालक को छिपा दो ताकि किसी की नजर न लगे। आगे मामा से कहा गया है कि– मामा आओ और परदे खोलकर बालक को दिखाओ।

जन्म गीत

एक पतासा का नव सौ टुकड़ा।
एक टुकड़ो मने चूल्हा जगह मेकियो।
बाळ की ममई बठी–बठी चाख,
आवते चाट न जाते की चाट।
एक पतासा का नव सौ टुकड़ा।
एक टुकड़ो मन झोळी जगह मेक्यो।
बाळ की जी माय हिचकाड़ती चाट।
एक पतासा का नव सौ टुकड़ा।
एक टुकड़ो मन मोरी जगह मेक्यो।
बाळा की मामी जात की चाट, आवते की चाट।
एक पतासा का नव सौ टुकड़ा।
एक टुकड़ो मन हतई म मेक्यो।
बाळ की फुई आवते की चाट, जाते की चाह।
एक पतासा का नव सौ टुकड़ा।
एक टुकड़ो मन मुळ्ळा पर मेक्यो।
बाळ की मावसी जाते की चाट आवते की चाट।

– बालक के जन्म के बाद पूजन में रिश्तेदारों को बुलाते हैं और उनसे हँसी–मजाक के लिए महिलाएँ गीत गाती हैं और जिनका नाम गीत में आता

है, उसकी ओर देखकर महिलाएँ हँसती हैं। गीत में कहा गया है कि– एक बतासे के नौ सौ टुकड़े करके एक टुकड़ा चूल्हे के पास रखा। बालक की नानी माँ आते–जाते चाटती हैं। एक टुकड़ा पालने के पास रखा, बालक की दादी माँ झूला देते हुए चाटती हैं। एक टुकड़ा मोरी के पास रखा, बालक की मामी आते–जाते चाटती हैं। एक टुकड़ा मैंने चौक में रखा, बालक की बुआ आते–जाते चाटती हैं। एक टुकड़ा मैंने पनिहारे पर रखा, बालक की मौसी आते–जाते चाटती हैं।

जन्म गीत

हिल मिल पाळनो बंधाड़ो मारा शिवाजी।
आज मारो सोनीड़ा रोवऽ सारी रात।
मामा दाजी की नजर लागी मारा सोनीड़ा,
रोवऽ सारी रात।
हिल मिल पाळनो बंधाड़ो मारा शिवाजी।
आज मारो सोनीड़ा रोवऽ सारी रात।
सगी जिमाय की नजर लागी मारा सोनीड़ा,
रोवऽ सारी रात।
हिल मिल पाळनो बंधाड़ो मारा शिवाजी।
आज मारो सोनीड़ा रोवऽ सारी रात।
मामा की नजर लागी मारा सोनीड़ा,
रोवऽ सारी रात।
हिल मिल पाळनो बंधाड़ो मारा शिवाजी।
आज मारो सोनीड़ा रोवऽ सारी रात।
मामी की नजर लागी मारा सोनीड़ा,
रोवऽ सारी रात।
हिल मिल पाळनो बंधाड़ो मारा शिवाजी।
आज मारो सोनीड़ा रोवऽ सारी रात।
मावसी की नजर लागी मारा सोनीड़ा,

रोवऽ सारी रात।
हिल मिल पाळनो बंधाड़ो मारा शिवाजी।
आज मारो सोनीड़ा रोवऽ सारी रात।
फुई की नजर लागी मारा सोनाड़ा,
रोवऽ सारी रात।
हिल मिल पाळनो बंधाड़ो मारा शिवाजी।
आज मारो सोनीड़ा रोवऽ सारी रात।
काकी की नजर लागी मारा सोनीड़ा,
रोवऽ सारी रात।

– हिल-मिलकर मेरे शिवाजी पालना बधाओ। शायद नाना की नजर मेरे बालक को लगी है, जिसके कारण मेरा बालक पूरी रात रोता है। इसी प्रकार दादा, माँ, मामा, मामी, मौसी, बुआ और काकी की नजर लगने का उल्लेख किया गया है।

जन्म गीत

महादेव बाबो न कोरो कागद दी मोकल्यो,
काइ मान वाळी कतरिक दूर॥
आउँ रे आउँ बाबा, आरती को करूँ रे सेमान॥
आउँ रे आउँ बाबा, नर्‌याल मोलाउँ रे॥
आउँ रे आउँ बाबा, कंकु मोलाउँ रे॥
आउँ रे आउँ बाबा, चोखा मोलाउँ रे॥
आउँ रे आउँ बाबा, अबिर मोलाउँ रे॥
आउँ रे आउँ बाबा, गुलाल मोलाउँ रे॥
आउँ रे आउँ बाबा, चन्दण मोलाउँ रे॥
आउँ रे आउँ बाबा, अगरबत्ती मोलाउँ रे॥
आउँ रे आउँ बाबा, कपूर मोलाउँ रे॥
आउँ रे आउँ बाबा, फूल मोलाउँ रे॥

– बालक जन्म के बाद चार-पाँच वर्ष के बीच महादेवजी की मान देने की प्रथा है। गीत में कहा गया है कि महादेवजी ने कोरा कागज दे भेजा है। मान वाली महिला कितनी दूरी से आ रही है?

उत्तर में कहा गया है कि मैं आ रही हूँ। नारियल, कंकु, चावल, अबीर, गुलाल, चंदन, अगरबत्ती, कपूर और फूल पूजा के लिए खरीद रही हूँ। इस कारण आने में विलम्ब हो रहा है।

महादेवजी की मान देने के लिए पहुँचे और जाजम बिछाकर भगवान शिव के सम्मुख बैठ गई। साथ में सभी सम्बन्धी पुरुष-महिला रहते हैं और पूजन करने वाले पूजन करते हैं और महिलाएँ गीत गाती हैं।

मनौती गीत

जाजम राळी भाई खड़ा रहिया, कुण हेड़ऽ मन की भरात।
पाँची पांडव मऽ रहिया उनका लखपति भाई॥
उऽ हेड़ऽ मन की भरात॥
पगलिया मांडिया बेन खड़ा रहिया, कुण हेड़ेऽ मन की भरात।
पांची पांडव मा रहिया ..... मारा जाया बिराजे॥
उऽ हेड़ऽ मन की भरात॥

– महादेव जी को मान देने पहुँचे, वहाँ बैठने के लिए जाजम बिछाई। सभी लोग जो मानता देने आए हैं उनमें से कौन अपने मन की इच्छा पूरी करेगा यानी कौन पूजा-अर्चना कर महादेवजी को भेंट देगा?

गीत में कहा गया है कि- सभी भाइयों में बालक के काका-बाबा जो आए हैं, वे भेंट करेंगे।

आगे कहा गया है कि- बालक के मामा भेंट देकर अपने मन की इच्छा पूर्ण करेंगे। वैसे जो भी मान में आमंत्रित हैं सभी पूजा-अर्चना भगवान की करते हैं और भेंट देते हैं। बालक को भी यथाशक्ति भेंट देकर प्रसन्नता प्रकट करते हैं।

मनौती गीत

श्री ओंकार जी–

ऊँचो माळो डगमाळ टोंगल्या बूड़न्ती जवार॥
काचा सूत की ऊँकार देव की गोफण बणाई ..... ॥
हरमी–धरमी का होर्‌या–चिरल्या उड़ी जाजो,
ने पापी को खाजो सगळो खेत॥

– ओंकारेश्वरजी का महल ऊँचा है और घुटने डूब जायें, उतनी बड़ी ज्वार है। कच्चे सूत की ओंकारजी की गोफन बनाई। धर्मात्मा लोगों के खेतों के तोते उड़ जाना और पापी का सारा खेत चुग जाना।

सिंगाजी–

ऊँचो माळो डगमाळ, टोंगल्या बूड़न्ती ज्वार॥
काचाओ सूत की मेहताब देव की गोफण बणाई,
राधा राणी होर्‌या टोवण जाई॥
हरम्या–धरम्या का होर्‌या उड़ी जाजो,
ने पापी को खाजो सगळो खेत॥

– सिंगाजी महाराज का महल ऊँचा है। कच्चे सूत की देव की मेहताब तथा गोफण बनाई है। ज्वार घुटनों के ऊपर तक बड़ी है। राधा रानी तोते उड़ाने जाती हैं। धर्मात्मा का खेत छोड़ देना और पापी का खेत चुग लेना।

बजरंग बली–

ऊँचो माळो डगमाळ, टोंगल्या बूड़न्ती ज्वार॥
काचा सूत की बजरंग बली की गोफण,
सावळ राणी होर्‌या टोवण जाई॥
हरमी–धरमी का होर्‌या उड़ी जाजो,
ने पापी को खाजो सगळो खेत॥

– बजरंग बली का महल ऊँचा है और ज्वार घुटने से ऊपर तक की

है। बजरंग बली की गोफण कच्चे सूत की बनाई है। सावल रानी तोते उड़ाने जाती हैं। धरमी के खेत छोड़कर तोतों, पापी का खेत सारा चुग लेना। हनुमानजी की पत्नी सावल रानी को माना है।

भीलट देव–

ऊँचो माळो भीलट देव डगमाळ,
टोंगल्यो बूड़न्ती ज्वार॥
काचा सूत की भीलट देव की गोफण,
मालू राणी होर्‌या टोवण जाई॥
हरमी–धरमी का होर्‌या उड़ी जाजो,
न पापी को खाजो सगळो खेत॥

– भीलट देव का महल ऊँचा है, ज्वार घुटने के ऊपर तक है। काचा सूत की भीलट देव की गोफण बनाई। मालू की रानी तोते उड़ाने जाती हैं। धरमी का खेत छोड़ देना और पापी का पूरा खेत चुग जाना। (भीलट देव की पत्नी मालू रानी माना है।)

भाई–

ऊँचो माळो रे कमल भाई रे,
टोंगल्यो बूड़न्ती ज्वार ॥
काचा रे सूत की कमल भाई की गोफण,
सुशीला होर्‌या टोवण जाई॥
हरमी–धरमी का होर्‌या उड़ी जाजो,
न पापी को खाजो सगळो खेत॥

– गीत गाने वाली ने स्वयं के भाई के नाम से गाया है कि भाई का महल ऊँचा है, ज्वार घुटने के ऊपर है। कच्चे सूत की भाई की गोफन बनाई हुई है। सुशीला भाभी तोते उड़ाने जाती है। धरमी का खेत छोड़कर पापी का सारा खेत चुग लेना।

मान उतारने का गीत

सेली माता ने कोरा कागद देय भेज्या,
कि मानवाला केतरिक दूर।
सेली माता ने कोरा कागद देय भेज्या,
कि मानवाला केतरिक दूर।
आई वा आवाड़ माता आइ रहया,
बोकड़ा की करूं वो सेमान।
सेली माता नी साकड़ी सयरी ते,
डोलता आवे ससवार।
काई वाटे ली वो राजल बेटी अवगढ़ मान,
बेटा सारू ली वो माय अवगढ़ मान।
भूल्या-चुक्या वो माता माफ करजो,
बोकड़ा की छूट्या वो हामु मान।
बोकड़ा वाला रे भाई भारूड़।
इनि वाटे बोकड़ा झुणि लावे।
बोकड़ा नी लोभी मारी सेली माता,
तारा बोकड़ा जासे पयंताल।
सेली माता ने कोरा कागद देय भेज्या,
कि मानवाला केतरिक दूर।

– शीतला माता ने कोरा कागज पहुँचाया है कि मन्नत देने वाले कितनी दूर हैं। आ रहा हूँ अभी, वो माता! आ रहा हूँ। बकरा लाने की तैयारी कर रहा हूँ। शीतला माता का रास्ता सँकरा है इसलिए घोड़े लड़खड़ाते आ रहे हैं। राजल बेटी ऐसी औघड़ मान किसलिए ली? पुत्र प्राप्ति हेतु ली। वो माता! भूल-चूक माफ करना। माता! बकरे की मान ली थी, वह दे दी है। हे भारुड़ भाई बकरे वाले! इस रास्ते बकरे मत लाना। मेरी शीतला माता बकरे की लोभी है। तेरे बकरे पाताल में चले जायेंगे।

मान उतारने का गीत

खोलो-खोलो वो माता खोलो वो किंवाड़।
खोलो-खोलो वो माता खोलो वो किंवाड़।
तारा आँगणें वो माता नर्‌याल वो दुइ चार।
तारा आँगणें वो माता नर्‌याल वो दुइ चार।
खोलो-खोलो वो माता खोलो वो किंवाड़।
खोलो-खोलो वो माता खोलो वो किंवाड़।
तारा आँगणें वो माता बुकड़ा वो दुइ चार।
तारा आँगणें वो माता बुकड़ा वो दुइ चार।
खोलो-खोलो वो माता खोलो वो किंवाड़।

– हे माता! दरवाजा खोलो। हे माता! तेरे आँगन में दो-चार नारियल हैं। हे माता! तेरे आँगन में दो-चार बकरे हैं। माता को भेंट के लिए दो-चार नारियल और दो-चार बकरे लेकर आये हैं।

जलवा पूजन

मुकेश भाई घर कइ हुयो रे, मारा नाना सुरमुलिया॥
पोर्‌यो हयो पोरी हुई, हँव कउँ हीरालाल हुयो॥
अनीता बाई काई वाटे रे, नाना सुरमुलिया॥
लाड़ू वाटे पेड़ा वाटे, हँउ कहुँ पतासा वाट॥
दिनेश व्याई घर कइ हुयो, मारा नाना सुरमुलिया॥
उंदरो हुयो उंदरी हुई, हँउ कहुँ छछूंदरो हुयो॥
मुन्नीव्याण काई वाट, मारा नाना सुरमुलिया॥
धणा वाटे, चणा वाटे, हँउ कहुँ सणबीजा वाट॥

– मुकेश भाई के यहाँ क्या हुआ? मेरे छोटे सुरमुलिया (बच्चे का प्यार का नाम) लड़का हुआ या लड़की हुई, मैं कहती हूँ हीरालाल हुआ। अनीताबाई (मुकेश की बहिन) क्या वितरण कर रही हैं? लड्डू बाँट रही हैं,

पेड़े बाँट रही हैं, मैं कहती हूँ कि बतासे बाँट। दिनेश भाईजी के घर क्या हुआ? चूहा हुआ या चूही हुई, मैं कहूँ छछूंदर हुआ। मुन्नी बाईजी क्या बाँटे? वह चने बाँट रही है, मैं कहती हूँ सन के बीज बाँट। इस प्रकार हँसी-मजाक के लिए यह गीत गाया जाता है।

हवन का गीत

काहाँ से लाउँ राम जी, काहाँ से लाउँ लछमण॥
काहाँ से तो लाउँ हनुमान, लंका को बाण पछो फिर जाय॥
गाड़ी ती लाउँ राम को, गोदी से लाउँ लछमण॥
उड़ी न तो आवे हनुमान, लंका को बाण पछो फिर जाय॥
काहाँ उतारूँ राम, काहाँ उतारूँ लछमण,
काहाँ तो उतारू हनुमान, लंका को बाण पछो फिरि जाय॥
ओटला प उतारूँ राम, न पाळना प उतारूँ लछमण॥
मंदिर म उतारूँ हनुमान, लंका को बाण पछो फिरी जाय॥
काय न्हवाडूं राम काय न्हवाडूं लछमण,
काय ति न्हवाड़ूं हनुमान, लंका को बाण पछो फिरि जाय॥
जळ से न्हवाडूं राम, गंगा जळ से लछमण॥
जमना जळ से न्हवाडूं हनुमान, लंका को बाण पछो फिरि जाय॥
काय पेराउं राम, काय पेराऊं लछमण॥
काय तो पेराउँ हनुमान, लंका को बाण पछो फिरि जाय॥
धोती पेराउँ राम कुरतो पेराउँ लछमण,
लाल लंगोटो पेराऊँ हनुमान, लंका को बाण पछो फिरि जाय॥
काय जिमाडूं राम, काइ जिमाडूं लछमण॥
काय तो जिमाड़ूं हनुमान, लंका को बाण पछो फिरि जाय॥
खीर जिमाडूं राम, पूड़ी जिमाडूं लछमण॥
तेल तो चढ़ाउं रे हनुमान, लंका को बाण पछो फिरि जाय॥
काय कवाए रामजी, काय कवाए लछमण॥
काय तो कवाए हनुमान, लंका को बाण पछो फिरि जाय॥

पती कवाए राम, पुत्र कवाए लछमण॥
खेड़ापति तो कवाए हनुमान, लंका को बाण पछो फिरि जाय॥

– किससे राम को लाऊँ, किससे लक्ष्मणजी को लाऊँ और किस सवारी से हनुमानजी को लाऊँ? श्रीराम को गाड़ी में बिठाकर लाऊँ और लक्ष्मणजी को गोद में उठाकर लाऊँ, हनुमानजी तो उड़कर आयेंगे।

श्रीरामजी, लक्ष्मणजी तथा हनुमानजी को कहाँ उतारूँ? ओटले पर श्रीराम को, पालने पर लक्ष्मणजी को और मन्दिर में हनुमानजी को उतारूँ।

श्रीराम, लक्ष्मणजी तथा हनुमानजी को किससे स्नान करवाऊँ? श्रीराम को जल से, गंगाजल से लक्ष्मणजी को और यमुनाजी के जल से हनुमानजी को स्नान करवाऊँ।

श्रीराम, लक्ष्मणजी तथा हनुमानजी को क्या पहनाऊँ? श्रीरामजी को धोती, लक्ष्मणजी को कुर्ता और हनुमानजी को लाल लंगोटा पहनाऊँ।

श्रीराम, लक्ष्मणजी तथा हनुमानजी को क्या जिमाऊँ? श्रीराम को खीर, श्री लक्ष्मणजी को पूरी जिमाऊँ और हनुमानजी को तेल चढ़ाऊँ।

श्रीराम, लक्ष्मण तथा हनुमानजी क्या कहे जाते हैं? श्रीराम पति, श्रीलक्ष्मणजी पुत्र और हनुमानजी खेड़ापति कहलाते हैं। लंका का बाण वापस फिर जाय।

गणेश वन्दना

परतम सुमरो राम आओ म्हारा गणपति देवता।
परतम सुमरो राम आओ म्हारा गणपति देवता॥
सुपड़ा ढाळा तुम्हारा कान, आओ म्हारा गणपति देवता।
सुपड़ा ढाळा तुम्हारा कान, आओ म्हारा गणपति देवता॥
दिवला ढाळा तुम्हारा डोळा, आओ म्हारा गणपति देवता।
दिवला ढाळा तुम्हारा डोळा, आओ म्हारा गणपति देवता॥

धारण ढाळा तुम्हारा पांय, आओ म्हारा गणपति देवता।
धारण ढाळा तुम्हारा पांय, आओ म्हारा गणपति देवता॥
कंकु चोखा ती तुम्हारी पूजा करां, आओ म्हारा गणपति देवता।
कंकु चोखा ती तुम्हारी पूजा करां, आओ म्हारा गणपति देवता॥

– सर्वप्रथम गणेशजी आपका स्मरण करते हैं, आपके कान सूपड़े के समान, आँखें दीपक के समान और पैर खम्भों के समान हैं। कुंकुम–चावल से आपकी पूजा करें, आप पधारिये।

सावां गीत

आखो उंढालो काइ कर्‌यो रे ढेड्या।
आखो उंढालो काई कर्‌यो रे ढेड्या।
खड़ काट्यो ने पान तुड्या वो जीजी।
खड़ काट्यो ने पान तुड्या वो जीजी।
आखो उंढालो काइ कर्‌यो रे ढेड्या।
आइणिं छिनाले नो डंड भर्‌यो रे ढेड्या।
आइणिं छिनाले नो डंड भर्‌यो रे ढेड्या।
आखो उंढालो काइ कर्‌यो रे ढेड्या।
खड़ काट्यो ने पान तुड्या ने घर छायो रे ढेड्या।

– गर्मी का मौसम निकल गया तुमने सावां लाने में देर क्यों लगाई? जीजी! हमने गर्मी में घास काटा और पत्ते तोड़े। गर्मी में समधन का दंड भरा। घास काटा, पत्ते तोड़े और घर का छप्पर छाया ताकि पानी घर में न गिरे।

सावां एक प्रकार का शगुन है, जिसे लेकर पुरुष ही जाते हैं। गीत वधू पक्ष की महिला गाती हैं। यह गीत गाली गाने का है, जिसे 'निहाली' कहते हैं।

सावां गीत

सांवग्या तारि पावलि तिरी-विरि वाजे।
सांवग्या तारि पावलि तिरी-विरि वाजे।
होठ तारो टुट्लो ने हात तारो ढोटल्यो।
होठ तारो टुट्लो ने हात तारो ढोटल्यो।
मेलों तारा लाकड़ा चालो काहाँ वाले।
मेलों तारा लाकड़ा चालो काहाँ वाले।
डोला तारा फुदला, कान्टा तारा टुट्ला।
डोला तारा फुदला, कान्टा तारा टुट्ला।
साम्हले काहाँ, मेलों तारा लाकड़ा।
चालो काहाँ वाले।
बइल्या तारा दाल खिचड़ि खाय, पावर्‌यो तारो लार घुट्ये।
मेल दउं तारा लाकड़ा, रखड़ो उड़िग्यो।
सांवग्या तारि पावलि तिरी-विरि वाजे।
मेल दउं तारा लाकड़ा, घणीं भुंडि वाजे।

– सावां लेकर आने वालों को सांवग्या कहते हैं। सांवग्या बाँसुरी बजाते हैं।

सावां बधाते समय गीत में कहा गया है कि तुम्हारी बाँसुरी अच्छी नहीं बज रही है। तेरा होंठ टूटा हुआ और हाथ भी टूटा है, जिसके कारण बाँसुरी की धुन कहाँ जा रही है ? तेरी आँखें फूटी हुई हैं, कान टूटे हुए हैं, तू सुनता किधर है। तेरे बैल, दाल और खिचड़ी खा रहे हैं। गाड़ीवान लार घुटक रहा है। अन्त में कहा गया है कि बाँसुरी बहुत खराब बज रही है।

सावां भरने के दिन दोनों पक्ष के लोग विवाह की तिथि निश्चित कर लेते हैं। चन्द्रमा और तारों को देखकर मुहूर्त्त स्वयं निकाल लेते हैं। निश्चित तिथि को लड़के-लड़की को बाने बिठाते हैं।

सावां गीत

ऊँचो मां भाले रे ढेड्या सरग मारी भाणिंगलो!
नेचो मां भाले रे ढेड्या धरती मारी भाणिंगलो!
खाटले मां बसेरे ढेड्या खाटली मारी भाणिंगलो!
उटले मां बसेरे ढेड्या उटलो मारो भाणिंगलो!

– सावां लाने वालों को बधाकर (स्वागत कर) घर में ले जाते हैं फिर औरतें गीत गाती हैं। सावां लाने वालों को कहती हैं कि तुम ऊपर आसमान की ओर मत देखो- सरग (आसमान) हमारा भानजा लगता है। धरती, खटिया और चबूतरे पर मत बैठो, ये भानेज-भानजी लगते हैं।

सावां गीत

सब याही आया वोते एक याही नी आया!
लाव कटोरी काटो नाक, लाव विचारा नो ढाकूं नाक!
डांडे-डांडे उतरवो बाई छछूंदरी,
काल-गान चोटी कातरवो बाई छछूंदरी!!

– सावां लाने वालों के लिए गीत में कहा गया है कि- सभी समधी भाई हैं, कटोरी लाओ! इनकी नाक काटूँ और कटी हुई नाक ढाँक दूँ। छछूंदर से कहती है कि- तू छत की लकड़ियों के सहारे नीचे उतर। सावां लाने वालों में से किसी की चोटी कतर डाल।

सावां गीत

तारो माटी रामस्यो धवल्या-धुरी मंगाया।
खांड्या-मेंड्या क्यों लाया रे।
बइल्या छोड़-बइल्या छोड़ ढेड्या।
तारो माटी रामस्यो चाउल-चोखा मंगाया।
टेमरा क्यों लायो रे ढेड्या।

तारो माटी रामस्यो सकर मंगाड़ी,
गूले क्यों लायो रे ढेड्या।
तारो माटी रामस्यो घींवे मंगाइयो।
तेले क्यों लायो रे ढेड्या।

– सावां लाने वाले से स्त्रियाँ कहती हैं– रामसिंह ने अच्छे सफेद और सुन्दर बैल जोतकर लाने को कहा था। तुम सींग टूटे, सींग मुड़े बैल क्यों लाये हो ? इन बैलों को छोड़ दो।

रामसिंह ने चावल बुलाये थे, तुम टेमरू ले आये। शक्कर बुलाई थी, तुम गुड़ ले आये। घी मँगवाया था, तुम तेल क्यों ले आये ? इस तरह विभिन्न भोज्य सामाग्रियों के लिए कहा जाता है।

निहाली गीत

गड़ो–गड़ो आइग्या, भाया ना साला हिजड़ा ने गधड़ा॥
लदो–लदो बस्या, भाया ना साला हिजड़ा ने गधड़ा॥
टेघड़ा ने टेघड़ा भाले, भाया ना साला हिजड़ा ने गधड़ा॥
माकड़्या ने माकड़्या भाले, भाया ना साला हिजड़ा ने गधड़ा॥

– वधू के घर महिलाएँ यह हास्य गीत गाती हैं–

एकदम आ गये भाई के साले हिजड़े और गधे। आकर खटिया पर लद गये भाई के साले हिजड़े और गधे। कुत्तों के समान देख रहे हैं, बन्दर के समान देख रहे हैं।

निहाली गीत

काचा रे सूते ने, जाले विणाउं रे ढेड्या।
नाइं रे विणे ने, लाते जमाउं रे ढेड्या।
ऊंडा रे तलाव मा, माछलि पकड़ाऊं रे ढेड्या।
नाइं रे पकड़े ते, लाते जमाउं रे ढेड्या।

– तुमसे कच्चे सूत की जाल बनवाऊँ, नहीं बुने तो लात जमा दूँगी। गहरे तालाब में तुमसे मछली पकड़वाऊँ, नहीं पकड़ पाये तो लात जमा दूँगी।

निमन्त्रण

एक नेवतो देजो गुणेसा घेर।
एक नेवतो देजो गुणेसा घेर।
एक नेवतो देजो सबेरा धड़।
महादेव बाबो आवसे।
एक नेवतो देजो सबेरा धड़।
ते उकार देजो आवसे।
एक नेवतो देजो सबेरा धड़।
ते गंगा ने गवरां आवसे।
एक नेवतो देजो सबेरा धड़।
ते लालबाई–फुलबाई आवसे।
एक नेवतो देजो सबेरा धड़।
ते चाँद–सूरज आवसे।

– एक निमंत्रण गणेशजी के घर देना। एक निमंत्रण महादेवीजी को, एक निमंत्रण ओंकारदेव को और एक निमंत्रण गंगा–गौरा को देना। एक निमंत्रण लालबाई–फूलबाई को और एक निमंत्रण चाँद–सूरज को देना, वे सभी अवश्य ही आएँगे।

निमन्त्रण गीत

आखो हरियालो डुंगर, काली कुयल बुले बेनी।
आवसे तारा भाइन जुड़ि, सरम्यो कागद भेजो वो।
आखो हरियाली डुंगर, काली कुयल बुले बेनी।
आवसे तारि भोजाइ निजुड़ि, सरम्यो कागद भेजो बेनी।
आवसे तारा बणवि निजुड़ि, सरम्यो कागद भेजो बेनी।

आवसे तारा फुवा निजुड़ि, सरम्यो कागद भेजो बेनी।
आवसे तारी फुइन् जुड़ि, सरम्यो कागद भेजो बेनी।
आखो हरियाली डुंगर, कालि कुयल बुले बेनी।

– पूरा जंगल हरा हो गया है उसमें काली कोयल बोल रही है। बनी तेरे भाई की जोड़ी आएगी पत्रिका भेजो। तेरी भौजाई की जोड़ी आएगी पत्रिका भेजो। तेरे बहनोई की जोड़ी आएगी पत्रिका भेजो। तेरे फूफा की जोड़ी आएगी पत्रिका भेजो। तेरी बुआ की जोड़ी आएगी पत्रिका भेजो।

हल्दी गीत

मालवे ती हलदुलि मांगाई, पूड़ी बांधी।
मालवे ती हलदुलि मांगाई, पूड़ी बांधी।
मालवे ती हलदुलि मांगाई, घट्ये पिसाई।
मालवे ती हलदुलि मांगाई, वाटक्ये घुलाई।

– मालवे से पूड़ी बाँधकर हल्दी बुलाई पूड़ी बाँधकर। मालवे से हल्दी बुलवाकर घट्टी में पीसी। मालवे से हल्दी बुलवाकर कटोरी में घोली।

हल्दी गीत

कुणे कह्यो ने गुदड़ूये बठी वो बेनी।
कुणे कह्यो ने गुदड़ूये बठी वो बेनी।
बावो कह्यो ने गुदड़ूये बठी वो बेनी।
माय कह्यो ने गुदड़ूये बठी वो बेनी।
भाइ कह्यो ने गुदड़ूये बठी वो बेनी।
भोजाइ कह्यो ने गुदड़ूये बठी वो बेनी।

– बाने बिठाते समय एक गुदड़ी (गादी) बिछाते हैं, उस पर दूल्हा–दुल्हन को बिठाते हैं।

दुल्हन से पूछती हैं कि तुमसे किसने कहा और जो तू गादी पर बैठ

गई? उत्तर में गाते हैं कि पिता ने कहा और गादी पर बैठी। माँ ने कहा, भाई ने कहा और भौजाई ने कहा, तब गादी पर बैठी।

हल्दी गीत

बेनी तारो पीठी रोलो, कुण चोलसे?
बेनी तारो पीठी रोलो, कुण चोलसे?
बेनी तारो पीठी रोलो, तारि भोजाइ चोलसे।
बेनी तारो पीठी रोलो, तारि बहणिस चोलसे।
बेनी तारो पीठी रोलो, तारि फुई चोलसे।

– बनी तुझे हल्दी कौन लगायेगा? हे बनी! तुम्हारी भौजाई, बहन और बुआ तुम्हें हल्दी लगाएँगी।

मेहंदी गीत

खेड़ि–खेड़ि काइ रेते कर्‌या।
खेड़ी–खेड़ी काइ रेते कर्‌या।
जड़ि गुयो मेहंदी नो बीज।
हात रंग्या पाय रंग्या।
जड़ि गुयो मेहंदी नो बीज।
रंग चुवे।

– हे बनी! जमीन में हल चलाकर, मेहंदी का बीज ढूँढ़ा। बीज बोया, तब जाकर मेहंदी का पौधा तैयार हुआ। वही मेहंदी हमने तेरे हाथ–पैर में लगा दी है। देखो! मेहंदी का रंग कैसे खिल रहा है?

चवरी गीत

चवरि काटणे जाइ रह्या, रावताला ना का जवांयला।
काटि लाया रावताला ना का जवांयला।
चवरि गाड़े रावताला ना का जवांयला।
रावताला ना की कुवासणि चवरि वधावे वो।

रावताला ना की कुवासणि चवरि वधावे वो।
रावताला ना की कुवासणि चवरि सुति देवो।
रावताला ना की कुवासणि, वेंडा ढुलि देवो।

– रावतला (गोत्र विशेष) के जवाँई चवरी के लिये लकड़ियाँ काटने जा रहे हैं। रावतला के जवाँई चवरी काटकर ले आए। रावतला के जवाँई चवरी गाड़ रहे हैं। रावतला की कुँवारी लड़कियाँ चवरी बधा रही हैं। रावतला की कुँवारी लड़कियाँ कच्चा सूत चवरी में बाँध रही हैं।

रावतला की कुँवारी लड़कियों से कहते हैं कि– कुएँ से कलश भरकर पवित्र जल लाए हैं उसे दूल्हे के सिर पर उडेल दें।

चवरी गीत

वधू पक्ष– *सोनानि पालकि मा बठि वो मारी बेनी।*
सोनानी पालकी वासे।
कुकड़ डालगा मा बठोरे, डाहेला लाड़ा,
कुकड़ डालगो कटके।

वर पक्ष– *सोनानि पालकि मा बठो रे बेना,*
सोनानी पालकी वासे।
कुकड़ डालगा मा बठि रे, डाहेली लाड़ी,
कुकड़ डालगो कटके।

– चवरी में दूल्हा–दुल्हन बैठे हैं, दोनों पक्ष की महिलाएँ गीत गाती हैं। वधू पक्ष की महिलाएँ कहती हैं– दुल्हन सोने की पालकी में बैठी है, सोने की पालकी खुशबू दे रही है। बूढ़ा दूल्हा मुर्गे–मुर्गी के डाले (पिंजरा) में बैठा है, पिंजरा कटकटा रहा है। वर पक्ष की ओर से कहा गया है– दूल्हा सोने की पालकी में बैठा है, पालकी खुशबू दे रही है, बूढ़ी दुल्हन मुर्गे–मुर्गी के डाले में बैठी है और डालगा (पिंजरा) कटकटा रहा है।

विवाह गीत

भोलो ईश्वर अकनो कुवारो।
भोली गवरां नी मांगणी करे।
भोलो ईश्वर बाने बठो।
भोली गवरां बाने बठी।
सीदा वादा करें।
भोला ईश्वर नी बरात चाली।
भोली गवरां ना फेरा लाग्या।
बरात पछि घेर आवी।
लाव वो रांड मारा जूटा देख दे।
सातला नो ईसो कर्‌यो गवरां।
पागड़ी नो ईसोवो ईश्वर ना माथा हेट।
चाल ने घरी उतरी न पड़ी वो भूंड ना भंवरे।
भंवरा मा गइ वा वासिंग ना बायणें।
आवा वा बयण, आव वा बयण।
असो काइ बोले तू मोटा ना मोटा।
खादो ने पीछे व रात काटी।
नाथ ने मुरखा मारा मुंहडे।
रास ने धरी वो गवरा आई।
निंदरान् उड्या वो भोला ईश्वर ना।
काइ वो रांड काहाँ गयली।
रोला ना भर्‌या डील गंधये।
नंदे उँघलने मि गयली।
नव महना ना दाहड़ा गिणे गवरां।
महना गिणें वो भोली गवरां।
पूरा हया वो नव महना।
पेट मा हुल्क्यो वो गवरो गणेस।

सुयण लावे वो भोलो ईश्वर।
गवरो गणेस पेट मा हुलके।
हात मेल्यों वो सदा सुयण।
खलाके लेता जाइ पड्यो गणेस।
नालों कांटे सदा वा सुयण।
नाहवा ने धोवा करे सुयण दायण।
झोली ने पलाणं वा गवरां घाले।
पणीला भरे वा भोली गवरां।
देखजी रे ईश्वर इना बाला के।
मीं ते जाऊं रे पाणीला भरने।
ईश्वर ऊठ्यो ऊँचो माथो करिन्।
नव धार्‌यो खांडो वो हेड्यो ईश्वर।
गणेस नो माथो वो काट्यो ईश्वर।
फगाट देधो वो दरियाव माहीं।
गवरां न रोवे वो माथु ठोके।
बालवा नो माथो काहा वो काट्यो।
मारो ते मुंड्को काटी नारवनो।
छाती न माथो ठोके भोली गवरां।
तारा वा बालवा के करूं सरजीवण।
तूते झुणी रड़े वा गवरां।
ईश्वर धरी ने चाल धरी, हातिड़ा ना बन मा।
नवसौ हातिड़ा घेर्‌या ईश्वर, लायो रे दरियाव पर।
हातिड़ा ने चूसी रे दरियाव चूसी भसम उडाड़यो।
कछ ने मछ फफड़ी रह्या, गणेस नो माथो हेरे ईश्वर।
मछ ने कछ ना पेटे चीरे, मछ ने कछ बोलि पड़्या।
हामरा पेट ते मा चिरे ईश्वर मा चीरे भोला ईश्वर।
माथा काजे तु हामु खाइन् घेरी नाख्यो।

कछ ने मछ बोलि रह्या।
हातिड़ा नो माथो वारूस रहसे।
ईश्वर लेधो रे नव धार्‌यो खांडो।
हातिड़ा नो माथो काटी नाख्यो।
माथो हाकल्यो भोलो ईश्वर।
माथोली न चाल देधो घेर।
गवरा गणेस नो जोड़्यो माथो।
गजरा गणेस काजे कर्‌यो सरजीवण।
मंगाला माथा नो बण्यो रे गणेस रे।
वाटका डोलानो रे बण्यों रे गणेस रे।
कुसलाज दाँत नो रे, कुटकाज होट नो रे बण्यो रे गणेस।
तारा मुंहड़े रे भरी रे सूंड रे।
सूंड ने मुंडे खाय रे गणेस।
चवड़ी छाती नो रे बण्यो रे गणेस रे।
पराल्या सातला नो रे, बण्यो रे गणेस रे।
थामलाज् पल्या नो रे, बण्यो रे गणेस रे।
छाबड़्याज् पाय नो रे बण्यो रे गणेस रे।
उठता ने बसता रे नाव तारो रे सार से रे।

– भोले स्वभाव के शंकर भगवान अखण्ड कुँवारे हैं। भोली गौरी से मंगनी करते हैं। भोले शंकर वाने बैठे। भोली गौरी वाने बैठी। अनाज, दाल आदि तैयार कर रहे हैं। भोले भगवान की बारात चली। भोली गौरी से फेरे हुए (भाँवर पड़े)। बारात वापस घर आई। शंकरजी ने गौरा से कहा– मेरी जटा में जुएँ देख दे। गौरी ने महादेवजी का सिर अपनी जंघा पर रखा। गौरी ने महादेवजी को निद्रामग्न देखा तो अपनी जांघ हटाकर पगड़ी का तकिया लगा दिया। गौरी चल पड़ीं और पाताल लोक में पहुँचीं। पाताल में शेषनाग के दरवाजे पर गईं। शेषनाग ने कहा– बहन आ। ऐसा क्या बोल रहा है? तू बड़े लोगों में सबसे बड़ा है। शंकरजी की निद्रा टूटी तो कहने लगे तू कहाँ गई

थी ? तेरी देह से रोले की खुशबू आ रही है। गौरी बोली- मैं नदी पर स्नान करने गई थी। नौ महीने के दिन गौरी गिन रही हैं। नौ महीने पूरे हुए। पेट में गणेशजी दु:ख रहे हैं (प्रसव पीड़ा होने लगी)। भोले भगवान दाई को लाते हैं। गणेशजी पेट में दु:ख रहे हैं। दायण ने प्रसव हेतु हाथ रखा। गणेशजी पेट से एकदम निकले। दायण ने नाला काटा। दायण स्नान कराकर कपड़े धोती है। गौरी गणेशजी को पालने में झुलाती हैं। गौरी पानी भरने जाती हैं। भगवान! इस बालक को देखना, मैं पानी लेने को जाती हूँ।

(शंकरजी को शंका हो गई थी कि प्रथम रात्रि में मैं निद्रामग्न था और गौरी मुझे छोड़कर पगड़ी का तकिया सिर के नीचे लगाकर कहाँ चली गयी थी ?)

शंकरजी ऊँचा सिर करके उठे। नौ धार का खांडा शंकरजी ने निकाला। शंकरजी ने गणेशजी का सिर काट लिया। सिर समुद्र में फेंक दिया। गौरी रोती हैं और सिर पीट रही हैं। बालक का सिर क्यों काट दिया ? मेरा सिर काट देते। गौरी सिर और छाती पीट रही हैं। तेरे बालक को मैं पुन: जीवित कर दूँगा, गौरी तू मत रो! भगवान हाथियों के जंगल में चल पड़े। नौ सौ हाथियों को हाँककर समुद्र पर लाये। हाथियों ने समुद्र को चूस-चूसकर सुखा दिया। कछुए और मछलियाँ फड़फड़ाने लगे। भगवान गणेश का सिर खोज रहे हैं। मछलियों और कछुओं के पेट चीर रहे हैं। मछलियाँ और कछुए बोल उठे, हमारे पेट मत चीरो भगवान, मत चीरो भोले भगवान! सिर को तो हमने खाकर हजम कर मल द्वार से निकाल दिया। कछ-मछ बोल रहे हैं। हाथी का सिर अच्छा रहेगा। शंकरजी ने नौ धारवाला खाँडा उठाया। हाथी का सिर काट लिया। भोले भगवान ने हाथी का सिर उठाया। सिर लेकर घर चल पड़े। गौरी ने गणेश का सिर जोड़ दिया। गणेशजी को पुनर्जीवित किया। चूल्हे के ठीयों के समान सिरवाले गणेशजी बने। कटोरी के समान आँखों वाले गणेशजी बने। कुसले के समान दाँत वाले, कटे हुए ओंठ के गणेशजी बने। मुँह पर सूँड लगा दी है। सूँड के द्वारा गणेशजी खा रहे हैं। गणेशजी का सीना चौड़ा बना है। लम्बी-मोटी जंघा वाले गणेशजी बने। खम्भे के समान पिंडलीवाले

गणेशजी बने। चौड़े पंजों वाले गणेशजी बने। दुनिया उठते-बैठते आपका नाम स्मरण करेगी।

विवाह गीत

काली चिड़ि वो देव चिड़ि, रात मा बुले।
काली चिड़ि वो देव चिड़ि, रात मा बुले॥
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, फुइ करतेक आवे।
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, फुइ करतेक आवे।
काली वो देव चिड़ि, रावला मा बुले॥
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, फुवो करतेक आवे।
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, फुवो करतेक आवे।
काली चिड़ि वो देव चिड़ि, रावला मा बुले॥
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, मामा करतेक आवे।
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, मामा करतेक आवे।
काली चिड़ि वो देव चिड़ि, रावला मा बुले॥
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, मामी करतेक आवे।
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, मामी करतेक आवे।
काली चिड़ि वो देव चिड़ि, रावला मा बुले॥
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, बईं करतेक आवे।
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, बईं करतेक आवे।
काली चिड़ि वो देव चिड़ि, रावला मा बुले॥
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, बणवि करतेक आवे।
महेल चढ़ि वो बेनु वाटे जोवेरे, बणवि करतेक आवे।
काली चिड़ि वो देव चिड़ि, रावला मा बुले॥

- लड़की के ब्याह में महिलाएँ काली चिड़िया को सम्बोधित करते हुए गीत में कह रही हैं कि- हे काली चिड़िया! तू देव चिड़िया है और रावले में बोल रही है। महल पर चढ़कर बनी रास्ता देख रही है और चिड़िया से

पूछती है कि मेरी बुआ कितनी दूरी पर आ रही है। इसी प्रकार आगे फूफा, बहन-बहनोई, मामा-मामी का नाम लेकर गीत को गाया जाता है। मेहमानों के आने की प्रतीक्षा बनी कर रही है।

विवाह गीत

मारे अंगठे विछु झूल्यो राज, आज की चालण छूड़ दे।
मारे अंगठे विछु झूल्यो राज, आज की चालण छूड़दे।
नानड़ियो विछु झूल्यो राज, आज की चालण छूड़दे।
नानड़ियो विछु झूल्यो राज, आज की चालण छूड़दे।
मारा पील्ये विछु चढ़ियो राज, आज की चालण छूड़दे।
मारा पील्ये विछु चढ़ियो राज, आज की चालण छूड़दे।
मारी सातल्ए विछु चढ़ियो राज, आज की चालण छूड़दे।
मारी कमर विछु चढ़ियो राज, आज की चालण छूड़दे।
मारी कमर विछु चढ़ियो राज, आज की चालण छूड़दे।
मारी छाल्ए विछु चढ़ियो राज, आज की चालण छूड़दे।
नानड़ियो विछु झूल्यो राज, आज की चालण छूड़ दे।
मारो जेठ उतारे मारी जेठाणी कुरकाए राज, आज की चालण छूड़दे।
मारो जेठ उतारे मारी जेठाणी कुरकाए राज, आज की चालण छूड़दे।
मारो देवर उतारे मारी देवराणी कुरकाए राज, आज की चालण छूड़दे।
मारो देवर उतारे मारी देवराणी कुरकाए राज, आज की चालण छूड़दे।
मारो सेसरो उतारे मारी सासु कुरकाए राज, आज की चालण छूड़दे।
मारो सेसरो उतारे मारी सासु कुरकाए राज, आज की चालण छूड़दे।
मारे अंगठे विछु झूल्यो राज, आज की चालण छूड़ दे।

– महिला अपने पति से कहती है कि मेरे अँगूठे में बिच्छू ने काटा है। आज का चलना छोड़ दो। मेरी पिंडली तक बिच्छू चढ़ गया है, आज का चलना छोड़ दो। मेरी जंघा तक बिच्छू चढ़ गया है, आज का चलना छोड़ दो। मेरी कमर तक बिच्छू चढ़ गया है, आज का चलना छोड़ दो। मेरी छाती तक

बिच्छू चढ़ गया है, आज का चलना छोड़ दो। मेरे जेठ उतारें तो जेठानी नाराज होती हैं, आज का चलना छोड़ दो। मेरा देवर उतारें तो देवरानी नाराज होती है, आज का चलना छोड़ दो। मेरे ससुर उतारते हैं तो सासू नाराज होती हैं, आज का चलना छोड़ दो।

विवाह गीत

हांव ते काठी विछण गयली व झारी वणझारी।
हांव ते काठी विछण गयली व झारी वणझारी।
काला विछु ने चढकायो व झारी वणझारी।
काला विछु ने पटकायो व झारी वणझारी।
मिं ते काठी विछण गयली व कालो विछु ने चटकायो।
मारो जेठ उतारे मारी जेठाणी कुरकाय व झारी वणझारी।
मारो जेठ उतारे मारी जेठाणी कुरकाय व झारी वणझारी।
मारो देवर उतारे मारी देवराणी कुरकाय व झारी वणझारी।
मारो देवर उतारे मारी देवराणी कुरकाय व झारी वणझारी।
मारो सेसरो उतारे मारी सासूजी कुरकाय व झारी वणझारी।
मारो सेसरो उतारे मारी सासूजी कुरकाय व झारी वणझारी।
मायो सायबो उतारे विछु सेड़ो सेड़ो उतरे व झारी वणझारी।
मारो सायबो उतारे विछु सेड़ो सेड़ो उतरे व झारी वणझारी।
मिं ते काठी विछण गयली, काला विछु ने चटकायो व झारी वणझारी॥

– मैं तो काठी चुनने को गई थी। काले बिच्छू ने काटा। मेरा जेठ उतारे, मेरी जेठानी नाराज होती है। मेरा देवर उतारे, मेरी देवरानी नाराज होती है। मेरे ससुर उतारे, मेरी सास नाराज होती है। मेरे स्वामी उतारते हैं, तो बिच्छू सर-सर उतरता है।

बाना गीत

बाना तने हाताना भोरी लाँ दलड़ा लाग्या रेऽऽऽ
हजारी बालक बनेड़ा बाना तने बानो कुकके वालो।

काई वतणवारे हजारी बालक बनेड़ा
बाना तने बानो कुकके वाले।
हाथाना भोरी लाद लड़े लाग्यानो रे
हजारी बालक बनेड़ो।
बानाजी तमने केड़ा ना कन्दौरा दले लाग्या रेऽऽऽ
हजारी बालक बनेड़ा ..... ।

(स्रोत व्यक्ति-मांगीलाल सोलंकी)

- दूल्हे! तेरे हाथ में मेरी भँवरी (दुल्हन) है। उससे तेरा मन मिल गया है। तू तो हजारों में एक है। तुझे अब हम क्या बतलायें? तेरे से मेरी दुल्हन का दिल लग गया है। तेरे कमर का कन्दौरा भी उसे पसन्द आ गया है। उस पर भी उसका दिल आ गया है।

विवाह गीत

सोनार्‌यो कांटो मारा नाक मा रे।
चूड़िलो चमके मारा हात मा रे।
चांदी ना झेला मारा मुंड मा रे।
चूड़िलो चमके मारा हात मा रे।
चांदी नो हार मारा गला मा रे।
चूड़िलो चमके मारा हात मा रे।
चांदी ना विछा मारा पाय मा रे।
चूड़िलो चमके मारा हात मा रे।
चांदी ना हाटका मारा हात मा रे।
चूड़िलो चमके मारा हात मा रे।

- हे सखी! मेरी नाक में सोने का काँटा, हाथ में चूड़ा चमक रहा है। मेरे सिर पर चाँदी का झेला, गले में हार, पाँव में बिछिया और हाथ में हटका सुशोभित है। इन सभी में हाथ का चूड़ा खूब चमक रहा है।

विवाह गीत

मांदल्या मांदलि वजाड़ रे, घड़िक नाचि भालां रे।
तारा हात मा चालो रे, मारा पाय मा चालो रे।
मांदल्या मांदलि वजाड़ रे, घड़िक नाचि भालां रे।
तल्या तलि रे वजाड़ रे, घड़िक नाचि भालां रे।
तारा हात मा चालो रे, मारा पाय मा चालो रे।
दुल्ग्या ढुलगि वजाड़ रे, घड़िक नाचि भालां रे।
तारा हात मा चालो रे, मारा पाय मा चालो रे।
कुंड्या कूंडि रे वजाड़ रे, घड़िक नाचि भालां रे।
तारा हात मा चालो रे, मारा पाय मा चालो रे।
फेफर्‌या फफर्‌यो वजाड़ रे, घड़िक नाचि भालां रे।
तारा मुहंडे चालो रे, मारा पाय मा चालो रे।

- विवाह के अवसर पर स्त्रियाँ नृत्य करती हुई गीत गाती हैं-

हे मांदल वादक! हे थाली वादक! हे ढोलक वाले! नगड़िया वाले, शहनाई वाले भाई! तुम सुर-ताल में बजाओ, हम थोड़ी देर नाच लें। तुम्हारे वाद्यों में सुर-ताल है और हमारे पाँव भी नृत्य करने के लिए थिरक रहे हैं।

विवाह गीत

झेला मोलवो वो बेनी, झेला पेहरो।
झेला पर सुब रंग्यो फुलवो मारि नानि बेनी।
दुनिया देखे।
हार मालवो वो बेनी, हार पेहरो।
हार पर सुब रंग्यो छिब्रो मारि नानि बेनी।
दुनिया देखे।
बाष्ट्या मोलवो वो बेनी, बाष्ट्या पेहरो।
बाष्ट्या पर बुब रंगि भात वो मारि नानि बेनी।
दुनिया देखे।

करूंदी मोलवो वो बेनी, करूंदी पेहरो।
करूंदि पर सुब रंग्यो फुलवो मारि नानि बेनी।
दुनिया देखे।

– महिलाएँ गीत में दुल्हन से कहती हैं कि– झेला खरीदो और पहनो। झेला में सभी रंग के फूल हैं, तुम्हें झेला पहने हुए सभी लोग देखेंगे। हार में सभी रंग के फूलों वाले छल्ले लगे हैं, पहनोगी तो दुनिया देखेगी। बाष्ट्या पर सभी रंग की डिजाइन बनी हुई हैं, पहनोगी तो दुनिया देखेगी। अन्त में करूँदी खरीदकर पहनने को कहती हैं। करूँदी पर सभी रंग के फूल बने हुए हैं, पहनो। दुनिया देखेगी कि दुल्हन ने कितने अच्छे गहने पहन रखे हैं।

विवाह गीत

बेनो कुड़छी पर बठो कड़ा मांगे।
बेनो कुड़छी पर बठो तागल्या मांगे।
बेनो कुड़छी पर बठो हार मांगे।
बेनो कुड़छी पर बठो मूंद्या मांगे।
बेनो कुड़छी पर बठो हाटका मांगे।
बेनो कुड़छी पर बठो बेड़ि मांगे।

– दुल्हन के समान दूल्हा भी गहने पहनता है, उनका वर्णन गीत में किया गया है–

बना कुर्सी पर बैठा हुआ कड़े माँग रहा है। तागली, हार, बीटियाँ, हाटका, बेड़ी माँग रहा है। कड़े हाथ में पहनने का, तागली गले में पहनने का, हार गले में पहनने की, बीटी अँगुली में पहनने का, हाटका बाँह पर पहनने का और बेड़ी पैर में पहनने का आभूषण है।

वर शृँगार गीत

यो तो वाड़ि मा कहेलो नवेलो बेनो।
तूखे कुण ते सिंगारे, तुखे कुण ते सिंगारे।

मिसे काको ते सिंगारे, मिसे काको ते सिंगारे।
यो तो वाड़ी मा कहेलो, नवेलो बेना।
तुखे कुण ने सिंगार्या, नवेला बेना।
मेखे भाई ने सिंगार्या, भाई ने सिंगार्या।
पाटी से सिणगारो वो, पुनि बहणी।
बेना भाइ ना सासरिये, रमि आवजे।

– हे दूल्हे! तुम्हारे काका, तुम्हारे भाई तुम्हारा शृँगार कर रहे हैं। हे पुनी बहिन! पाटी (ओड़ई) का शृँगार कर दुल्हिन के कपड़े रखो।

वर शृँगार गीत

पागा बांधो रे बेना, पाघा बांधो।
तिलो कुण सवारेगा, तिलो कुण सवारेगा।
धुति पेहरो रे बेना, धुति पेहरो।
धुति कुण सवारेगा, धुति कुण सवारेगा।
धुति भाइ सवारेगा, धुति भाइ सवारेगा।
झूल पेहरो रे बेना, झूल पेहरो।
झूल कुण सवारेगा, झूल कुण सवारेगा।
मुजा पेहरो रे बेना, मुजा पेहरो।
मुजा कुण सवारेगा, मुजा कुण सवारेगा।
मुजा भाइ सवारेगा, मुजा भाइ सवारेगा।
मुजड़ि पेहरो रे बेना, मुजड़ि पेहरो।
मुजड़ि कुण सवारेगा, मुजड़ि कुण सवारेगा।
मुजड़ि बणवि सवारेगा, मुजड़ि बणवि सवारेगा।
तरवार धरो रे बेना, तरवार धरो।
तरवार कुण सवारेगा, तरवार कुण सवारेगा।
तरवार बणवि सवारेगा, तरवार बणवि सवारेगा।
मोड़ बांधो रे बेना, मोड़ बांधो।

मोड़ कुण सवारेगा, मोड़ कुण सवारेगा।
मोड़ बइं सवारेगी, मोड़ बइं सवारेगी।

– दूल्हे से कहा गया कि– पगड़ी बाँधो, पगड़ी का तिल्ला कौन व्यवस्थित करेगा? उत्तर में गाया जाता है कि तिल्ला भाई व्यवस्थित करेगा। इसी प्रकार सभी शृँगार का वर्णन करते हुए शृँगार को व्यवस्थित करने वालों के नाम लेते हैं। मौर को बहिन बाँधती है।

वर शृँगार

मोड़ मोल्विन् वेघा आवो हुस्यार बेना।
पागा मोल्विन् वेघा आवो हुस्यार बेना।
झूल मोल्विन् वेघा आवो हुस्यार बेना।
धोती मोल्विन् वेघा आवो हुस्यार बेना।
मुजा मोल्विन् वेघा आवो हुस्यार बेना।
तरवार मोल्विन् वेघा आवो हुस्यार बेना।
मुजड़ि मोल्विन् वेघा आवो हुस्यार बेना।

– वर शृँगार सामग्री बाजार से क्रय कर लाने के लिये दूल्हे को कहा गया है– हे चतुर बना! मौर क्रय कर जल्दी आओ। इसी प्रकार सभी वस्तुओं को क्रय करने के बारे में कहा गया है।

वर निकासी

धीरा मा धीरो चाले मारा राजबना।
बइंने पछल रहिग्यो मारा राजबना।
धीरा मा धीरो चाले मारा राजबना।
बणवि ना पछल रहिग्यो मारा राजबना।
धीरा मा धीरो चाले मारा राजबना।
भाइ ना पछल रहिग्यो मारा राजबना।

धीरा मा धीरो चाले मारा राजबना।
भोजाइ ना पछल रहिग्यो मारा राजबना।

– मेरा राजा बना धीरे चलने वालों से भी धीरे चल रहा है। बहन से पीछे रह गया, बहनोई से, भाई से और भौजाई से पीछे रह गया।

बारात के रास्ते का गीत

आंबा नी नांबी डाले, डाले झोला खाय।
भाइ नी नांबी जोड़ी, जोड़ी झोला खाय।
भोजाइ नी नांबी जोड़ी, जोड़ी झोला खाय।
बहिण नी नांबी जोड़ी, जोड़ी झोला खाय।
बणवि नी नांबी जोड़ी, जोड़ी झोला खाय।
काका नी नांबी जोड़ी, जोड़ी झोला खाय।
काकी नी नांबी जोड़ी, जोड़ी झोला खाय।
फुवा नी नांबी जोड़ी, जोड़ी झोला खाय।
फुइ नी नांबी जोड़ी, जोड़ी झोला खाय।

– आम की लम्बी टहनी हैं, टहनी झोले खा रही हैं। भाइयों की लम्बी जोड़ी हैं अर्थात् बहुत भाई हैं, भाइयों की जोड़ी झोले खा रही हैं। इसी प्रकार भौजाई, बहन–बहनोई, काका–काकी, फूफा–बुआ का नाम लेते हुए गीत चलता है।

बारात के रास्ते का गीत

उभो रे मयदान मा, उभो रहयो रे बेना।
बइं ना वाटे, उभो रहयो रे बेना।
बणवि ना वाटे, उभो रहयो रे बेना।
भाइ ना वाटे, उभो रहयो रे बेना।
भोजाइ ना वाटे, उभो रहयो रे बेना।

फुवा वाटे, उभो रहयो रे बेना।
फुइ ना वाटे, उभो रहयो रे बेना।
गांवल्या वाटे, उभो रहयो रे बेना।

– बना रुक गया है, क्यों रुका? उसकी बहन पीछे रह गई थी, इसलिए रुका। इस प्रकार सम्बन्धियों के नाम लेकर गाते हुए गीत आगे बढ़ता चला जाता है।

बारात के रास्ते का गीत

आंबा मा मेलो भेलो हयो रे केसरिया लाल।
बाष्ट्या ऊपर जोबन झोला खाय रे केसरिया लाल।
आमल्या मा मेलो भेलो हयो रे केसरिया लाल।
हार ऊपर जोबन झोला खाय रे केसरिया लाल।
जांबुड़ा मा मेलो भेलो हयो रे केसरिया लाल।
तागल्या ऊपर जोबन झोला खाय रे केसरिया लाल।
सिंद्यां मा मेलो भेलो हयो रे केसरिया लाल।
लंगर्‌या ऊपर जोबन झोला खाय रे केसरिया लाल।

– बारात जा रही है, छायादार वृक्षों को देखकर रुकते हैं। सभी एकत्रित हो जाते हैं वहाँ गीत गाते हैं। सभी महिला–पुरुष गहनों से सजे हुए हैं।

आम के कुँज में मेला लग गया है जो केसरिया और लाल है। बाष्ट्या पर जवानी झूम रही है। इमली के वृक्षों में मेला लगा है जो केसरिया और लाल है। हार पर जवानी झूम रही है। जामुन के पेड़ों पर मेला लगा है केसरिया लाल। तागली पर जवानी झूम रही है। सिंदी के वृक्षों में मेला लगा है केसरिया लाल, लंगर पर जवानी झूम रही है।

बारात दुल्हन के गाँव के बिल्कुल पास पहुँच गई, जहाँ से बारात की

हलचल गाँव में सुनाई पड़ रही है, वहाँ गीत गाया जाता है। यह 'निहाली गीत' है।

निहाली गीत

तारो माटि कालगो आवे वो, बांगड़ भड़के झुणि वो।
बयड़ि आतर ढुलगि वाजिवो, बांगड़ भड़के झुणि वो।
तारो माटि कालगो आवे वो, बांगड़ भड़के झुणि वो।
तारो माटि दीत्यो आवे वो, रेसमि भड़के झुणि वो।
तारो माटि जुवान्स्यो आवे वो, धनि भड़के झुणि वो।
बयड़ी आतर ढुलगि वाजीवो, बांगड़ भड़के झुणि वो।

– बारात में महिलाएँ गीत गाती हैं–

टेकरी की ओट में ढोलगी बजी है। बाँगड़ (समधन) चमक मत जाना। तेरा खसम कौन आ रहा है? बाँगड़ चमकना मत। तेरा खसम दीत्या आ रहा है, रेशमी चमकना मत। तेरा खसम जुवानसिंह आ रहा है, धनी चमकना मत।

बारात स्वागत का गीत

आवो–आवो वो याहयण रामरामी।
मिलो–मिलो वो याहयण रामरामी।
बठो–बठो वो याहयण रामरामी।
पाणि–पीवो वो याहयण रामरामी।
आवो–आवो वो याहयण रामरामी।

– समधन से गीत में कहा है– समधन! बैठने के लिये मंडप बना रखा है। आओ राम–राम। समधन! आओ मिल लेवें। बैठो पानी पिओ।

जब माँडवे में वर पक्ष की महिलाएँ बैठ जाती हैं तब गाली गीत वधू पक्ष की ओर से प्रारम्भ हो जाता है, जवाब वर पक्ष से दिया जाता है।

विवाह गीत

वधू पक्ष– *तारा माटीनो मांडवो वो, मांडवे आइ बठि।*
तारा लाडा नो माडवो वो, मांडवे आइ बठि।
तारा ढुकण्यानो मांडवो वो, मांडवे आइ बठि।

वर पक्ष से– *हामु रूप्या भर्‌याने, हामु मांडवे आइ।*
हामु हजार भर्‌याने, हामु मांडवे आइ।

वधू पक्ष– *तारा माटीनो मांडवो, मांडवे आइ बठि।*

वर पक्ष– *तारा माटी ना रूप्यावो, रूप्या खाइ बठि।*
तारा लाडाना रूप्यावो, रूप्या खाइ बठि।

– वधू पक्ष की महिलाएँ गीत में कहती हैं कि तेरे खसम का मंडप है जो आकर बैठ गई ? वर पक्ष से उत्तर दिया गया है कि हमने रुपये दिये हैं इसलिए मंडप में आई हैं, हमने हजार रुपये दिये और मंडप में आये हैं।

विवाह गीत

बेनी तारी हवेली मा हवा निहि लागे वो।
हवा निहि लागे वो बेनि पंखो ढुलाइ दे।
पंखो नि चाले ते बेनी रेडियो चालादू दे।
बेनी तारी हवेली मा हवा निहि लागे।

– बनी तेरी हवेली में हवा नहीं लग रही है, पंखा चला दे। पंखा नहीं चले तो रेडियो चालू कर दे।

विवाह गीत

वाण्या मा गुई ने घाघरों ते लाई।
चुलि झुणि पेहरे वो नानी वो बेनी।
पटवा मा गुई ने रिबिन लाई।

तू झुणि गूथे वो नानी वो बेनी।
पटवा मा गूई ने कांगसो ते लाई।
तू झूणि चिचरे वो नानी वो बेनी।
पटवा मा गूई ने चून्या ते लाई।
तू झुणि बांथे वो नानी वो बेनी।

– सखी सासरे चली जायेगी, इस गुस्से में गीत गाया गया है।

बनिये के यहाँ गई थी और घाघरा लाये। तू चोली मत पहनना अर्थात् फेरे के लिए तैयार मत होना। पटवा के यहाँ से रिबिन लायी, तू मत गूँथना। पटवा के यहाँ से कंघी लायी, तू बालों में कंघी मत करना। मोती लाये हैं, तू मत बाँधना।

गाली गीत

काकड़ी नो वेलों, खड़ो-खड़ो वाजे।
याहिणिंक ढुके ते, घमघुले वाजे।
बेनो निहिं मान्यो ने, भिलड़ा मा लायो।
बेनो निहिं मान्यो ने, दात्याला मा लायो।
बेनो निहिं मान्यो ने, डाहवाला मा लायो।
बेनो निहिं मान्यो ने, ढुमाला मा लायो।
बेनो निहिं मान्यो ने, दारूड़्या मा लायो।

– ककड़ी का वेला खड़-खड़ बज रहा है, समधन को ठोकें तो धमाधम आवाज आ रही है।

बना नहीं माना अपनी मर्जी से लाड़ी पसंद की और 'भिलड़ो' में ले आया अर्थात् व्यवहार अच्छा नहीं है। बना नहीं माना, दाता-कच्ची करने वालों में ले आया। घमंडियों में ले आया। धूम करने वाले (घमंडियों) में ले आया, दारू पीने वालों में ले आया।

निहाली गीत

ताड़े जाता ते ताड़ि पीता रे लोल।
याहिणिके लावता ते वात करता रे लोल।
ताड़े जाता ते ताड़ि पीता रे लोल।
कलाल्या मा जाता ते दारू पीता रे लोल।
हलवी मा जाता ते गुंड्या खाता रे लोल।

– ताड़ के पास जाते तो ताड़ी पीते। समधन को लाते तो उसके साथ बात करते। कलाल के यहाँ जाते तो दारू पीते। हलवाई के यहाँ जाते तो भजिये खाते।

विवाह गीत

हामु तातला रूटा खासुँ रे गुपाल्या मुजिलाल।
याहिणि सुकला टुकड़ा खासे रे गुपाल्या मुजिलाल।
हामु लाड़ि लीजासूं रे गुपाल्या मुजिलाल।
हामु ताबलो पाणि पीसुँ रे गुपाल्या मुजिलाल।
याहिणि वासी पाणी पीसे रे, गुपाल्या मुजिलाल।
हामु तातला रूटा खासुं रे, गुपाल्या मुजिलाल।

– वर पक्ष की महिलाएँ गा रही हैं कि हम गरम रोटी खाएँगे। समधन सूखे टुकड़े खाएगी क्योंकि हम दुल्हन को ले जायेंगे। हम ताजा पानी पीयेंगी और समधन बासा पानी पीयेगी।

विवाह गीत

लाड़ि तुखे गुबर हेड़ाउं वो, पिपर्यापाणी मा।
लाड़ि तुखे पाणी भराउं वो, पिपर्यापाणी मा।
लाड़ि तुखे रूटा कराउं वो, पिपर्यापाणी मा।
लाड़ि तुखे घटी दलाउं वो, पिपर्यापाणी मा।

निहिं दले ते लाते उरी ने, लाते परी कराउं वो, पिपर्यापाणी मा।
डालि तुखे फाटा विछाड़ु वो, पिपर्यापाणी मा।
लाड़ि तुखे कांटा विछाड़ु वो, मुहड़ा वाला खेत मा।
लाड़ि तुखे दगड़ा विछाड़ु वो, टेमरा वाला खेत मा।

– दुल्हन को गीत में कहा है कि तुझसे ढोरों का गोबर फिकवायेंगे, पिपर्या पानी गाँव में। इसी प्रकार पानी भरवायेंगे, रोटी करवायेंगे, घट्टी चलवायेंगे, नहीं पीसेगी तो लात से इधर और उधर करवायेंगे। तुझसे कचरा खेत में चुनवायेंगे, महुए वाले खेत में काँटा चुनवायेंगे। टेमरू वाले खेत में पत्थर बिनवायेंगे।

गाली गीत

काकड़ी नो डीरो टरका करे।
आइणि नो माटी टरका करे।
काकड़ी नो डीरो टरका करे।
मंगली नो माटी टरका करे।
काकड़ी नो डीरो टरका करे।
सुमली नो लाड़ो टरका करे।

– ककड़ी का डीरा टर-टर कर रहा है, समधन का पति टर्रा रहा है। ककड़ी का डीरा टर-टर कर रहा है, मंगली का खसम टर्रा रहा है। ककड़ी का डीरा टर-टर कर रहा है, सुमली का पति टर्रा रहा है।

विवाह गीत

पिपलियो पान झलके वो नानी बेनुड़ी, पिपलियोपान झलके।
मनावर्यो हाट जासुं वो नानि बेनुड़ी।
खारिक खोपरों लावसुं वो नानि बेनुड़ी।
बागुन हाट जासूं वो नानि बेनुड़ी।
खार्या-दाल्या लावसुं वो नानुड़ि बेनी।

जोबट्यो हाट जासूं वो नानुड़ि बेनी।
माजम ने हार काकणिं, लावसुं वो नानुड़ि बेनी।

– पीपल का पान चमक रहा है छोटी बनी। मनावर के हाट जावेंगे छोटी बनी और खारक-खोपरा लाएँगे। बाग के हाट जायेंगे और सेव-चने लायेंगे। जोबट के हाट जाएँगे और माजम व हार-कंगन लाएँगे।

विवाह गीत

तू ते नहाई ले वो गोरी बनी।
तारा पाट ना नीचे नीर उहे।
तू ते सापड़ि तेरे सापड़ी ले बूढ़ा लाड़ा।
हामु कुकड़ो नी खाजे, बुकड़ो नि खाजे।
नंदी धड़े हामु बाम्हण्या रे।
हंइ मंगलि ठगारी ठगि देसे रे।
नंदी धड़े हामु बाम्हण्या रे।
हामुंग दितल्यो ठगारो ठगि देसे रे।
हामु दितल्या वाली के ली लेसुं रे।

– गोरी बनी को गीत में कहा गया है कि- तू स्नान कर ले, तेरे पाट के नीचे पानी बह रहा है। दूल्हे को यहाँ स्नान नहीं कराते हैं, पर गीत में कहा गया है कि तू स्नान कर ले बूढ़ा दूल्हा। हम मुर्गा बकरा नहीं खाते हैं हम बामण्या जाति के हैं। बामण्या गोत्र के लोग मुर्गा बकरा नहीं खाते हैं। अब ठगोरी मंगली हमें ठग लेगी। हमें दितल्या ठग लेगा। हम दितल्या की पत्नी को ले लेंगे।

विवाह गीत

अतरि जुवानिमा लेहर्‌यो फुंदो, धड़े मेलिन् नाचो वो।
नि माने ते मा माने लहर्‌यो फुंदो धड़े मेलिन नाचों वो।
फुंदा वाली धन्लि मारि उभिकरो, फुंद्‌याली दवड़ाउंवो।

नि माने ते मा माने उभिकरो, फुंद्‌याली दवड़ाउंवो।
अतरि जुवान मा लेहर्‌यो फुंदो, धड़े मेलिन् नाचो वो।

– दुल्हन के आँगन में महिलाएँ नाचते हुए गा रही हैं-

इतनी जवानी में चोटी का लहर्‌या फुंदा एक तरफ करके नाच रही हूँ। न माने तो मत माने। मेरी कमर में फुंदे लगे हैं, उसे खड़ी करके और दौड़ाऊँ। मन न माने तो खड़ी करूँ और दौड़ाऊँ।

नृत्य गीत

आंबि सांबि खेलो वो लिलरियो।
गेंद्‌यो फूल खेलो वो लिलरियो।
आइणि रांड के धरो वो लिलरियो।
गेंद्‌यो फूल खेलो वो लिलरियो।
आइणि रांड के धरो पुण डरो निहिं।

– एक दूसरी के गले और कमर में हाथ डालकर, हाथ पकड़कर नाचते हुए महिलाएँ यह गीत गाती हैं। आमने-सामने दो भागों में बँटकर यह गीत गाया जाता है-

आमने-सामने लिलरिया खेल रही हूँ। गेंदा का फूल खेल रही हूँ लिलरियो। समधन को पकड़ूँ, परन्तु डरूँ नहीं।

नृत्य गीत

पिपर्‌यापाणि न मालि पर सकर्‌यानो वेलो वो।
वेले वेले सुले जणिंग ठगो वो।
पिपर्‌यापाणिन् मालि पर सकर्‌या नो वेलो वो।
आइणि तूते लाडा वालि, छल्ला पुर्‌यान वाएँ झुणि लागे वो।
मंगली तू ते लाडा वालि, कुवारला पुर्‌यान वाएँ झुणि लागे वो।
आरस्या वालो कुवो मारो, फुंदा वाली बाल्ट्ये पाणिं भरो वो।
नि माने ते मा माने वो, फूंदा वाली बाल्ट्ये पाणि भरो वो।

– यह गाली गीत है। पिपर्यापानी की माल (ऊँची समतल भूमि) पर शकरकंद की बेल है। बेल के सहारे सोलह औरतों को ठगूँ। समधन तू तो पति वाली है, छेला लड़के के पीछे मत लगे। मंगली तेरा भी पति है कुँवारे लड़के के पीछे मत लगे। मेरा कुआँ काँच वाला है, फुंदे वाली बाल्टी से पानी खींच रही हूँ, नहीं माने तो मत मान, फुंदे वाली बाल्टी से पानी खींच रही हूँ।

गाली गीत

तारि माय नो काम कुण करसे वो बूढ़ी लाड़ि।
करसे करसे ने घड़िक रड़से वो मारि बूढ़ी लाड़ि।
तारि माय ना रूटा कुण करसे वो बूढ़ी लाड़ि।
करसे करसे ने घड़िक रड़से वो मारि बुढ़ी लाड़ि।

– दुल्हन से वर पक्ष की महिलाएँ गीत में कह रही हैं कि बूढ़ी लाड़ी तेरी माँ का काम कौन करेगा? वही करेगी और थोड़ी देर रोएगी। तेरी माँ की रोटियाँ कौन बनाएगा? वही बनाएगी और थोड़ी देर रोएगी।

कन्यादान गीत

काइ काइ दायजो हारू, मांगे नदान बेनी।
गुंडी वटली हारू मांगे नदान बेनी।
काइ काइ दायजो हारू मांगे नदान बेनी।
मांजरि कुतरि हारू मांगे नदान बेनो।
काइ काइ दायजो हारू मांगे नदान बेनी।
सिरको पलंग हारू मांगे नदान बेनी।
काइ काइ दायजो हारू मांगे नदान बेनो।
डोबा पाड़ा हारू मांगे नदान बेनो।
काइ काइ दायजो मांगे नदान बेनी।
तागली ने हार मांगे नदान बेनी।
काइ काइ दायजो मांगे नदान बेनो।
पागड़ि वनात हारू मांगे नदान बेनो।

– दहेज में वर–वधू क्या माँग रहे हैं? इस पर वधू पक्ष की ओर से यह गीत गाया जाता है।

–नासमझ बनी क्या–क्या दायजे में माँग रही है? उत्तर में गाते हैं घुण्डी–बटलोई माँग रही है। नासमझ बना दहेज में क्या–क्या माँग रहा है? उत्तर में अनचाही वस्तु भैंस व पाड़ा माँगने का बताया है। नासमझ बनी दहेज में क्या–क्या माँग रही है? उत्तर में तागली और हार बताया है। बना दहेज में क्या–क्या माँग रहा है? अब उत्तर में वाँछित वस्तु पगड़ी और बनात कहा गया है।

कन्यादान गीत

पोसे पोसे रूप्या देधा, हार कड़ा पातला देसे वो लाड़ि।
पोसे पोसे रूप्या देधा, गुंडि वटली फवरी देसे वो लाड़ि।
पोसे पोसे रूप्या देधा, पलंग सिरको फवरा देसे वो लाड़ि।
पोसे पोसे रूप्या देधा, कड़ा कड़ि पातला देसे वो लाड़ि।

– वर पक्ष की महिलाएँ शंका कर रही हैं कि हमने पोष भर–भरकर तेरे माता–पिता को रुपये दिये हैं, हार–कड़े पतले देंगे। घुण्डी–बटली हल्के देंगे, पलंग सिरका हल्का देंगे और कड़ा और कड़ी पतली देंगे।

भाँवर गीत

वर पक्ष– *पाच फेरा फिरजि बेना, पारकि लाड़ी छे।*
वधू पक्ष– *पाच फेरा फिरजि बेनी, पारको लाड़ो छे।*
वधू पक्ष– *लाकड़ि काटि देजि बेनी, लाड़ो टेके–टेके चाले।*
वर पक्ष– *लाकड़ि काटि देजि बेना, लाड़ी टेके–टेके चाले।*

– यह गीत भाँवर के समय वर–वधू के लिये गाया जाता है। वास्तविक रूप से चार फेरे में दूल्हा आगे रहता है और तीन फेरे में दुल्हन आगे रहती है।

गीत में कहा गया है- बना पाँच फेरे फिरना लाड़ी पराई है। इसी प्रकार बनी को कहा है- पाँच फेरे फिरना दूल्हा पराया है। दूल्हे-दुल्हन की हँसी करते हुए कहा गया है- बनी लकड़ी काटकर देना, बना उसे टेकते हुए चलेगा। फिर दूल्हे को कहा है- लकड़ी काटकर देना, दुल्हन उसे टेकते हुए चलेगी।

कन्यादान गीत

बेनि भाई आवे तिं, अड़ि जाजी वो।
भाइ पइस्या आले तिं, छुड़ि देजी वो।
बेनि काको आवे तिं, अड़ि जाजी वो।
काको बुकड़ि आले तिं, छुड़ि देजी वो।
बेनि बणवि आवे तिं, अड़ि जाजी वो।
बणवि करोंदि आले तिं, छुड़ि देजी वो।
बेनि बहणिस् आवे तिं, अड़ि जाजी वो।
बहिण छल्लो आले तिं, छुड़ि देजी वो।

- वधू पक्ष वाले कन्यादान करते हैं और दुल्हन से गीत में कहा गया है कि- हे बनी! भाई कन्यादान के लिए आए तब उसे पकड़ लेना, जब रुपये दे तब छोड़ना। काका आएँ तक उन्हें पकड़ लेना, बकरी दें तब छोड़ना। बहनोई आएँ तो उन्हें भी पकड़ लेना, करोंदी दें तब छोड़ना। बहन आए तो उसे भी पकड़ लेना, छल्ला दें तब छोड़ना।

कलेवा गीत

सासु ने काइ काइ रांद्यो जवांयला।
आवस्या नो भोजन रांद्यो जवांयला।
खाइ ते सलो-वलो करे जवांयला।
गुल ने घिंव ते नारब्यो जवांयला।
खासे तिं घणि मुझा आवसे जवांयला।

- गीत में कहा गया है- जवाँईजी! सास ने भोजन में क्या-क्या बनाया है? उत्तर में कहा है- सिवैयाँ बनाई हैं, खाएँ तो 'सलो-वलो' (इधर-उधर) होती हैं। उसमें गुड़-घी डाला है, खाएँगे तब खूब मजा आएगा।

विदाई गीत

तारा घर मा हिरे भर्‌यो हिडोलो,
हिचणे वालि काहाँ चालि वो बेनी।
तारा भाइ काजे हेलि-मेलि लेजी वो, हिचणावालि,
काहाँ चालि वो बेनी।
तारि भोजाइ के हेलि-मेलि लेजी वो हिचणावालि,
बेनी काहाँ चालि वो।
तारा बावा के हेलि-मेलि लेजी वो हिचणावालि,
बेनी काहाँ चालि वो।
तारि माय काजे हेलि-मेलि लेजि वो हिचणावालि,
बेनी काहाँ चालि वो।

- वर-वधू को विदा करते समय यह गीत गाया जाता है-

वधू से कहा गया है कि तेरे घर में रेशम जड़ित झूला है, उसमें झूलने वाली बनी अब कहाँ चली? जाते समय भाई से मिल लेना, भावज से मिल लेना, पिता से मिल लेना और माता से मिल लेना।

विदाई गीत

सासरे केलवता घणो बुदो, लागसे वो लाड़ी।
माय के छुड़वता घणो बुदो, लागसे वो लाड़ी।
बास के छुड़वता घणो बुदो, लागसे वो लाड़ी।
भाइ के छुड़वता घणो बुदो, लागसे वो लाड़ी।
भोजाइ के छुड़वता घणो बुदो, लागसे वो लाड़ी।
बहणिस् के छुड़वता घणो बुदो, लागसे वो लाड़ी।

बणवि छुड़वता घणो बुदो, लागसे वो लाड़ी।
फुवाक के छुड़वता घणो बुदो, लागसे वो लाड़ी।
फुई के छुड़वता घणो बुदो, लागसे वो लाड़ी।

– विदाई हो रही है आँगन में पहुँचने पर वर पक्ष की महिलाएँ गीत में कह रही हैं– लाड़ी! तुझे ससुराल अच्छा नहीं लगेगा। माता, पिता, भाई, भावज, बहिन, बहनोई, फूफा और बुआ को छोड़ते हुए तुझे अच्छा नहीं लगेगा।

जुवारना गीत

वधू पक्ष– *सुदो रहिन् जुवारजी रे लाड़ा,*
निंगवाल्या ना देउस आकरा,
सुदो रहिन् जुवार जी।
सुदि रहिन् जुवारजी वो बेनी,
जयो–वयो फगाइ देजी।

वर पक्ष– *सुदि रहिन् जुवारजी वो लाड़ी,*
देउस हामरा आकरा।
सुदो रहिन् जुवारजी रे लाड़ा,
जयो–वयो फगाइ देजी।

आँगन में विदाई के समय वर–वधू के हाथों में चावल रखकर उस पर पानी डालते हैं। दोनों एक साथ चावल धरती माता को चढ़ाकर हाथ जोड़ते हैं।

– वधू पक्ष की महिलाएँ वर को कहती हैं कि सीधा रहकर अर्थात् ठीक तरह 'जुवारना' हमारे देवता बहुत तीखे हैं, नहीं तो नाराज हो जाएँगे। वधू से कहती हैं कि– तू इधर–उधर फेंक देना। वर पक्ष की महिलाएँ वधू से कह रही हैं कि– लाड़ी तू ठीक से 'जुवारना' हमारे देवता बहुत तीखे हैं। वर से कहती हैं– तू इधर–उधर फेंक देना।

विदाई गीत

सोना नो ढुल्यो बेनी, रूपा ना पाया।
ढुल्यो छुड़ि देजी बेनी, माय झुणिं छुड़जी।
सोना नो ढुल्यो बेनी, रूपा ना पाया।
ढुल्यो छुड़ि देजि बेनी, भाइ झुणिं छुड़जी।
सोना नो ढुल्यो बेनी, रूपा ना पाया।
ढुल्यो छुड़ि देजी बेनी, बास झुणिं छुड़जी।
सोना नो ढुल्यो बेनी, रूपा ना पाया।
ढुल्यो छुड़ि देजी बेनी, भोजाइ झुणि छुड़जी।
सोना नो ढुल्यो बेनी, रूपा ना पाया।
ढुल्यो छुड़ि देजी बेनी, बहणिस् झुणि छुड़जी।

– वधू पक्ष की महिलाएँ अश्रुपूरित आँखें लिये विदा कर रही हैं और कहती हैं कि– तेरा पलंग सोने का है और उसके पाये चाँदी के हैं। पलंग छोड़ देना परन्तु माता को मत छोड़ना। इसी प्रकार पिता, भाई–भौजाई एवं बहन को नहीं छोड़ने का आग्रह किया गया है। इस गीत में मुख्य रूप से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने के लिए आग्रह किया गया है।

विदाई गीत

लाडि पछि फिरिन् भाल, तारो बावो पछि बुलावे।
लाडि पछि फिरिन् भाल, तारी माय पछि बुलावे।
लाडि पछि फिरिन् भाल, तारो भाइ पछि बुलावे।
लाडि पछि फिरिन् भाल, तारी भोजाइ पछि बुलावे।

बारात रवाना होने को है, दूल्हा आगे चल रहा है, दुल्हन का भाई दुल्हन को उठाये हुए उसके पीछे चल रहा है। मार्मिक क्षण हैं आँखों में अश्रु लिये वर पक्ष की महिलाएँ यह गीत गाती हैं–

– दुल्हन से कहा गया है कि– तू पीछे मुड़कर देख, तेरे पिताजी

वापस बुला रहे हैं। आगे इसी प्रकार माता और भाई-भौजाई के बारे में कहा गया है।

विरह गीत

माथे नी हयणी ढली गई,
कहां लग भालुं तारी वाट रे।
हाथ रंगीली लाकड़ी,
रही गई ढोलिड़ा हेट रे।
चूल्हा पर खिचड़ी सेलाई गई,
कहां लग भालुं तारी वाट रे।
सींका पर चूरमो सेलाई ग्यो,
कहां लग भालुं तारी वाट रे।
मारो रावलियो कुकड़ो तो,
रावलियो-रावलियो जाये रे।
राजा नी रानी जागसे,
तो टोपसे ढोलिड़ा हेट रे॥

– प्रियतमा अपने प्रियतम का इन्तजार कर रही है। वह कहती है- हिरणी (आसमान में उदित होने वाले तीन तारे, जिन्हें देखकर समय का अनुमान लगाया जाता है) ढल गयी है अर्थात् आधी रात हो गयी है, अभी तक प्रिय घर नहीं आये, मैं कब तक राह देखूँ? उनके लिए रखी खिचड़ी और सींके पर रखा चूरमा भी ठण्डा हो गया है। प्रेयसी, प्रिय के विरह में इतनी व्याकुल हो गयी है कि मुर्गे को टोकनी में बन्द करना ही भूल गयी।

भाँवर गीत

मारो कवचड़ा पर, ढेड्या दासे झुणी।
कवच आजड़ झांजड़ करे, ढेड्या दासे झुणी।
पुर्‌यो चुली मेकण आयो, पुरयो धड़-धड़ कांपे वो।

– विवाह के दिन फेरे के समय दूल्हे का छोटा भाई दुल्हन के लिए चोली लेकर दुल्हन के घर में जाता है। स्त्रियाँ कहती हैं- हे लड़के! मेरा कवच का घर है, भागना मत। कवच हिलती है तुझे लग जाएगी, भागना मत। वह लड़का जो चोली देने के लिये आया है, थर-थर काँप रहा है।

बाना गीत

गुदड़्ये बठो रे बानो कागते वाचे।
इनी धड़े फुवो, पली धड़े फुई।
विच मा बठो रे बानो, कागते वाचे।
इनी धड़े भाई, पत्नी धड़े भोजाई,
विच मा बठो रे बानो, कागते वाचे।
इनी धड़े बनवी, पली धड़े बइण
विच मा बठो रे बानो कागद वाचे।

– गद्दी पर बैठा हुआ दूल्हा कागज पढ़ रहा है। दूल्हे के एक तरफ फूफा बैठा है और दूसरी तरफ फूफी बैठी है। बीच में बैठा दूल्हा कागज पढ़ रहा है। इस ओर भाई तथा उस ओर भौजाई बैठी है। इस ओर बहन और उस ओर बहनोई बैठा है। बीच में बैठा बना कागज पढ़ रहा है।

बाना गीत

कुणे कह्यो ने गुदड़्ये बठो रे बनो।
बइण कह्यो ने गुदड़्ये बठो रे बनो।
कुणे कह्यो ..... ।
भोजाई कह्यो ने गुदड़्ये बठो रे बनो।
कुणे कह्यो ..... ।
भाई कह्यो ने गुदड़्ये बठो रे बनो।

– जमीन पर गादी बिछाकर दूल्हा-दुल्हन को बैठाते हैं, जिसे बाना बैठाना कहा जाता है। दूल्हे के बाने बैठने पर गीत में प्रश्नोत्तर किये गये हैं

कि- किसने-किसने कहा जब दूल्हा गादी पर बैठ गया? उत्तर में कहा है कि- बहन, भौजाई व भाई ने कहा, तब बना गादी पर बैठा।

बाना गीत

झिनि-झिनि आमली मुरे आइ बना तारा राज मा।
बना तारो फुवो नी आयो, तारा राज मा।
झिनि-झिनि ..... ।
बना तारी फुई नी आवी, तारा राज मा।
झिनि-झिनि ..... ।

- छोटे पत्तों वाली इमली के फूल आ रहे हैं, ऐसे में ब्याह हो रहा है। गीत में दूल्हे से पूछा गया है कि- दूल्हे राजा! तेरे राज में बुआ, फूफा और बहिन नहीं आई हैं।

विवाह गीत

बइण आवि ने काइ लाइ रे, मइसुरनी।
मांदल लावनी ने तली भूली रे, भंवरजी।
फूवो आयो ने काइ लायो रे, भंवरजी।
ढोलग्या लायो ने, फेफ्र्या भूल्यो रे भंवरजी॥

- विवाह गीत में दूल्हे से पूछा गया है कि- बहन, फूफी (बुआ) और फूफा आये हैं, वे तुम्हारे लिये क्या-क्या लाये हैं? बहन आई है माँदल लाई है पर माँदल के साथ बजने वाली थाली भूल गई है। फूफा ढोल लेकर आये हैं लेकिन ढोल के साथ बजने वाली शहनाई (फेफर्या) भूल आये हैं।

हल्दी गीत

तेल लेवो बनी तारो सरगयो तेल।
तुखे मसे वो गोरी बनी पीठी रोलो॥
ऊं डे कुवे नोका दे वड़ो, काला लाड़ा कूचोल से।

तू ते नाहिले वो, नाहिले वो, गोरी बनी।
नवला पोतल्या पांधरले वो, गोरी बनी।

- गीत गाते हुए लाड़ी (दुल्हन) को हल्दी का उबटन लगाया जा रहा है। लाड़ी को प्रसन्न करने के लिए इस गीत में कहा गया है कि- तुझे तेल-रोलां मल रहे हैं। काले लाड़े को गहरे कुएँ का कीचड़ मलेंगे। हल्दी मलने के बाद स्नानकर लाड़ी को नये कपड़े पहनने के लिए आग्रह किया गया है।

विवाह गीत

छाबो भरि पापड़ अलग मेकसे।
याहिणी वो लांगड़ चाई गुई।
भाट्यो भरि दारुड़ो अलग मेकसे
याहिणी वो लांगड़ पी गुई।
छाबो भरि खार्या अलग मेकसे।
याहिणी वो लांगड़ खाई गुई।

- समधन के लिए वधू पक्ष की स्त्रियाँ कह रही हैं- हमारी समधन बहुत भूखी और पेटू है। समधन के सामने हमने बहुत से पापड़ रखे, वो सभी खा गई, पूरी दारू पी गई और सेंव भी खा गई, ये कैसी समधन है?

विवाह गीत

चिकल्या घर जाओ बना,
चिकल्या घर जाओ बना।
तरवार विसाई ने वेधा घर आवो बना।
वाणिला घर जाओ बना।
पाधां विसाई ने वेधा घर आवो बना॥

- इस गीत में दूल्हे से कहा गया है कि- तुम सिकलीगर (तलवार बनाने वाले) के घर जाओ और तलवार लेकर जल्दी घर आओ। महाजन के यहाँ जाओ और पगड़ी लेकर जल्दी घर आओ।

कन्यादान गीत

ठाटी म ठण को वाज्यो, हिवड़ो सवायो जी।
बनी पुई आवें ती, अड़ी जाजी वो।
बनी डूबी आपे ते, छोड़ देजी वो।
बनी बइण आवे ते, अड़ी जाजी वो।
बनी बुकड़ी आपे ते छोड़ि देजी वो।
बनी भाई आवे ते अड़ी जाजी वो
बनी गाय आपे ते छोड़ि देजी वो।

– यह गीत बारात रवाना होने से पूर्व जब दुल्हन को भेंट (ओपी) दी जाती है, उस समय गाया जाता है। दुल्हन को भेंट देने के अवसर पर गाये जाने वाले कन्यादान गीत में कहा गया है– बनी, बुआ आए तो अड़ जाना, बहन आए तो अड़ जाना और भाई आए तो अड़ जाना। ये लोग तुझे भैंस, गाय या बकरी दें तो छोड़ देना।

भाँवर गीत

बनी चवरी में खेले, सूरज फूल खेले।
बनी चवरी में खेले, रंगइलो फूल खेले।
मारि रंग रूपाली बिल्खी वो
चरवयो खेलो चुट।
बनी चवरी में खेले, सूरज फूल खेले।

– फेरे के समय चवरी की सजावट के बारे में बताया गया है। सूर्यमुखी फूल, रंगीन फूल चवरी में लगे हैं।

भाँवर गीत

राजा नी बेटी नहीं नवे, नहीं नवे।
वाण्या नो बेटो, उरो नवे, परो नवे।

एक फेरो फिर जी बनी, चार को बनो छे।
बनी पयणाय जाजी ने, पछी आवती रहजी।

– फेरे के समय वधू को कहा गया है कि– वधू, राजा की लड़की है वह झुकेगी नहीं। बनिया का बेटा इधर झुकता है उधर झुकता है। बनी को फेरे के लिए कहा है। एक फेरा फिर, बना पराया है। दुल्हन अड़ रही है। सहेलियाँ कह रही हैं– ब्याह कर ले फिर वापस पीहर आ जाना।

विदाई गीत

पांच डांडानी तारी झोपड़ी वो लाड़ी।
एक इटड़ी नो तारो भीतड़ी वो लाड़ी।
पांच डांडानी .....
एक सड़का नो तारो नीपणो वो लाड़ी,
पांच डांडानी ..... ।

– दुल्हन अपने पिता के घर से जब विदा होती है, तब वर पक्ष की महिलाएँ ये गीत गाती हैं– लाड़ी से कहा है कि तेरा घर पाँच डाण्डे का है अर्थात् बहुत छोटा है। एक ईंट की दीवार है। घर में जगह कम है एक बार में झाड़ू लग जाती है।

विवाह गीत

तारा बाबा ना घर मा काम कर्यो, धाम कर्यो
गले नी गलसुण छोड़ी लेधी।
तारा ससरा ना घर मा काम नी कर्यो।
धाम नी कर्यो, गले नी गलसुण बांध लेधी।
तारा वासने ना घर मा काम कर्यो, धाम कर्यो
माथे नी ओढ़णी उतारि लेधी वो।
तारा ससरा ना घर मा काम नहीं कर्यो,
धाम नी कर्यो, माथे पर साड़ी ओढ़ि लेधी वो।

– वर पक्ष की ओर से इस गीत में वधू से कहा गया है कि– तूने अपने पिता के यहाँ काम किया, किन्तु उन्होंने गले की गलसनी, माथे की ओढ़नी सब उतार ली। अभी तूने तेरे ससुर के यहाँ काम नहीं किया किन्तु तुझे गले की गलसनी व ओढ़नी ओढ़ा दी है।

विदाई गीत

तारा बासे ना घर मा काइ बात।
लागि वो गुरिया लाड़ि, चाल मारे देस।
तारा बासे ना ..... ।
तारी माई ने काई बात करो,
वो गोरी लाड़ी, चाल मार देस।
तारो भाई ने काई बात करो।
वो गोरी लाड़ी, चाल मारा देस।

– वर पक्ष की ओर से वधू को कहा गया है– तुम अपने माँ, पिता और भाई से क्या बात कर रही हो, मेरे देश में चलो, वहाँ तुम्हारी प्रतीक्षा हो रही है।

विदाई गीत

लाड़ी कर वो येल्यां, वेल्यां घर जावां वो।
तारो एक लो सेसरो, प्यार वाट चाहे वो।
लाड़ी कर वो येल्यां, वेल्यां घर जावां वो।
तारी एक ली सासू प्यार वाट चाहे वो।
लाड़ी कर वो येल्यां, वेल्यां घर जावां वो।

– वर पक्ष की ओर से कहा गया है कि– लाड़ी जल्दी घर चलो। तेरे ससुर और सास घर पर इन्तजार कर रहे हैं।

विदाई गीत

बनी झाझा भाई ने भेले रमतेली वो।
बनी पीपल छांया मा रमतेली वो।
बनी झाझी वयण भेले रमतेली वो।
बनी झाझी भोजाई ने भेले रमतेली वो।
बनी झाझी फुई ने भेले रमतेली वो।

– वर पक्ष की ओर से दुल्हन को कहा जाता है कि– यह पीपल का वृक्ष बहुत पुराना है। इस पीपल की ठंडी छाया में बहुत से भाई, भौजाई, बुआ, बहन के साथ खेलती थीं।

विदाई गीत

सासु बोलाड़े बनी जरा बोलजे।
बनी बोल बिराणो लागे।
माई बोलाड़े वेगि बोल नानी बनड़ी।
बोल पियारो लागे।
सेसरो बोलाड़े धीरे–बोल नानी बनड़ी।
बोल बिराणो लागे।

– मायके से लड़की को शिक्षा दी गई है कि मायके वाले आवाज दें तो जल्दी और जोर से बोलना। ससुराल वाले आवाज दें तो धीरे से और शांत–स्वभाव से बोलना। मायके वालों की आवाज प्यारी लगती है, ससुराल वालों की आवाज पराई लगती है।

विवाह गीत

पीपर्‌या पाणिन माली पर ताड़ेनो पाते रो।
याहयणी तारो वाजो मांगो, मीन मकी भालूँ वो।
पीपर्‌या पाणिन माली पर, बोरिनो झीकरो।
झीकरे–झीकरे आव वो, याहयणी पाणि मी वताड़ूवो।

– पीपर्यापानी नामक गाँव के पठार पर ताड़ के पत्ते हैं। समधन से कहना है कि तेरा बाजा माँगता हूँ, नहीं तो तेरी मक्का की रखवाली नहीं करूँगा। आगे कहा गया है कि पठार पर बेर के काँटे हैं तू काँटों से होकर आ, मैं तुझे पानी बता दूँगा।

विवाह गीत (गाली)

बयड़ी आडल ढुलकी वाजे हो।
बांगड़ भड़के झुणी वो।
तारो माटी रामस्यो आवे वो,
बांगड़ भड़के झुणी वो।
तारा माटी नो मांडवो वो, मांडवे नाचण आइ।
हामु हजार भर्या ने, हामु मांडवे आइ।
तारा माटी नो मांडवो वो, मांडवे नाचण आइ।

– बारात दुल्हन के यहाँ आती है तब मंडप में वर पक्ष की औरतें भी नाचती हैं। वधू पक्ष की औरतें गालियाँ गाती हैं।

टेकरी की आड़ (पीछे) में ढोलक बज रही है तुम भड़कना मत। यह मंडप रामसिंह का है। तुम्हारे लाड़ले का है जो तुम मांडवे में नाचने को आ गईं? उत्तर में वर पक्ष की औरतें गीत में कहती हैं कि– हमने दहेज में लड़की के पिता को एक हजार रुपये दिये तब हम नाचने को आई हैं।

बारात गीत

तूके कुण बुलायो, ने कुणे घर आयो रे
रायजादा बनड़ा।
तारा काकड़ पर डेरो देणो देजी वो
रायजादी बनड़ी।
तारो दाजी लिखलो कागद में क्यों वो
रायजादी बनड़ी।
तारा मांडवा मा डेरो देणों देजी वो

रायजादी बनड़ी।
तूके कुण बुलायो, ने कुणे घर आयो रे
रायजादा बनड़ा।

– इस गीत में वधू पक्ष की स्त्रियाँ दूल्हे से कह रही हैं– तुझे किसने बुलाया और तू किसके घर आया है? तो दूल्हा, दुल्हन से कह रहा है कि– तेरे पिताजी ने पत्र देकर मुझे यहाँ बुलाया है। तुम्हारे गाँव व मंडप में मुझे ठहरने दो।

झूमरली

जमना किनारे कानो धेन चरावे,
राधाराणी राधाराणी पाणी जावे हो राज।
माता जसोदा रो कानूड़ो।

– श्रीकृष्णजी की कान की झूमर राधाजी ने ले ली थी, उसी पर गीत रचा गया। श्रीकृष्ण यमुना नदी के किनारे गौ चारण हेतु जाते हैं, राधा रानी भी यमुना पर जल भरने जाती हैं। माता यशोदा के श्रीकृष्ण।

जमना किनारे कानो बन्सी वजावे,
झिणि झिणि राग सुणावे हो राज।
माता यशोदा रो कानूड़ो।

– यमुना के किनारे गौओं को चराते हुए श्रीकृष्ण मधुर–मधुर राग सुनाते हैं।

हाथ पग धोवता गळनो निचवता, कानूड़ा रे छाटो लाग्यो हो राज।
आंगळी पकड़ी ने पुणचो पकड़्यो, हार गळा रो लीदो हो राज।
मारी ककरिया फोड़ी गगरिया, दूर जइ ऊबो कानूड़ो हो राज।
माता जसोदा रो कानूड़ो।

– राधा ने पानी की गागर भरी और पानी छानने का गलना धोया, हाथ–पैर धोये, श्रीकृष्ण पास ही खड़े थे, उन पर पानी के छींटे लगे। छींटे लगने से श्रीकृष्ण को राधा से मजाक करने का बहाना मिल गया। राधा ने भी जानकर उन पर छींटे उड़ाए थे। पानी के छींटे लगते ही श्रीकृष्ण ने राधाजी की अँगुली पकड़कर पोंची पकड़ी और उनके गले का हार निकालकर कंकड़ मारकर गगरिया फोड़ दी और दूर एक तरफ जाकर खड़े हो गये। इतने में बहुत सी गोपियाँ आ गईं। राधा ने उन्हें बताया कि कान्हा ने मेरा हार निकाल लिया। माँ लड़ेगी तो क्या उत्तर दूँगी ? गोपियों ने मशविरा किया और पानी लेकर घर की ओर चल पड़ी। सभी ने मिलकर उपाय सोचा कि कान्हा के कान की झूमर कीमती है, इसकी झूमर निकाल लो। गोपियों ने मटकिया उतारी और कुंज गली के गन्ने लेकर रास्ते में खाने लग गई। गोपियों ने विचार किया कि कान्हा गन्ने का शौकीन है, गन्ना खाने के लिये बुलाना है और सभी को मिलकर पकड़ना है। राधा झूमर निकालेगी और इसके पास रहेगी। कान्हा गौयें लेकर आये, गोपियों ने कहा–

कुंज गळी रो हांटो मीठो मीठो, गांठ गांठ रो रस न्यारो न्यारो न्यारो रे।
आवो कान्हा हांटो खइलो, देखो हांटा रो रस मीठो रे,
मीठो मीठो मीठो रे।

– कान्हा गन्ने की लालच में उनके बीच आ गया। गोपियाँ बोलीं– इस गन्ने का स्वाद नहीं चखा, इसकी पेर–पेर का रस अलग–अलग है। कान्हा ने कहा– थोड़ा सा गन्ना मुझे भी दो। गोपियों ने एक पेर तोड़कर दी, उन्हें गन्ना बहुत मीठा लगा और कहा– थोड़ा और दे दो। इतने में गोपियों ने उन्हें घेर लिया और राधा से कहा– इसकी झूमर निकाल ले। राधा ने झूमर निकाल ली और गोपियों के साथ चलती बनी।

– कान्हा गायें घर ले गया और बाड़े में प्रवेश कराकर घर के ओटले पर खड़ा हो गया कि यशोदा माता कान में झूमर न देखकर पूछेगी तो क्या उत्तर दूँगा ?

कान्हो ऊबो घर रा ओट, ऊबो ओटे ओट अण झूमरी रा कारणें।
कान्हो लोटे लोटे लोटे धूळा में, झूमर पाई वे तो दीजो।

– कान्हा ओटले पर खड़ा रहा और धूल में लोटने लगा और रो-रो कर कहने लगा- मेरी झूमर गिर गई है किसी को मिली हो तो दे दो। यशोदाजी बाहर निकलीं और कहने लगीं-

कान्हा मूंडो धोइलो माखण खइलो, घमी गी तो घमणें दो
कान्हा ऊबके घड़इ दूँ मोटी मोटी मोटी।
म्हारा कान्ह कुँवर री झूमर कोई पाई वे तो दीजो लालजी
लादी वे तो दीजो, म्हारा भोळा कान्ह री झूमर कोई पाई वे तो दीजो।

– यशोदाजी कान्हा से कहती हैं कि- कान्हा! मुँह धो लो, मक्खन खा लो, गुम गई तो गुमने दो अबकी बार बड़ी झूमर घड़वा दूँगी। वे सभी से कहती हैं कि- मेरे भोले कान्हा की झूमर किसी को मिली हो तो दे देना। कान्हा बात को छिपा रहा है सच नहीं बोल रहा है कि मैंने राधा का हार छीन लिया और राधा ने मेरी झूमर छीन ली। वह माता से कहता है कि- गायें लड़ने लगीं मैं उनके बीच में आकर धूल में गिर पड़ा और झूमर निकलकर गिर पड़ी, खूब ढूँढ़ी पर न मिली। कान्हा माँ से पूछता है कि झूमर कितने रुपये की थी? माता कहती हैं-

एरे रे मेरे हीरा जड़िया, विचमें सोवण धागो।
म्हारा कान्ह कुँवरी झूमरी में, लाख रूप्यो लागो।
झूमर पाई वे तो दीजो, म्हारा कान्ह कुँवर री झूमरी,
कोइ ने लादी वे तो दीजो।
एरे रे मेरे हीरा जड़िया, विचमें लालां पोई,
म्हारा कान्ह कुँवर री झूमरी, दड़ियां खेलत खोई खोई खोई।
झूमर पाई वे तो दीजो, झूमर लादी वे तो दीजो।
म्हारा नखराळा री झूमरी कोई पाई वे तो दीजो।

– यशोदाजी कहती हैं कि- झूमरी के आसपास हीरे जड़े हुए हैं और

सोने के धागे से पिरोई हुई है। उसके बीच में लालें भी पिरोई हुई हैं। झूमरी में लाख रुपये लगे हैं। लोगों से कहती हैं कि- मेरे कान्हा की झूमरी गेंद खेलते हुए गुम गई है। मेरे नखराले की झूमर किसी को मिली हो तो देना। जनसमूह एकत्रित हो गया क्योंकि कान्हा की झूमर और वह भी हीरे मोती और लाल जड़ी हुई लाख रुपये की।

यशोदा ने विचार किया कि ऐसे तो झूमर मिलेगी नहीं। नारदजी मथुरा में आये हुये हैं उन्हें बुला लो तो ही झूमर मिलेगी।

मथुरा रे नगरी कागद मेल्यो, नारद ने बुलाओ।
मथुरा रे नगरी कागद मेल्यो, नारद दवड़्यो आयो।
खुसी मनाओ मन रा माहीं, कान कुँवर री झूमरी राधा वना पावे नि।
म्हारा .....

– यशोदाजी ने नारदजी को पत्र लिखा, नारदजी दौड़े आये, उन्हें बात बताई। नारदजी बोले- सभी मन में खुशी मनाओ, कृष्ण की झूमर राधा के बिना नहीं मिलेगी। राधा को बुलवाया और कहा- झूमर कहाँ है? राधा ने कहा- मैंने नहीं ली। नारदजी ने कहा- झूमर तूने ही ली है, दे दो। राधा कहती है- मैंने नहीं ली है, आप लोग चाहें तो-

काळी देह ती नाग बुलइ लो, झूटी ब्यूं तो डसेला

– कालिया दह से नाग बुलावो और मेरे गले में डालो, मैं झूठ बोल रही होऊँगी तो मुझे डसेगा।

धमण धमई दो गोळा तपय दो, झूटा वे वने दीजो।
झूमर पाई वे तो दीजो .....

– राधा कहती हैं- नहीं मानो तो भट्टी सुलगाओ और लोहे के गोले गरम करके मेरे हाथ में दे दो, मैंने ली होगी तो मेरे हाथ जलेंगे। नारदजी ने कहा- राधा! तेरे सिवाय झूमर का पता कोई नहीं बता सकता! तू बता कहाँ

मिलेगी ? राधा ने सोचा इस नारद की खोज मिटे, यह मेरे पीछे पड़ गया है, फजीते करा देगा।

नन्दगाँव गोदाणा रा बीच में, खोजो खोज लगावे।
बिरज भान री डावड़ी, यो उनको भरम बतावे।
झूमर पाई वे तो दीजो, लालजी लादी वे तो दीजो।
नखराळा री झूमरली, कोइ पाई वे तो दीजो।

– राधा कहती हैं कि– नंदगाँव और गोदाणा के बीच में कोई खोज करने वाला पता लगाये। बृषभान की पुत्री उनको भेद बता रही है। इस प्रकार कहा तो सभी लोग बिखर गये और झूमर खोजने लगे। चुपके से राधा–कृष्ण से मिली और कहा– तेरी भी चुप और मेरी भी चुप और शाम को अँधेरा होने पर चुपके से आना, यह नारद पीछे पड़ गया है अपने फजीते करा देगा।

सांझ पड़े दन आतमें ने, छाने–छाने अइजो।
हार तो देजइजो कानजी, झूमरली ले जइजो।
झूमर पाई वे तो दीजो.....

– राधा ने कहा– शाम को सूर्यास्त के बाद चुपके से आना, मेरा हार दे जाना और झूमर ले जाना। राधा ने कहा वैसा ही कृष्ण ने किया और सभी मन में तो जानते ही थे कि झूमर राधा के ही पास है। कृष्ण झूमर लेकर आ गये और घर में शरमा कर बैठ गये। इस प्रकार प्रकरण समाप्त हुआ।

भजन

रूसी भगवान राजा घर पावणों आयो॥
रूसी भगवान साते शेर लायो॥
राजा–राणी को एक लड़को रइयो तो रे राम॥
रूसी भगवान पावणो आयो राम।
राजा–रानी कइ की मिजवानी करी राम॥
राजा–रानी दाल–बाटी की मिजवानी दी राम॥
रूसी भगवान ने शेर वाटे लड़के की मिजवानी मांगी राम।
नइ तो भूख्या वापिस जावां जी।
राजा–रानी लड़के की मिजवानी दी राम॥
राजा–रानी ने लड़के को आरी से काटा राम
नाहर के मिजवानी दे दी राम
राजा–रानी चार थाली परोसी राम।
रूसी भगवान बोल्या एक थाली और परोसो राम॥
राजा–रानी बोल्या एक आपकी, एक नाहर की राम,
एक म्हारी और एक राणी की राम।
पांचवी थाली किकावाटे जी

रूसी भगवान बोल्या लड़के को बुलाओ राम
राजा-राणी बोल्या लड़के को तो काटा राम
कहाँ से आवेगा राम॥
भगवान बोल्या तुम बाहर जाओ राम।
तुम्हारा लड़का गेंद खेल रहा राम॥
राजा-राणी खुसी हुया ने बाहर पहुँच्या राम।
गेंद खेलता बाला के देख्यो ने घरे लाया राम॥
सभी ने भगवान को भोग लगाया जी॥

– राजा मोरध्वज के यहाँ भगवान शेर लेकर परीक्षा लेने के लिए गये, और उनके अतिथि-सत्कार की परीक्षा ली थी। यह एक प्रसिद्ध कथा है, जिसमें भगवान ने राजा के पुत्र का माँस शेर को खिलाने को कहा। राजा ने अपने पुत्र को आरे से चीरकर शेर के समक्ष परोसा। भगवान रूपी साधु की परीक्षा में राजा-रानी सफल हुए। लड़के को भगवान ने जीवित कर दिया। भगवान भक्तों की परीक्षा भी लेते हैं, क्योंकि बहुत से भक्त ढोंगी होते हैं, दिखावे के लिए भक्ति और दान-पुण्य करते हैं।

भजन

खेती खेड़ो हरि नाम की, तेमा मिलसे से लाभ॥
पाप ना पालवा कटावजो, धरमी हळे अपार॥
एची खेचिन बायरा लावजो, खेती कंचन थाय॥
खेती खेड़ो रे हरि नाम की, तेमा मिलसे से लाभ॥
ओम-सोम दोउ वाळ दिया, हाँरै सुरता रास लगाय॥
रास पिराणा धरिन हातमा,
हाँ रे सूरा दिया ललकार, खेती खेड़ो रे हरि नाम की,
तेमा मिलसे रे लाभ॥
सत कारे माळा रोपजो, धरमी पयड़ी बंधाव॥
ग्यान का गोळा चलावणा,
हाँ रे पंछी उड़-उड़ जाय, खेती खेड़ो रे हरि नाम की॥

ववन वकर जुपाड़जो, सोवन सरतो बंदाय,
कुल तारण बीज रे बोवणा,
हाँ रे खेती लटा-लुम थाय, खेती खेड़ो रे हरि नाम की॥
दावण आइ रे दयाल की, पाछी फेरी नि जाय॥
दास कबिर की रे विणती न रे, लज्जा राखो रे भगवान॥
खेती खेड़ो रे हरी नाम की, तेमा मिलसे रे लाभ॥
खेती खेड़ो रे हरी नाम की।

– भगवान के नाम की खेती करो। भगवान का भजन करो, उसमें लाभ मिलेगा।

इस खेती में पाप के जो वृक्ष उगे हैं, उन्हें खुदवाओ। धर्म खूब करो और उन वृक्षों को खींच-खाँचकर बाहर निकालो, जिनसे तुम्हारे जीवनरूपी खेती का सौन्दर्य बढ़ेगा। इसके बाद तुम्हारी खेती सोना हो जायेगी।

भजन

ओम-सोम दोनों बैल सुरता रास लगाय
धर्म की रास व लकड़ी पिराणा
हात में ले, सुरा ने ललकार
सत्य का माला रोपना धर्म की पेड़ी बंधाकर।

– धर्म का मकान सत्य की पेड़ी बँधाकर बनाना। ज्ञान के गोले चलाना जिससे पंछी उड़-उड़कर जायें। बोने के लिए सोवन सत्य का सरता बँधाकर बक्खर चलाना। कुल को तारने वाला बीज बोना, जिससे खेती लटालूम हो। भगवान के पास से बुलावा आया, वह वापस नहीं फेरा जा सकता है। कबीरदासजी की विनती है भगवान लज्जा रखना।

भजन

सरग झोपड़ा बांदिया, ने बणा लिया रे दुवार,
सरग झोपड़ा रे बांदिया॥

घर ऊँचा रे धारण नीचा, धरे नेवा नीची रे निकास॥
बारी रे छ छ सब धरिया
बिच बारी रे लगाय, सरग झोपड़ा रे बांदिया॥

बिना टाकी का घर घड़िया, नहिं लाग्या रे सुतार॥
हीरा मुद्रिका जड़ाविया
घरे मेल बनिया केवलास, सरग झोपड़ा रे बांदिया॥

खम्बा रे दीपक जले हाँ रे जाका रे भया उजाळा
तन की रे बत्ती बणाविया, सरग झोपड़ा रे बणाविया॥

धवळा घोड़ा मुख हासन, हीरा जड़िया पलाण॥
चांद सूरी मन पेगड़ा, हाँ रे उड़ी हुया असवार॥
सरग झोपड़ा बांदिया।

– तुम्हारा झोपड़ा स्वर्ग में बने, हमेशा इसका प्रयास करना। तुम्हारे झोपड़े का चौड़ा द्वार हो, घर ऊँचा हो, जिसके निकास का द्वार छोटा होना चाहिए। जिस घर के दरवाजे में हीरा–मोती जड़ें हों। उस घर के सामने जलने वाले दीपक की रोशनी से सारा जग प्रकाशित हो। यह सब तुम्हारे आचरण से ही सम्भव है।

भजन

टेक– *मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।*
उजळी कर लेणा, मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।

गोदड़ी बणी रे गुरु ज्ञान की, हीरा लाल लगाया,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।
काय की बणि रे साधु गोदड़ी, कायन केरा धागा
कायन केरा धागा,
कोण पुरुष दरजी भया, कोण सिवण हारा,

मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा, उजळी कर लेणा
मयली गोदड़ी .....

चौक–2 *जल की बणी रे साधु गोदड़ी, पवन केरा धागा,*
हो पवन केरा धागा, आप पुरुष दरजी भया,
हंसा सीवण हारा,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा, उजळी कर लेणा,
मयली गोदड़ी .....

चौक–3 *काहाँ से पवन पथारिया, कांसे आया जल पाणी,*
अरे कांसे आया पाणी, कांसे आई सोवागणी,
कब से धरती रचाणी,
मयली गोदड़ी साधू धोई लेणा।

चौक–4 *आगम से पवन पधारिया, पीछे आया जलपाणी,*
आरे पीछे आया पाणी, इन्द्र से आई सोवागणी,
तब से धरती रचाणी,
मयली गोदड़ी साधू धोइ लेणा, उजळी कर लेणा
मयली गोदड़ी .....

चौक–5 *धवळो छोड़ो रे खुर वाटळो मोत्या जड़ि रे लगाम*
अरे मोत्या जड़ि रे लगाम, चाँद सूरज बेड़ पेगड़ा,
उड़ि न हुयो रे असवार,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा, उजळी कर लेणा,
मयली गोदड़ी .....

छाप– *अकास से धारा उतरिया, धारा गई रे पयाळ,*
अरे धारा गई रे पयाळ, कईये कबीर सुणो साधू
अरे हंसो गयो सत लोग,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा, उजळी कर लेणा,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।

हे साधु पुरुष! यह काया मैली हो गई हो तो इसे धोकर स्वच्छ कर ले अर्थात् भक्ति करके उज्ज्वल कर ले। हे साधु पुरुष! गुरु के ज्ञान की गोदड़ी (बिछावन) बनी है, इसमें हीरे और लाल लगे हैं। यह काया वैसे ही प्राप्त नहीं हुई है। चौरासी लाख योनियों के बाद यह मानव काया प्राप्त हुई है। इस काया को भक्ति के द्वारा उज्ज्वल कर ले।

यह काया जल से बनी है और पवन के धागे से सी गई है। गोदड़ी सीने को भगवान दर्जी बने। अरे हंसा (जीव)! भगवान इसके बनाने वाले हैं।

पवन कहाँ से आया और जल कहाँ से आया? कहाँ से सुहागन आई और यह काया (धरती) कब से बनी?

आगम से पवन का आगमन हुआ और उसके बाद जल आया। और इन्द्र के यहाँ से सुहागन आई तब ये धरती बनी और जीव की उत्पत्ति हुई।

सफेद घोड़ा उसका खुर कटोरेनुमा, उसकी लगाम मोतियों से जड़ी है। चन्द्रमा और सूर्य दोनों पेगड़े और उछलकर उस पर सवारी की। अरे जीव (हंसा)! इस काया को भक्ति से उज्ज्वल कर ले, ताकि तुझे नरक का मुँह न देखना पड़े।

भजन

टेक- *सीता हो राम सुमर लेणा, भजि लेवो भगवान,*
सीता हो राम सुमर लेणा।

चौक-1 *सपना की रे संपत भई, बांधिया गजराज।*
भंवर भयो उठ जागीया, तेरा वही रे हवाल।
सीता हो राम .....

चौक-2 *वायो सोनू नहिं नीबजे, मोती लाग्या डालम डाल।*
भाग बिना केम पावसो, तपस्या बिन राज।
सीता हो राम .....

चौक-3 *राजा दसरथ की अयोध्या है, नंदि सरजु का तीर,*
जा घर बैठी राणी कौशल्या, जिनका जाया रघुवीर।
सीता हो राम .....

चौक-4 *बिना रे पंख का सोरठा, उड़ि गया रे अकास,*
रंग रूप वाहां को कछु नहिं, नहीं भूख न प्यास।
सीता हो राम .....

छाप- *झिणि झिणि नोबत वाजसे, वाजे गरू दरबार,*
सेन भगत की रे वीणती, राखो चरण आधार,
सीता हो राम .....

- सीता-राम का स्मरण करें अर्थात् भगवान का भजन कर लें।

यह संसार क्षणिक स्वप्न के समान है। स्वप्न में मनुष्य मालदार हो जाता है, उसके घर हाथी झूलने लगते हैं। भोर होने पर फिर वही हाल। हे मानव! भजन कर ले। सोना बोने से उगता नहीं, न ही डाली पर मोती लगते हैं। भाग्य के बिना कुछ नहीं मिलेगा। तपस्या के बिना राज्य भी नहीं मिलता है। सरयू नदी के तट पर राजा दशरथ की अयोध्या है, जिनके पास कौशिल्या रानी हैं, उनके पुत्र रघुवीर हैं। उनका भजन कर लो। यह जीव बिना पंख का पक्षी है, उसका रंग रूप कुछ नहीं है। न भूख लगती है न प्यास। हे मानव! सीता-राम की भक्ति कर ले, तो पार उतर जायेगा।

भजन

टेक- *हारे सतगुरू का भरम नी पायो रे,*
लियो रतन कोख अवतार रे।

चौक-1 *आठ मास नव गर्भ रयो रे।*
हंसा कोन पदारथ लायो रे।
आरे हंसा कोन पदारथ लायो रे।

कितना पुन से आयो मोरे हंसा,
ऐसो काई नाम धरायो रे।
लियो रतन कोख अवतार रे।

चौक–2 *दान पुन प्रणाम कियो रे हंसा,*
वइ काया संग लायो रे।
इतना पुन से आयो मोरे हंसा,
ऐसो हीरा नाम धरायो रे।
लियो रतन कोख अवतार रे।

चौक–3 *तीनी पण तुन धुल म गमायो हंसा,*
हजुव नि समझ्यो गंवार रे।
अरे हंसा हजुव नि समझ्यो गंवार रे।
बइण भाणिज तुन वलकी नी जाण्यो।
थारो रगीसर को अवतार रे।
लियो रतन कोख अवतार रे।

चौक–4 *जहाज पुरानी नंदी वव गयरी, केवटियो नादान रे।*
आरे हंसा केवटियो नादान रे।
धर्मी राजा पार उतरियो, ऐसो पापी गोता खाय रे।
लियो रतन कोख अवतार रे।
कइये कमाली कबिर सा री लड़की ये निरबाणी।
अरे हंसा ये पंथ है निरबाणी।
गऊ का दान तुम देवो मेंरे हंसा हो, तेरा धरम उतारेगा पार।
लियो रतन कोख अवतार।

– हाँ, मनुष्य तूने सतगुरू का भेद नहीं पाया, तूने रत्न की कोख से अवतार लिया है। (माँ की कोख को रतन कोख कहा गया है।)

आठ नौ माह तू माँ के पेट में रहा, कौन सा पदार्थ लाया? अरे मानव!

तू जान ले कितने पुण्य से मानव रूप में आया, ऐसा कौन सा नाम रखा है?

तूने पूर्व जन्म में जो भी दान–पुण्य और आराधना की, वही इस काया (शरीर) के साथ लाया है। इतने पुण्य से तू आया है और हीरा नाम रखा है। (मानव को हीरा माना है) जैसे धरती माता की कोख से बड़े प्रयत्न के बाद हीरा बाहर निकलकर संसार के लोगों के सामने आता है, वैसे ही माता की कोख से मनुष्य आता है।

अब मनुष्य के बुढ़ापे को कहा है कि बालपन, किशोर, युवावस्था तीनों पन धूल में गमा दिये अर्थात् तूने अपनी मुक्ति के लिए कुछ नहीं किया। अरे गँवार! बुढ़ापा आ गया, तू अभी तक नहीं समझा। बहन–भाणिजी को तूने नहीं पहचाना अर्थात् तूने बहन–भाणजी को दान नहीं दिया। तेरा जन्म व्यर्थ गया। (भजन में बहन–भाणजी को दान देने की प्रेरणा दी गई है।)

अरे मानव! जिस प्रकार जहाज पुराना हो और नदी गहरी हो और नाविक नादान (नासमझ) हो, उसमें धरम करने वाले राजा (मनुष्य) पार हो जाते हैं और पापी लोग नदी में गोते खाया करते हैं।

कबीरजी की लड़की कमाली कहती है कि– अरे मानव! गौ का दान करो तो वह धरम तुझे पार उतार देगा। (भजन में गौदान की महत्ता प्रतिपादित की गई है।)

भजन

टेक– *कब लग तोहे समझाऊँ, भोळा रे मन कब लग तोहे समझाऊँ।*

चौक–1 *घोड़ो रे होय तो लगाम देवाहूं, खासी झीण डलाऊँ।*
असवार होकर ऊपर बैठकर, चाबुक दे समझाऊँ।
भोळा रे मन कब लग तोहे समझाऊँ।

चौक–2 *हाथी रे होय तो जंजीर बंधाड़ू, चारी पाँय बंधाड़ू,*
मावत होकर ऊपर बैठे, तो अंकुस दे समझाऊँ। भोळा रे .....

चौक-3 *सोनू रे होय तो सुवागी बुलाऊँ, खासा ताव देवाड़ों।*
नई फूकणी से फुकवा लाग्या, तो पाणी से पिघलाऊँ। भोळा .....

चौक-4 *लोहो रे होय तो लोहार बुलाऊँ, आइरण घाट घड़ाऊँ।*
लइ सन्डासी खिंचवा लाग्या, तो यंत्र मा तार चलाऊँ। भोळा .....

छाप- *ज्ञानी रे होय तो ज्ञान बताऊँ, लइ पोथी समझाऊँ*
कइये कबीर सुणो भाई सादू, तो पत्थर को क्या समझाऊँ
भोळा रे मन कब लग तोहे समझाऊँ।

- अरे भोले मन! तुझे कब तक समझाऊँ। घोड़ा हो तो उसे लगाम लगाऊँ और उस पर मजबूत झींग कसवाऊँ और उस पर सवार होकर बैठूँ और चाबुक से उसे समझाऊँ। अरे! तू तो मनुष्य है और सभी जीवधारियों में एकमात्र समझदार जीव है, तुझे क्या घोड़े को समझाने के समान समझाना पड़ेगा?

हाथी हो तो पैर में जंजीर बाँधूँ (चारों पैरों में जंजीर बँधाऊँ), महावत होकर ऊपर बैठकर अंकुश से समझाऊँ। तू तो मनुष्य है।

सोना हो तो सुहागी बुलाकर और सोने के साथ डालकर खूब ताव दिलाऊँ (आग से ताव देने पर ही सोना पिघलता है) और फिर संडासी से पकड़कर पीटते हुए तारों में परिणत करूँ और आवश्यक डोरे-कंठी बनाऊँ। तू तो मनुष्य है। क्या सोने के समान आग पर तपाकर फूँकणी से फूँक देकर तार बनवाऊँ।

लोहा हो तो लोहार को बुलाऊँ और निहाई (लोहे की एरण) पर रखकर घड़वाऊँ और संडासी से पकड़कर हथौड़े से पीटते हुए तार बनवाऊँ।

ज्ञानी हो तो ज्ञान बताऊँ और पोथी लेकर समझाऊँ। कबीरदासजी कहते हैं कि- हे साधु भाइयों! सुनो, पत्थर को क्या समझाऊँ।

इस गीत में मनुष्य को शिक्षा दी गई है कि तू समझ जा और अच्छे

कर्म करते हुए परिश्रम की कमाई से जीवन व्यतीत करते हुए साथ में इस संसार रूपी समुद्र से पार होने के लिए भगवान की भक्ति कर। गीत में घोड़े, हाथी, स्वर्ण, लोहा का उदाहरण देते हुए मनुष्य को समझाया गया है।

किसी की मृत्यु होने पर एकत्रित जनसमूह के समक्ष मृत्यु गीत गाते हैं। मरने वाला तो परलोक सिधार जाता है किन्तु गीतों से जनमानस को अच्छे कर्म के प्रति प्रेरित कर भगवान का भजन करने की प्रेरणा दी जाती है।

होली पूजन

तू आई वो बयण सालिया पाल हंव आई वो बयण भर उन्हाळे॥
तू तो लाई बयण गोटी फटाका, न हंव लाई बयण लाल गुलाल॥
तू तो लाई बयण गुंजिया पापड़, न हंव तो लाई वाकड़ वेलिया॥
तू तो आई बयण गाय का गोयऽ, हंव तो आई बयण खयड़े व बयड़े॥
तू तो आई वो बयण कार्तिक महने, हंव तो आई बयण फागण महने॥

– होली और दीपावली दोनों बहने हैं। होली बहन दीपावली से कहती है कि– बहन! तू सर्दी के दिनों में आयी और मैं गरमी में आयी। तू गोट्या पटाखा लायी और मैं गुलाल लायी। तू गुजिया पापड़ लायी और मैं जलेबी लायी। तू गौ के गोयरे आयी (गौ पूजन) मैं टेकरे–टेकरी पर आयी। तू कार्तिक माह में और मैं फाल्गुन में आयी। दोनों त्यौहारों का समय वे किस प्रकार मनाते हैं, इसका वर्णन किया है।

फगवा माँगने का गीत

तू बोल रे कोरा कागद, बोल रे होळि वाळा॥
नारी बायर की घूगर माळ लीगया होळि वाळा॥
तू बोल रे केसरिया भइया, बायर को रखवाळो॥

थारी बायर के घूगर माळा, तोकि गया होळि वाळा॥
तू बोल रे कोरा कागद बोल रे होळि वाळा॥
तू बोल रे रणछोड़ भइया, तू बायर को रखवाळो॥
थारी बायर के घूगर माळा, तोकि गया होळि वाळा॥
होळी से झोळी बांध राति चुनरिया॥
मांग्या रे थारी नार राति चुनरिया॥
गेरिया में रमती मेल, राती चुनरिया॥
गेरिया को रहियो पेट, राती चुनरिया॥
कुण–कुण क कयगा बाप, राती चुनरिया॥
मांगिया क कयगा बाप, राती चुनरिया॥
गौरा क कयसे माय, राती चुनरिया॥
सुरेश भइया क हाट म देख्यो माथऽ कड़ब् को भारो॥

– तू कोरे कागज बोल! होली खेलने वाले बोल! (जिस व्यक्ति से फगवा माँगते हैं महिलाएँ उसे घेर लेती हैं और फगवे में जो रुपये लेना है उससे कबूल करवाती हैं कि बोल कितने रुपये देगा और गीत गाती जाती हैं। वह रुपये देना कबूल करता है तब उसे छोड़ती हैं।) कितने रुपये देगा? तेरी पत्नी की घूगरमाल होली वाले ले गये।

आगे नाम लेकर कहती हैं कि– केसरिया! तू पत्नी की रखवाली करता है और तेरी पत्नी की घूगरमाला होली खेलने वाले उठाकर ले गये। आगे दूसरे व्यक्ति को पकड़कर घेरती हैं और गीत में कहती हैं– अरे रणछोड़! तू पत्नी का रखवाला है तेरी पत्नी की घूगरमाला होली वाले उठा ले गये।

माँगिया! तेरी पत्नी लाल चूनरी वाली है। लाल चूनर से होली का झूला बाँध। गेंरिया (होली खेलने वालों में) लाल चूनरी वाली को खेलने भेज। गेंरिया में पेट रह गया, लाल चूनरी वाली का, उसका बालक किस–किस को पिता कहेगा? माँगिया को पिता कहेगा या गौरां को। बेटा लाल चूनरी वाली का।

सुरेश को कड़बी का भारा लेकर देखा (सुरेश भी होली खेलने वालों में है, उसे घेरकर कहा गया है)। भारा नहीं चढ़ा तो रोते हुए देखा।

इस प्रकार होली खेलते हुए फगवा माँगती हैं। हँसी-मजाक के रूप में ये गीत गाये जाते हैं, कोई बुरा भी नहीं मानता है, खुश होते हैं, क्योंकि बुरा न मानो होली है।

होली गीत

होळी आज न काल, होळी चली रे लोल ॥
होळी को मोटो तिवार, होळी चली रे लोल॥
पड़वी को मोटो तिवार, होळी चली रे लोल॥
पांचम को मोटो तिवार, होळी चली रे लोल॥
सांतव की सीतळा पुजाई, होळी चली रे लोह॥

- होली आज-कल है। होली का त्यौहार समाप्त होने चला है। होली का त्यौहार बड़ा है। पंचमी और सप्तमी को रंग से होली खेलते हैं। पूर्णिमा के दूसरे दिन धुलेन्डी पर होली की धूम मचती है। सप्तमी के दिन शीतला पूजन और छठ के दिन बना हुआ भोजन करते हैं। सप्तमी का दिन होली का अन्तिम दिन होता है।

होली भजन

टेक- *बिराणी जानकी हर लाए बिराणी।*

चौक-1 *कहत मंदोदरी सुण पिया रावण कोण बुद्धि उपजाई।*
उनकी जानकी तुम हर लाए।
वो तपसी दोनों भाई, पिया तुने एक न मानी,
जानकी हर लाए बिराणी।

चौक-2 *लिया जात की ओछी रे बुद्धी, उनकी करव बड़ाई,*
दूर मण्डल से पकड़ बुलाऊँ, हे राम लखन दोनों भाई

पिया तुने एक न मानी।
जानकी हर लायो बिराणी।

चौक-3 *मेघनाथ सरीका पुत्र हमारा, कुम्भकरण सा भाई।*
लंका हमारी बनी है सोने की।
वो सात समन्दर नव खाई, पिया तुने एक न मानी।
जानकी हर लाए बिराणी।

चौक-4 *हनुमान सरीका है सेवक जिनका, लक्ष्मण है छोटा भाई,*
जलती आगन में कूद पड़ेंगे, तो कोट गिणें न वो खाई।
पिया तुने एक न मानी।
जानकी हर लाए बिराणी।

छाप- *रावण मार राम घर आए, घर-घर होत बधाई।*
माता कौशल्या करत आरती, तो राज विभीषण पाई,
पिया तुने एक न मानी,
जानकी हर लाए बिराणी।

- मंदोदरी अपने पति रावण से कह रही है कि- पिया सुनो! आपको किसने ऐसी बुद्धि दी कि पराई सीता का हरण कर ले आए? वे दोनों तपस्वी दो भाई हैं, तूने मेरा कहा एक न माना।

रावण मंदोदरी से कहता है कि- स्त्री जाति की बुद्धि बहुत कम होती है, तू उन तपस्वियों की प्रशंसा कर रही है। मैं दूर कहीं से भी उन्हें पकड़कर बुलाऊँगा। मंदोदरी कहती है- वे दोनों तपस्वी राम और लक्ष्मण दोनों भाई हैं, पिया तूने कहा एक न माना।

मंदोदरी कहती है- मेघनाथ के समान हमारा पुत्र है और कुम्भकरण के समान आपका भाई है। हमारी लंका सोने की बनी हुई है। इसके आसपास सात समुद्र और नौ खाइयाँ हैं, जो इसे सुरक्षा प्रदान करते हैं। हे पिया! आपने मेरी एक न मानी, पराई सीता को हर लाये।

हनुमान के समान राम का सेवक है और उनका छोटा भाई लक्ष्मण है। ये दोनों महाबली जलती आग में कूद पड़ेंगे। दोनों महाबलवान हैं, लंका के कोट और खाइयाँ उनके आगे कुछ काम न आयेंगी। हे पिया! आपने एक न माना।

राम ने लंका पर चढ़ाई की, कुटुम्ब और सेना सहित रावण को मारा और राम घर आये। घर-घर बधाई हो रही है, खुशियाँ मनाई जा रही हैं। माता कौशिल्या भगवान राम की आरती कर रही हैं। लंका का राज्य भगवान राम ने विभीषण को दिया। पिया! आपने एक न मानी और पराई जानकी का हरण कर ले आये।

होली गीत

टेक- *मचाई बृज में हरी होरी रचाई।*

चौक-1 *इत से हो आई सुगर राधिका*
उत से कृष्ण कन्हाई।
हिलमिल फाग रचियो फागण को,
तो सोभा बरणि न जाई, लालजी ने होरी मचाई,
बृज में हरि होरि रचाई।

चौक-2 *राधा सेन दियो सखियन को, झुण्ड झुण्ड उठ आई।*
लपट झपट गले श्याम सुन्दर के, तो पर्वत पकड़ बनाई।
लालजी ने होरी रचाई।
बृज में हरि होरी रचाई।

चौक-3 *छीन लीनी रे वाकि मोर मुरलिया, सिर चूनर ओढ़ाई।*
बिन्दी जो भाल नयन बिच कजरा।
तो नथ बेसर पेराई
कृष्णजी नार बणाई,
बृज में हरि होरी रचाई।

चौक-4 *कारे गई तेरि मोर मुरलिया, कां रे गई चतुराई,*
कां रे गया तेरा नन्द बाबाजी, तो कांहां जसोदा माई
लालजि ने लेवे छोड़ाई
बृज में हरि होरी रचाई।

छाप- *धन गोकल धन-धन बृन्दावन धन हो जसोदा माई।*
धन मयती नर सहया न स्वामी, तो मांगू ते बेऊ कर जोड़ी
सदा रंग रऊंगा तुमारी,
बृज में हरि होरी रचाई।

चौक-5 *तो घणा रे दिवस ना दही दुद खादा, तुम बिन चोर न कोई*
लेत कसर सब दिन की चुकाऊँ
हे तुम बिन चोर न कोई ददी मेरो माखन खाई
बृज में हरि होरी रचाई।

छाप- *धन गोकल धन-धन बिन्द्राबन, धन हो जसोदा माई,*
धन मयता नरसइया नू स्वामी

चौक-6 *बाजत ताल मिरदंग झांजर डफ मर्जुग धुन न्यारी।*
चवां रे चवां चंदन आरो पिया, तो रंग का उड़त फवारा,
मानो रे जैसे बादल छाई, बृज में हरि होरी मचाई।

- ब्रज में श्रीकृष्ण ने होली रचाई और धूम मचा दी। इधर से राधिका आई और उधर से कृष्ण आये। दोनों ने मिलकर होली का फाग रचा (फाल्गुन मास का फाग रचा) तो उस शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता। लालजी (श्रीकृष्ण) ने होली रचाई।

राधा ने सखियों को आँखों से इशारा किया तो होली खेलने के लिए सखियाँ उठकर झुण्ड के झुण्ड आ गईं। श्रीकृष्ण के गले लिपट गईं और पर्वत के समान कसकर मजबूती से पकड़ा। श्रीकृष्ण ने होली रचाई।

राधिका और सखियों ने मुनकी, मुरली और सिर का मोर मुकुट छीन

लिया और उनके सिर पर चूनरी ओढ़ा दी। ललाट पर बिन्दी और नयनों के बीच काजल लगाकर नाक में नथ पहना दी और श्रीकृष्ण को औरत बना दिया।

फिर गोपियाँ कृष्ण से पूछती हैं कि कहाँ गया तुम्हारा मोर मुकुट और मुरली ? तेरे नंदबाबा और जसोदा माता कहाँ गये ? वे आकर आपको छुड़ा लें।

गोकुल धन्य है। वृन्दावन धन्य-धन्य है। यशोदा माता धन्य है।

गोकुल और वृन्दावन धन्य हैं। यशोदा माता धन्य है। नरसिंह मेहता के स्वामी श्रीकृष्ण धन्य हैं। मैं दोनों हाथ जोड़कर वर माँगूँ कि आप सदैव साथ रहें। हरि ने ब्रज में होली रचाई।

आपने बहुत दिनों तक दूध-दही चुराकर खाया। आपके अलावा कोई दूसरा चोर नहीं है। आज सब दिन की कसर निकाल लेंगे। मेरा दही और माखन खूब खाया है।

गोकुल, वृन्दावन, यशोदा माता और नरसिंह मेहता के स्वामी श्रीकृष्ण धन्य हों।

मृदंग ताल, झाँझ, डफ बज रही है। मर्जुन की धुन का क्या कहना, उसकी धुन निराली ही है। प्रत्येक चौक में चंदन आरोपित किए हैं और फव्वारों से रंग की फुहारें उड़ रही हैं, मानो जैसे बादल छाये हुए हों। ब्रज में हरि ने होली रचाई है।

होली गीत

टेक- *मुरारी झपटियो मेरो चीर मुरारी।*

चौक-1 *राती घांगर रंग सिर पर झपटी वैसिया वरणी साड़ी।*
कच्चे पक्के डोर रेसम के हो तोड़े
तो झड़गइ कोर किनारी, देखो रे अनोखा खिलाड़ी,
झपटियो मेरो चीर मुरारी।

चौक-2 *सात सखी मिल गई जमना पे*
वहाँ बैठे कृष्ण मुरारी,
घर मेरा दुर घांगर सिर भारी, तो में नाजुग पणियारी
देखो रे अनोखा खिलाड़ी, झपटियो मेरो चीर मुरारी।

चौक-3 *कुएं पे जाऊँ तो रे किच मचत है,*
जमना बेहती है गेहरी।
गोकुल जाऊँ तो रंग से भींजूं
तो अण साँवरा से मैं हारी, देखो रे अनोखा खिलाड़ी,
झपटियो मेरो चीर मुरारी।

चौक-4 *आगल सुणत मोरि बगल सुणत हैं,*
सासू सुणेंगा देगि गाली,
पिउजी सुणेंगा तो पकड़ बुलावे, तो बात भई बड़ि भारी,
देखो रे अनोखा खिलाड़ी, झपटियो मेरो चीर मुरारी।

छाप- *बाई पड़ोसण अरज करत है,*
विनती कर-कर हारी।
ऐसी सिख काऊ को नहिं देना।
तो चन्द्रसखी बलिहारी,
देखो रे अनोखा खिलाड़ी,
झपटियो मेरो चीर मुरारी।

- गोपी कहती है कि- श्रीकृष्ण ने मेरा चीर छपटकर छीन लिया। लाल मटकी मेरे सिर पर और वैसे ही रंग की साड़ी थी, उस साड़ी में कच्चे-पक्के रेशम के धागे थे, वे तोड़ दिये। धागे टूटने से साड़ी की कोर (बार्डर) निकलकर अलग हो गई। देखो रे! अनोखे खिलाड़ी को, मेरा चीर झपट लिया।

मैं सखियों के साथ यमुना पर पहुँची, वहाँ श्रीकृष्ण मिल गये। मेरे

सिर पर भारी मटकी, मेरा घर दूर है और मैं कोमल (नाजुक) पणिहारी हूँ। मुझे रोको मत, मटकी का वजन लग रहा है। दूर जाना है और मैं नाजुक हूँ, फिर भी कृष्ण न माने और मेरी चीर (साड़ी) छीन ली।

गोपी कहती है कि कुएँ पर जाऊँ तो कीचड़ मचता है अर्थात् कुएँ पर पानी से भिगो देते हैं। यमुना पर जाती हूँ तो यमुना गहरी बहती हैं अर्थात् वहाँ भी मुझे भिगो देते हैं। गोकुल में जाऊँ तो रंग से भीगूँ (मुझे श्रीकृष्ण रंग से सराबोर कर देते हैं)। मैं इस साँवरे श्रीकृष्ण से हार गई। इस अनोखे खिलाड़ी से हार गई। मेरी चीर झपट लिया।

एक गोपी कहती है- मेरे अगल-बगल के (आसपास रहने वाले) और मेरी सास सुनेगी तो मुझे गाली देगी। मेरे पति सुनेंगे तो बड़ी भारी बात हो जायेगी (बखेड़ा हो जायेगा)। मुझे पकड़कर बुलवायेंगे। देखो! इस अनोखे खिलाड़ी को मेरी चीर छीन लिया।

पड़ोस की बाई से कहती है कि मैं विनती कर-कर हार गई कि ऐसी सीख किसी को न देना (पराई स्त्री के चीर को कोई न झपटे), इस अनोखे खिलाड़ी कृष्ण को देखो, मेरी चीर झपट लिया।

होली गीत

टेक- *हो साँवरा मती मारो पिचकारी*

चौक-1 *मति मारो रे मोहे जात में रयणा, में पर घर की हूँ नारी।*
हमको रे लजा तुम कोरे ऐसा।
तो मुख से देऊँगी गाली, फजीता होयगा तुम्हारा,
साँवरा मति मारो पिचकारी।

चौक-2 *ऐसी रे होस होत हइयाँ में, फिर परणों तुम नारी।*
जाय कहूँगी जसोदा माय को,

हजुवन में हुँ कुँवारी ढूढो तो वर माता हमारी,
साँवरा मति मारो पिचकारी।

चौक-3 *पर नारी नारे पंलव पकड़ों ऐसी हे चाल तुम्हारी।*
माता पिता ना रे व्रत भयो छे
तो राजा कन्स हों भय भारी सुणेगा तो होय विस्तारी।
साँवरा मति मारो पिचकारी

छाप- *धन गोकल धन-धन विन्द्रावन धन हों जसोदा माई।*
धन मयता नरसइया नु स्वामी।
तो मांगु ते बेड कर जोड़ी सदा संग रहूँगा तुम्हारी।
साँवरा मति मारो पिचकारी।

- हे साँवरे श्रीकृष्ण! मुझ पर पिचकारी से रंग मत छींटो। हे साँवरे! मुझ पर पिचकारी से रंग न डालो। मुझे अपनी जाति में रहना है। मैं पराये घर की स्त्री हूँ। आप ऐसा करेंगे अर्थात् रंग डालेंगे तो हमें लज्जा आयेगी, अगर आप रंग डालेंगे तो मैं अपने मुँह से गाली दूँगी और आपके फजीते हो जायेंगे। हे साँवरे! पिचकारी न मारो।

एक गोपी कहती है कि- अगर आपको इतना शौक है तो तुम ब्याह कर लो। मैं यशोदा माता से जाकर कहूँगी, अभी तक मैं कुँवारी हूँ मेरे लिए वर ढूँढ़ो। हे साँवरे! पिचकारी न मारो।

एक नारी कहती है कि आप एक पराई नारी का पल्ला पकड़ना चाहते हैं, ऐसी चाल दिखाई देती है। राजा कंस का भय नहीं लगता, सुनोगे तो होश उड़ जायेंगे। हे साँवरे! पिचकारी न मारो।

गोकुल, वृन्दावन और यशोदा माता धन्य हो। नरसिंह मेहता के स्वामी श्रीकृष्ण धन्य हो। दोनों हाथ जोड़कर वरदान माँगती हूँ कि सदा आपके साथ रहूँ।

होली गीत

टेक– *मुरारी जाण दो तुम से ना खेलां होरी।*

चौक–1 *होरी की धूम मचाई हो साँवलिया खेल रहे बल जोरी।*
कच्चे पक्के डोर रेसम के हो तोड़े।
तो झड़ गई कोर किनारी, लालजी ने बयाँ मरोड़ी।
जान दो तुमसे ना खेलां होरी।

चौक–2 *ददी बेचने चली है गुवालन सिर पर दही केरी गोली।*
घर–घर कहती तुम लेवो रे दहियाँ तो मटकी में आन बसोई,
लालजी ने घांघर ढोली।
जाण दो तुमसे ना खेलां होली।

चौक–3 *पांय न बेऊ पायल सोहे, झालर करे झनकोरी।*
गोरी–गोरी बईयाँ हरी–हरी चूड़ियाँ।
तो रंगीन रंगिया हाथ लालजी ने मेंदी विकोरी।
जाण दो तुम से ना खेलां होली।

चौक–4 *खेलत गेंद गिरी है जमुना में तुने मेंरि गेंद चुराई।*
न हाकत हाथ ढूंढत आंगियाँ में।
एक गइ दूजी पाई, लालजी ने चोरी लगाई,
जान दो तुमसे ना खेलां होली

छाप– *धन गोकल धन–धन बिन्द्रावन, धन हो जसोदा माई।*
धन मयता नरसइया नू स्वामी,
तो मांगु ते बेउ कर जोड़ी, सदा संग रहूँगा तुम्हारी,
जाण दो तुमसे ना खेलां होली।

– हे श्रीकृष्ण! मुझे जाने दो, आपके साथ होली नहीं खेलना है। अरे साँवरे! होली की धूम मचाई है और जबरन करके (बरबस) मेरे साथ होली खेलना चाहते हो। मेरी साड़ी के कच्चे–पक्के धागे तोड़ दिये और किनारी

निकलकर गिर गई और श्रीकृष्ण ने मेरी बाँह मरोड़ दी। मुझे जाने दो, आपके साथ होली नहीं खेलना है।

ग्वालिन दही की मटकी सिर पर उठाकर दही बेचने चली और घर–घर फिरकर कहती है– दही ले लो। तो श्रीकृष्ण ने मटकी पकड़कर दही ढोल दिया। और होली खेलना चाहते हैं। गोपी कहती है कि– मुझे जाने दो, आपके साथ होली नहीं खेलना है।

दोनों पैरों में पायजेब शोभायमान हैं और पायजेब की झालर की झन्कार निकल रही है। गोरी–गोरी कलाइयों में हरी–हरी चूड़ियाँ शोभित हैं। और मेरे हाथों में मेहंदी लगी हुई है। लालजी (श्रीकृष्ण) ने मेरी मेहंदी हाथों पर लगी हुई बिखेर दी। मुझे जाने दो आपके साथ होली नहीं खेलना है।

श्रीकृष्ण गेंद खेल रहे थे। गेंद यमुना में गिर पड़ी और मेरे सिर चोरी लगाते हैं कि तूने मेरी गेंद चुरा ली और अंगिया में हाथ डालकर खोजते हैं। एक गेंद गई दूसरी मिल गई, कृष्ण ने मुझ पर चोरी डाली। जाने दो आपके साथ होली नहीं खेलना है।

गोकुल, वृन्दावन और यशोदा माता धन्य हो, नरसिंह मेहता के स्वामी सांवळिया धन्य हो। दोनों हाथ जोड़कर वर माँगती हूँ कि सदा आपके साथ रहूँगी। जाने दो आपके साथ होली नहीं खेलना है।

फाग गीत

नणदल ने भोजाई दोइ, भेलो पाणी लावे रे॥
नणदल चाली सासरे, भोजाई रोवे रे, जोड़ी बिखरगी॥
हाँ रे जोड़ी बिखरगी, नणदोई थारी वेल वधजो रे,
जोड़ी बिखरगी॥

– ननद और भाभी दोनों साथ में पानी लाती हैं। ननद ससुराल चली तो दोनों की जोड़ी टूट गई। जोड़ी टूटी, किन्तु भाभी ननदोई को आशीर्वाद देती है कि आपकी वंश वृद्धि हो।

फाग गीत

मोगरियां री टोपली बजारां माही चाली रे॥
वाला थारी आंगली झन्नाटे चढ़गी रे,
ढुलगी मोगरियां।
हारे ढुलगी मोगरियां, वालाजी थोड़ी भेली करजो रे,
ढुलगी मोगरियां।

– प्रेयसी सेंगरी की टोकरी लेकर बाजार में बेचने के लिए निकली। रास्ते में प्रेमी ने टोकरी को पकड़ा तो टोकरी सिर से गिर गई और सेंगरियाँ बिखर गईं। प्रेयसी प्रेमी से कहती है कि सेंगरियाँ एकत्रित करने में मेरा सहयोग करो।

एक तो कागदियो लिखने कदली वन में मेलो रे॥
कदली वन रा हातीड़ा विलाड़े लइजो रे, कँवर परणीजे॥
हाँ रे कँवर परणीजे, हाती रा होदे तोरण वांदें रे,
कँवर परणीजे॥

– एक पत्र लिखकर कजली वन में भेजो और कजली वन के हाथी बिलाड़ा (राजस्थान) बुलाओ। उस हाथी पर दीवान साहब बिलाड़ा के कुँवर अपने ब्याह में बैठकर तोरण का स्पर्श करेंगे।

फाग गीत

ढोल रो धमेड़ो में तो रोटा करती हुणियो रे॥
घुघरिया रो रणको में तो मोलो हुणियो रे, महिनो फागण रो।
हाँ रे महिनो फागण रो, फागण रो महिनो एलो जाये रे,
महिनो फागण रो॥

– फाग की रसिक महिला कहती है कि ढोल की आवाज तो मैंने रोटी बनाते हुए सुनी, किन्तु नाचने वालों के पैरों के घुँघरुओं की आवाज बहुत ही कम सुनाई दी जिससे सुनने में मजा नहीं आया। फाल्गुन का महीना यों ही

बीत रहा है अर्थात् फाग का आनन्द नहीं आ रहा है। नाचने वालों के पैरों के घुँघरुओं की आवाज सुनाई नहीं देती है।

फाग गीत

राम ने लछमण री जोड़ दोई अगियाधारी रे॥
सीताजी रा वेर में लंका ने बाली रे,
रावण मारियो॥
हाँ रे रावण मारियो, राज तो विभीषण करियो रे,
रावण मारियो॥

– राम-लक्ष्मण दोनों की जोड़ आज्ञाकारी है, सीताजी के बैर में रावण को मारा और राज्य विभीषण ने किया।

फाग गीत

नेणा में काजलियो छोरी, लालाड़ी में टीकी रे॥
भाएलो परदेस बैठो, लिख दो चिठी रे, वेगो आवे रे॥
हाँ रे वेगो आवे रे, फागण रो मीनो एलो जाए रे,
मीनो फागण रो।

– प्रेयसी के नयनों में काजल लगा है और ललाट पर टीकी लगी है। वह कहती है- प्रेमी परदेश में बैठा है, पत्र लिख दो, जल्दी आये, क्योंकि फाल्गुन मास व्यर्थ ही बीत रहा है।

फाग गीत

जसोदा पूछेरे म्हारा कानजी ने देख्या ओ॥
बरसाणा वजार माहे दड़िया रमर्‌या ओ,
चटियो हाथ में॥
हाँ रे चटियो हात में गोपियाँ गूलाल वारे ओ,
चटियो हाते में॥

– माता यशोदा किसी से पूछ रही है कि- मेरे कृष्ण कन्हैया को देखा

है ? उत्तर मिलता है कि- कन्हैया बरसाणा के बाजार में गेंद खेल रहा है और डंडा हाथ में है तथा गोपियाँ कन्हैया पर गुलाल की वर्षा कर रही हैं।

फाग गीत

राते तो हाऊजी थारो जायो बारे रेग्यो ओ।
राते तो हाऊजी थारो जायो बारे रेग्यो ओ।
पाड़ोसण री भीत माथे पगल्या मंडिया ओ,
वरजो जाया ने,
हाँ रे वरजो जाया ने, लाड़कियो मोमाळ लाजे ओ,
वरजो जाया ने।

- एक बहू अपनी सास से अपने पति की शिकायत शिष्टता के साथ करती है कि- सासूजी! रात्रि में आपके पुत्र घर नहीं आए। सुबह मैंने उनके पदचिह्न पड़ोसन की दीवार पर मढ़े हुए देखे, आप उन्हें रोकिए, क्योंकि प्रतिष्ठित ममसाल भी लज्जा महसूस करेगा, उनकी प्रतिष्ठा भी जायेगी।

फाग गीत

नाचण तो नाचण चाली ढोल गेरो वाजे रे।
होळी आगे गेरिया झरावर नाचे रे, हालो देखाने।
हाँ रे हालो देखाने हवजी वालो जायो नाचे रे, हालो देखाने।

- एक पत्नी कहती है कि- नाचने वाली नाचने को चली, ढोल अच्छा बज रहा है, देखने को चलो। मेरा पति भी नाच रहा है।

फाग गीत

झांज री झणकार में तो रोटा करती हुणी रे।
घूघरिया रो रणको में तो मोळो हुणियो रे,
छोरो थाकेलो।
हाँ रे छोरो थाकेलो, मेथी रो हंदाणो होदो रे
छोरो थाकेलो।

- एक महिला रोटियाँ बनाते हुए फाग वालों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करती है कि- झाँझ की झँकार तो मुझे अच्छे सुनाई दे रही है, किन्तु नाचने वाले के घुँघरुओं की आवाज से प्रतीत होता है कि वह कमजोर है। उसके लिए मेथी दाने के लड्डू बनाओ ताकि उसके पैरों में ताकत आये।

फाग गीत

एक तो खाती रा बेटा, म्हारो काम करजे रे।
भाएलो परणीजे तोरण हकड़ो घड़े जे रे।
लीला डांडा रो।
हाँ रे लीला डांडा रो मोर ने पपीहा वाळो रे,
लीला डांडा रो।

- एक लड़की सुतार के पुत्र से आग्रह करती है कि- एक काम मेरा करना, मेरा प्रेमी ब्याह करने जा रहा है, उसके लिये हरी लकड़ी का छोटा तोरण घड़ना और उस पर मोर-पपीहे घड़कर लगाना।

फाग गीत

म्हू तो म्हारा घर में हूती, कांकरिया कुण मारे रे।
घर-घर रा कांकरिया माहे घायल वेगी यो,
परी परणाओ।
हाँ रे परी परणावो, देस ने परदेस वचमें यो,
परी परणाओ।

- एक नवयौवना कहती है कि मैं तो अपने घर में सोई हुई हूँ। कंकड़ कौन मार रहा है ? पास के घरों के लड़कों से मैं घायल हो गई हूँ, मेरा ब्याह देश-परदेश में कहीं भी कर दो।

फाग गीत

चन्दरमा री चांदणी तारा रो तेज मोळो रे।
बालमणा रो भाएलो परदेस नीकाळियो,

मूंडे मळियो नी।
हाँ रे मूंडे मळियो नी, जातोड़ा री पीठ देखी यो,
मूंडे मळियो नी।

– एक युवती कहती है कि– चन्द्रमा की चाँदनी और तारों का प्रकाश मंद है। मेरे बचपन का प्रेमी बिना मिले परदेश चला गया। मुझसे मिला भी नहीं, जाते हुए उसकी पीठ देखी। इससे वह क्षुब्ध है।

फाग गीत

बदिंल्या घड़इदो देवर, घर में थारो सारो रे॥
दाम तो परण्या रा लाग्या, नाव थारो रे कि देवर म्हारो रे॥
कि देवर म्हारो रे, हरिया रूमाल वाळो रे, कि देवर म्हारो रे॥

– एक भाभी लाड़ से देवर से कहती है कि– घर में मुझे तेरा सहारा है, मुझे बिन्दी घड़वा दें। ब्याह में पैसे तो मेरे पति के लगे, किन्तु नाम तेरा है। मेरा देवर हरे रूमाल वाला है। (इसका दूसरा अर्थ भी लगाया जा सकता है।)

फाग गीत

मारा आँगना मा भाँगड़ी नु झाड़
ढोला मारुजी पीवे रे तम्बाकू।
सासरा मा मारी सासुरी नु दख
पीयरा मा आऊ मारी आई नु लाड़
मारी आई जी नु लाड़।
ढोला मारुजी पीवे रे तम्बाकू
म्हारा आँगना मा ..... ।
सासरा मा जाऊँ मारा सुसरा नु दख
ढोला मारुजी पीवे रे तम्बाकू ..... ।
पीयरा मा आऊँ बाजी नु लाड़
ढोला मारुजी .....

सासरा मा जाऊँ मारी ननदी नु दख
पीयरा मा आऊँ मारी भाभी मोल्या
ढोला मारुजी ..... ।
सासरा मा जाई मारा देवर नु दख
पीयरा मा आवी मारा भाइ नु लाड़
ढोला मारुजी पीवे रे तम्बाकू
मारा आँगना मा भाँगड़ी नु झाड़।
ढोला मारुजी पीवे रे तम्बाकू

– पत्नी कहती है कि उसके आँगन में भाँग का पेड़ है। उसके पति भाँग और तम्बाकू पी-पीकर मस्त रहते हैं। अब मैं क्या करूँ? ससुराल में मेरी सासु दु:ख देती है और मायके में माँ लाड़-प्यार! मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ?

ससुराल में जाती हूँ तो मेरे ससुर दु:ख देते हैं और मायके में बाप का प्यार! मेरे पति तो भाँग और तम्बाकू में मस्त रहते हैं। ससुराल मैं जाती हूँ तो मुझे मेरी ननद की ओर से दु:ख है और मायके में भाभी का व्यवहार ठीक नहीं, मैं क्या करूँ? ससुराल में मुझे मेरे देवर की ओर से दु:ख है और मायके में भाई का प्यार! मैं क्या करूँ? मुझे कहाँ जाना चाहिए?

लोक गीत

सोरी तारे घड़ुले छे, घुँघर माल रेऽऽऽ।
सोरी तारे घड़ुले छे, घुँघर माल रेऽऽऽ।
सोरा तारे पुश्यानु काँई काम रेऽऽऽ।
सोरा मारे पुश्यानु बड़ी मोआरेऽऽऽ।
सोरी तारे घड़ुले छे, घुँघर माल रेऽऽऽ।
सोरी तारे घड़ुले छे .....।
सोरी तमे परण्या के कुँवारा रेऽऽऽ।
सोरी तमे परण्या के कुँवारा रेऽऽऽ।
धेर मा मारा बापा ने जाई केथु रेऽऽऽ।
बापा हमुँ परण्या के कुँवारा रेऽऽऽ।
बापा हमुँ परण्या के .....।
सोरी तारे घड़ुले छे, घुँघर माल रेऽऽऽ।
सोरी तारे घड़ुले छे .....।
बेटी तमे नानां थां परण्याया रेऽऽऽ।
बेटी तमे नानां थां परण्याया रेऽऽ।
सोरी तारे घड़ुले छे, घुँघर माल रेऽऽऽ।
सोरी तारे घड़ुले छे, घुँघर माल रेऽऽऽ।

– छोरी! तूने अपने घड़े को घुँघरू बाँधकर सजा रखा है। छोरा! तेरे इस प्रकार पूछने का क्या मतलब है? छोरी! मुझे इस प्रकार तुझे पूछने से बहुत मजा आता है। छोरी! तू शादीशुदा है कि कुँवारी है? छोरा! घर जाकर मैं अपने बापा से पूछूँगी कि मैं शादीशुदा हूँ कि कुँवारी? छोरी! तूने अपने घड़े को घुँघरू बाँधकर सजा रखा है। बेटी! तू छोटी थी, तभी मैंने तेरी शादी कर दी थी। छोरी! तूने अपने घड़े को घुँघरू बाँधकर सजा रखा है।

लोक गीत

सोरी काँकड़ आम्बे मोरियो रेऽऽऽ
हो राज आम्बे झरे मोरियो रेऽऽऽ।
सोरा काँकड़ आम्बे मोरिया रेऽऽऽ
हो राज आम्बे झरे मोरया रेऽऽऽ।
सोरा तमे हूँ भाली न मोहवायो हो राज
हो राज आम्बे झरे मोरया रेऽऽऽ।
तारो बोर ड़ो भाली न मोहवायो
हो राज आम्बो झरे मोरयो रेऽऽऽ।
सोरी हूँ भाली न मोहवायो हो राज
हो राज आम्बो झरयो मोरया रेऽऽऽ।
तारो पागुलो भाली न मोहवाया
हो राज आम्बो झरे मोरया रेऽऽऽ।
सोरी काँकड़ आम्बे मोरियो रेऽऽऽ
हो राज आम्बे झरे मोरियो रेऽऽऽ।

– छोरी! बंजर भूमि पर खड़े आम वृक्ष पर मंजरियाँ ढेर सारी आई हैं। छोरा! तू ने मुझसे पूछा है, पर तेरे देखने का तरीका मुझे ऐसा-वैसा लग रहा है। तू मुझ पर मोहित क्यों हो गया है? ऐसा तूने मुझमें क्या देखा है? तेरे सिर बोर और अन्य गहने देखकर मैं मोहित हो गया हूँ। छोरी! तू क्या देखकर मुझ पर मोहित हो गयी है? आम पर मंजरियाँ बहुत आई हैं। छोरा! तेरे सिर पर

साफा देखकर मैं तुझ पर मोहित हो गयी हूँ। छोरा! बंजर भूमि पर खड़े आम पर मंजरियाँ ढेर सारी आयी हैं।

लोक गीत

बागा मा आवी उतरयु
साजनीकु छोरी छाने बाने
जोई लेसु रे ऽऽऽ।
हातमा लई लेसु लाकेड़ी रे छोरी
गाय ना बाने जोई लेसु रे ऽऽऽ।
जोई लेसु रे, मन मोई लेसु रे ऽऽऽ
दोई दल लड़ानी बाल्यो कर लेसु रे ऽऽऽ।
बागा मा आवी उतरयू
साजनीकु छोरी छाने बाने
जोई लेसु रे ऽऽऽ।
काख्यां मा लइ लेसु टोपे लू
छोरी छांणा ने बाने जोई लेसु रे
जोई लेसु रे मन मोई लेसु रे ऽऽऽ।
बागा मा आवी उतरयू
साजनीकु छोरी छाने बाने
जोई लेसु रे ऽऽऽ।
हाथा मा लई लेसु दाँतेड़,
छोरी सारा ना बाने
जोई लेसु रे ऽऽऽ
जोई लेसु रे ऽऽऽ मन मोई लेसु रे ऽऽऽ
बागा मा आवी उतरयू
साजनी कु छोरी ..... ।

– मैं बगीचे में ठहरा हूँ। सखी! किस बहाने से मैं साजन से मिलूँ?

तू मुझे बता, देख लूँगी। छोरी! हाथ में तू लकड़ी ले लेना और गाय चराने के बहाने से मिल लेना। सखी! ठीक है। मैं मिल लूँगी और उसका मन मोह लूँगी। इस तरह दोनों मिलकर हम दिल की बातें कर लेंगे। मैं देख लूँगी। सखी! बगल में टोपला रख लूँगी और कंडे बीनने के बहाने से मैं उससे मिल लूँगी। मैं देख लूँगी। मैं बगीचे में उतरा हूँ। सखी! मैं अपने हाथ में दाँतेड़ा ले लूँगी और चारा काटने के बहाने से मैं उससे मिल लूँगी और इस तरह मैं उसका मन मोह लूँगी।

लोक गीत

मारो रंगीलो सामलियोऽऽऽ हाँ गावलड़ी सरावे रेऽऽऽ
मारो रंगीलो ..... ।
माथा तो मुगट वाला बहु सोभे राज
कानुड़ा मा कुन्दल झलके न मन मोहे राज
गला मा हीरलावालू हार बहु सोभे राज
मुख पे मोरली बागने मन मोहे राज
मारो रंगीलो सामलियोऽऽऽ हाँ गावलड़ी सरावे रेऽऽऽ।
मारो रंगीलो ..... ।
खाँदे तो कामली वाला ने बहु सोभे राज
केड़ कन्दोरो लटके ने मन मोहे राज
पगे तो घुँगरू लटकेनो मन मोहे राज
मारो रंगीलो सामलियोऽऽऽ हाँ, गावलड़ी सरावे रेऽऽऽ
मारो रंगीलो ..... ।

– मेरा मस्त प्रियतम गायें चराता है। उसके सिर पर मुकुट शोभित हो रहा है। उसके कानों में कुण्डल चमक रहे हैं और गले में हीरों का हार बहुत ही शोभायमान हो रहा है। अपने मुँह पर बाँसुरी रखकर वह बजाता रहता है और मन को लुभाता रहता है। उसके कंधों पर कामली शोभित है और कमर में कन्दौरा लटक रहा है, पैरों में घुँघरू। ये सभी मेरे मन को लुभा रहे हैं।

लोक गीत

ये वाहली वाजे, ये आभी तोलाए,
हरियो डंगर गहरो बल्यो।
ये वाहली बाजे, ये आभी तोलाए,
हरियो डूंगर गहरो वल्यो।
मोर-पपीहा बोलि रहया, मेघ गगड़ी रहया,
सुपड़ा एवड़ो बलावो ने चोखा अतरी विजली।
रे काढ्यो रे बलाओ, हइ रहि विजली।
खांदे लेधो बलावो, कांखे लेधि विजली,
हातेम् लेधि वाहली, खांद पर लेधि कुराड़ी,
काइ रे मेंघला काहाँ वरसजे?
पाप नी जमी वरसजे, तिं पाप धोवाए।
काइ रे मेंघला धरमनी जमि वरसि निहिं जाण्यो।

- वर्षा आगमन के समय प्रकृति का रूप किस प्रकार दिखाई देता है, उसका वर्णन गीत में बताया है-

सुरभि हवा में पानी की खुशबू वाली भीनी सुगन्ध आ रही है। ये जलभरी हवाएँ (मानसून) आ रही हैं। हरा जंगल और गहरा गया है। मोर और पपीहे बोल रहे हैं। बादल गर्जना कर रहे हैं। सूप के समान बादल और उसमें चावल के समान बहुत छोटी बिजली चमक रही है। इन्द्रदेव ने कन्धे पर बादल लिया, काँख में बिजली ली, हाथ में वायु ली, कन्धे पर कुल्हाड़ी ली है। मेघ कहाँ बरसेंगे? पाप की भूमि पर बरसें, जिससे पाप धुल जायेगा।

हे मेघ! क्या धर्म-भूमि में बरसने नहीं जाना?

वर्षा आने के संकेत इस प्रकार मानते हैं-

(1) खेड़िया चीड़ा बोलता है तो वर्षा की संभावना रहती है।

(2) कोयल बोलती है तो वर्षा की संभावना रहती है।

(3) चूही ज्यादा आवाज करती है तो ज्यादा वर्षा होती है।

(4) टुचक्यु पक्षी बोलता है तो बादल होते हैं और पानी बरसता है। यह पक्षी मेघ राजा का जवाँई कहलाता है।

(5) बोपियो चिड़िया- जुपोरे-जुपो करके आवाज करती है तो पानी आता है (खेत जल्दी जोतो पानी आने वाला है)।

(6) बोपियो खर-खर करके बोलती है तो पानी बरसना बन्द होने का संदेश मानते हैं। अगर खेती तैयार नहीं करते हैं तो चिड़िया किसानों को गालियाँ देती हैं।

(7) देतेड़ा पक्षी- सुखे-सुखे देतेड़-देतेडू बोलता है तो वर्षा होती है।

(8) लेचका पक्षी- लेचका-लेचका बोलता है, कुकु-कुकु भी बोलता है तो वर्षा होती है एवं अच्छी फसल पकने के बाद मकु-पाक्यु, मकु-पाक्यु करके बोलता है।

लोकगीत

ऊँचो खयर्यो खिरपालो वो, झिरे-मिरे-झिरे-मिरे।
ऊँचो खयर्यो खिरपालो वो, झिरे-मिरे-झिरे-मिरे।
आयणी के देसूँ परदेसी वो, झिरे-मिरे-झिरे-मिरे।
आयणी के देसूँ परदेसी वो, झिरे-मिरे-झिरे-मिरे।
किसन भाइ आणो लेणे जासे वो, झिरे-मिरे-झिरे-मिरे।
किसन भाइ आणो लेणे जासे वो, झिरे-मिरे-झिरे-मिरे।
उटड़े वसाड़िन् लावसे वो, झिरे-मिरे-झिरे-मिरे।
उटड़े वसाड़िन् लावेस वो, झिरे-मिरे-झिरे-मिरे।
नेंदी-नेंदी व मारा नखल्या गुया, हुजु निहिं आयो मारो भाइ।
नेंदी-नेंदी व मारा नखल्या गुया, हुजु निहिं आयो मारो भाइ।
ऊँचो खयर्यो खिरपालो वो, झिरे-मिरे-झिरे-मिरे।
ऊँचो खयर्यो खिरपालो वो, झिरे-मिरे-झिरे-मिरे।

– यह गीत फसल की निंदाई-गुड़ाई के समय गाया जाता है। खेर वृक्ष की छाल खुरदरी है, झिर-मिर पानी बरसे। समधिन को परदेस में देंगे। किशनभाई गौना लेने जायेगा। ऊँट पर बिठाकर लायेगा। निंदाई कर-करके मेरे नाखून घिस गये हैं, मेरा भाई नहीं आया।

लोक गीत

हातेम् आरस्यो पिपले व पाय मा झांजुर झलके व।
हातेम् आरस्यो पिपले व पाय मा झांजुर झलके व।
जाणे वाली पछि फिरे वो, जाणे वाली पछि फिरे वो।
सुबुन बुंद हात वा गुजरी, सुबुन बुंद हात वो गुजरी।
फिरि-फिरि नेंद वो, खेतेम् रहिग्यु खड़ कमली भोजाइ।
कहयुं मिं खेतेम् रहिग्यु खड़ वो कमली भोजाइ।
कहयुं मिं खेतेम् रहिग्यु खड़ वो रूमा भोजाइ।
फिरि-फिरि नेंद वो, खेतेम् रहिग्यु खड़ वा राली भोजाई।

– हाथ में दर्पण चमक रहा है, पैर में पायजेब चमक रहे हैं। ओ जाने वाली! पीछे मुड़, जाने वाली पीछे मुड़। सभी के हाथों में गूजरी हैं। फिर-फिर कर घास उखाड़, खेत में खरपतवार रह गया है वो कमली भावज। फिर-फिर कर घास उखाड़, खेत में खरपतवार रह गया है वो रूमा भावज। फिर-फिर कर घास उखाड़, खेत में खरपतवार रह गया है वो राली भावज। इस प्रकार से निंदाई कर रहे लोगों के नाम ले-लेकर गीत आगे बढ़ता जाता है।

वर्षा का गीत

ऊँडा कुवा मा पलोक पाणी, काइ करि भरूँ रे मेघ बाबा,
ढूडी वो-ढूडी वो।
ऊँडा कुवा मा पलोक पाणी, काइ करि भरूँ रे मेघ बाबा,
ढूडी वो-ढूडी वो।

खुदरा-खालया सुकाइ गुया, लावर्‌या तितर्‌या तीस्या मरे,
गाय गोधा भूखा मरे, वरस रे मेघ बाबा,
ढूडी वो-ढूडी वो।

सुपड़ा अतरोक बलावो, चोखा अतरी विजली,
वरस रे मेघ बाबा, ढूडी वो-ढूडी वो।
सुपड़ा अतरोक बलावो, चोखा अतरी विजली,
वरस रे मेघ बाबा, ढूडी वो-ढूडी वो।

गाज ने गुरबो करि रहेगा, विजली हये भला-भल,
वरस रे मेघ बाबा, ढूडी वो-ढूडी वो।
गाज ने गुरबो करि रहयो, विजली हये भला-भल,
वरस रे मेघ बाबा, ढूडी वो-ढूडी वो।

खयड़े ने बयड़े रेल-छेल पाणी, कमली ना घर पर पाणीं निहिं,
वरस रे मेघ बाबा, ढूडी वो-ढूडी वो।
खयड़े ने बयड़े रेल-छेल पाणी, कमली ना घर पाणीं निहिं,
वरस रे मेघ बाबा, ढूडी वो-ढूडी वो।

– वर्षा नहीं होने से पानी का संकट हो जाता है तो वर्षा हेतु सभी लोग कामना करते हैं। सभी लोग रात्रि में प्रत्येक घर जाकर ढूडी गीत गाते हैं। गीत में कहा है-

कूप गहरा है उसमें पाव भर पानी है, किस प्रकार पानी भरूँ बादल बाबा? नाले सूख गये हैं, लावा व तीतर पक्षी प्यासे मर रहे हैं, गाय-बछड़े भूखे मर रहे हैं, मेघ (बादल) बाबा बरसो। सूप के समान छोटा बादल हो रहा है उसमें चावल के समान बिजली चमक रही है, हे बादल! बरसो। गर्जना हो रही है, बिजली खूब चमक रही है, हे मेघ! बरसो। छोटी पहाड़ियों व जंगल में पानी खूब बरस रहा है। कमली के घर पर पानी नहीं है, हे बादल! बरसो।

इस प्रकार प्रत्येक घर पर जाते हैं। गीत गाते समय किसी लड़के को बोपिया, लेचका, ढुचक्या व लड़कियों में से किसी को कोयल बनाते हैं। ये नामधारी पक्षी गीत के साथ उन पक्षियों की मधुर आवाज निकालते हैं। जिनके घर जाते हैं उस घर की महिला सूपड़े में पानी लेकर ढूडी वालों पर उछालती है। सभी घर से अनाज दिया जाता है।

प्रात: एकत्रित अनाज को पिसाते हैं और नदी-नाले के किनारे सभी जाकर मक्का के पान्ये बनाते हैं। एक लड़का हाथ में पान्या लेकर खड़ा रहता है और एक लड़का पानी में डूबता है। बाहर पान्या लिया हुआ लड़का उसके डूबते ही पान्या खाना प्रारम्भ करता है और जब तक वह पानी से बाहर न निकले तब तक पान्या खा जाता है, तो पानी आने का शुभ शगुन मानते हैं। अगर डूबने वाला लड़का पान्या खाने के पूर्व निकल आता है तो पानी देर से आता है- ऐसी मान्यता है। फिर सभी उपस्थित लोग दाल-पान्या खाते हैं।

वर्षा का गीत

खयड़ी न बयड़ी रेल-छेल पाणी, इड्ला ना घेर पर पाणी निहिं।
वारिस वो मेघ बाबा, ढुडी व ढुडी व॥
खाल-खोदर्या सुकाइग्या, लावर्या वितर्या विस्ला मरग्या।
वरिस वो मेंघ बाबा ढूडी व ढूडी व॥
चोखा अतरी विजली, सुपड़ा अतरो बुलावो।
गाजण्यों काहाँ मरीग्यो,
वरिस वो मेघ बाबा ढूडी व ढूडी व॥
टूटलास् खाटलाय पड़ी वो मांगती, पाणी दे वो पाणी दे।
नोण दे वा मीरी दे, कुयडू पान्यो काइ करि खाऊँ,
ढूडी व ढूडी व॥

- जब फसल बोने के बाद वर्षा रुक जाती है और फसलें सूखने लगती हैं तो लोग रात्रि में एकत्रित होकर ग्राम में निकलते हैं। प्रत्येक घर जाकर गीत गाकर अनाज, नमक, मिर्च माँगते हैं और दूसरे दिन एकत्रित

सामग्री से उज्ज्वणी मनाते हैं। उज्ज्वणी करने से वर्षा हो जाती है- यह विश्वास है। इसमें जो गीत गाया जाता है उसे ढूडी खेलना कहते हैं। प्रत्येक घर की महिला सुपड़े में पानी लेकर ढूडी वालों पर फेंकती है।

गीत में कहा गया है-

पहाड़-पहाड़ियों पर खूब वर्षा हो रही है, इडला के घर पानी नहीं है। हे बादल बाबा! बरस जा। नाले सूख गये, लावा-तीतर प्यासे मर रहे हैं। हे बादल! बरसो। बहुत छोटी बिजली चमक रही है, सूप के समान बादल हैं। हे गरजने वाले बादल! कहाँ मर गया? हे मेघ बाबा! बरसो।

माँगती के घर के सामने जाकर गीत में कहा गया है-

टूटी हुई खटिया पर माँगती पड़ी है, माँगती पानी दे। नमक दे और मिर्च दे, कोरी रोटी किस प्रकार खाऊँ?

रूखड़ी खोदणा

पिपर्यापाणी मा निहिं मिले आंबा, निहिं मिले आमली।
पिपर्यापाणी मा निहिं मिले आंबा, निहिं मिले आमली।
उरखड़े जीरो वावे रांडे, जीरो वावे रांडे।
दीतल्या भाइ काजे, पूछि निहि रांडे, झाजो करि देधो।
रेसमि भोजाइ काजे पूछि निहिं रांडे, झाजो करि देधो।

- पिपर्यापानी (जगह का नाम) में आम और इमली नहीं मिलती हैं। रांड ने घूरे पर जीरा बो दिया, दितल्या भाई को पूछा नहीं, धान बो दिया। रेशमी भोजाई को पूछा नहीं और धान बो दिया।

डोहा गीत

रमण्यो डोहो मारो रमण्यो रे लोल।
रमण्यो डोहो मारो रमण्यो रे लोल।
दुइ-दुइ जोड़ी मारा तागल्या रे लोल।

दुइ-दुइ जोड़ी मारा तागल्या रे लोल।
रमण्यो डोहो मारो रमण्यो रे लोल।
तागल्या पेहरिन बड़ी मोज रे लोल।
रमण्यो डोहो मारो रमण्यो रे लोल।
दुइ-दुइ जोड़ी मारा हार रे लोल।
रमण्यो डोहो मारो रमण्यो रे लोल।
हार पेहरिन बड़ि मोज रे लोल।
रमण्यो डोहो मारो रमण्यो रे लोल।
दुइ-दुइ जोड़ी मारा बाष्ट्या रे लोल।
दुइ-दुइ जोड़ी मारा बाष्ट्या रे लोल।
रमण्यो डोहो मारो रमण्यो रे लोल।
बाष्ट्या पेहरिन बड़ी मोज रे लोल।
रमण्यो डोहो मारो रमण्यो रे लोल।
दुइ दुइ जोड़ी मारा कड़ुल्या रे लोल।
दुइ दुइ जोड़ी मारा कड़ुल्या रे लोल।
रमण्यो डोहो मारो रमण्यो रे लोल।
कड़ुल्या पेहरिन बड़ि मोज रे लोल।
रमण्यो डोहो मारो रमण्यो रे लोल।

-दीपावली के अवसर पर गाया जाने वाला गीत है।

मेरा डोहा खेलने वाला है। मेरे दो-दो जोड़ी तागल्या हैं। तागल्या पहनकर बड़ी मौज है। दो-दो जोड़ी मेरे हार हैं। हार पहनकर बड़ी मौज है। दो-दो जोड़ी मेरे बावंठ्या हैं। बांवठ्या पहनकर बड़ी मौज है। दो-दो जोड़ी मेरे कड़ुल्या हैं। कड़ुल्या पहनकर बड़ी मौज है।

डोहा गीत

चार कुटड़ी ने चार दिवल्या, झग मलोजी।
दिवल्यो लगाड़ुं ती एकली वो नणद बाई।

दलनों दलों ती एकली वो नणद बाई।
पाणिलों भरों ती एकली वो नणद बाई।

- भाभी, ननद से कहती है कि कोठरी के चार खूँट में चार दीपक हैं। घर में दीया लगाऊँ, पानी भरने जाऊँ अकेली रहती हूँ, मेरे साथ में कोई नहीं है।

लोक गीत

नीलो सो नीलो काइ धुंधे राणी।
हुर्‌या नी नीलो पांख धुंधे राणी।
कालो चो कालो काइ धुंधे राणी।
कागला नी पांखे वो धुंधे राणी।
धवलो चो धवलो काइ धुंधे राणी।
बगल्या नी धवलो पांख धुंधे राणी।

- धुंधा रानी को सम्बोधित कर गीत है। प्रश्नोत्तर के रूप में इस गीत में कहा गया है कि- नीला-नीला क्या है? उत्तर है तोते के पंख। काला-काला क्या है? कौवे के पंख। सफेद-सफेद क्या है? बगुला के पंख।

डोहा गीत

डोहो मांड्यो कि दयणी, दिवल्यो मांगे तेल।
डोहो पान यातली, डोहो सुरभरयो रमसे।
डोहो तेल पर खेले ने।
डोहो घिंव पर खेले।
डोहो केरेल्यो रे लोल।

- दीपावली के बाद डोहा खेलते हैं। एक मिट्टी के कलश या मटकी में कई छेद कर देते हैं। उसके अन्दर घी या तेल भरकर एक दीपक रखते हैं, उसे डोहा कहते हैं।

एक लड़की डोहे को सिर पर रखती है साथ में लड़के-लड़कियाँ रहते हैं, ढोल बजाकर नाचते हैं और गीत गाते हैं। डोहे वाली पार्टी गाँव में प्रत्येक घर जाकर गीत गाती है, घर के लोग उनको अनाज देते हैं। उसकी गोठ (पार्टी) करते हैं। एक गाँव के लोग दूसरे गाँव में भी डोहा खेलने जाते हैं।

बिच्छू उतारने का मंत्र

धवलिया विछु कातर वालियो,
कालो विछु कातर वालियो,
निलो विछु कातर वालियो,
कापलियो विछु कातर वालियो,
छेन्डीयो विछु कातर वालियो,
लहरियो विछु कातर वालियो,
जहरीयो विछु कातर वालियो,
काली गाय कपन चड़ी,
एक विछी खुट चड़ीयो, लाव मारी पिछे,
माराती नि उतरे तो बारह हनुमान नि दुहाई, सोगन्ध
माराती नि उतरे तो मारा गुरू की दुहाई, सोगन्ध
माराती नि उतरे तो बारह भिलट की दुहाई, सोगन्ध।

बिच्छू उतारने का मंत्र

काली गाय कपने गई, हरे डूंगरे गई वहाँ से
चरि फिरि सागड़े गोठाणे गई वाहाँ एक पोठो करीयो

एक पोठाम् बारेह विछु निकल्या, एक विछु चोटी पे चड़्यो
मेर से निहि उतरे मेरा गुरू उतारा,

इस मंत्र को एक बार में नहीं उतरे तो 10 मिनिट बाद दुबारा बोलना और जहाँ तक चढ़ा हुआ है वहाँ तक हाथ फेरते-फेरते नीचे की ओर लाते हैं। बिच्छू उतारने के लिये रखोड़े का उपयोग करते हैं। बिच्छू उतारने के लिये अलग-अलग मंत्र का उपयोग करते हैं।

सर्प दंश से सम्बन्धित मंत्र

बड़वा नीम की पाँच टहनी पत्ते वाली लेता है और पीड़ित व्यक्ति के सामने बैठकर सर्प का जहर उतारने के लिए मंत्र बोलता है, नीम की टहनियों को पीड़ित व्यक्ति के सिर से झाड़ा डालता है।

जिसे सर्प काटा हो उसे पूर्व दिशा की ओर मुँह करके जमीन पर बैठा देते हैं, लाल धागा भीलट बाबा की मान लेकर बड़वा पीड़ित के दाहिने हाथ में बाँध देता है। मान यह लेता है कि जहर उतर जायेगा तो सवा पाव शक्कर, पेठा, गेहूँ का आटा, घी लेकर प्रसाद बनाकर भीलट बाबा को भोग लगाकर, सबसे पहले भानेज को प्रसाद देकर बाद में दूसरे लोगों को बाँटूगा।

मंत्र-1

चालक चलावनि बोर की मिठी लगडोडा
परोलो की पपड़ी काली कुत्ती गले काम से दर में घुसी
हाल हेर करी पकड़ा नवनागनी नव वाटा पड़या तो एक
वाटो दिवड़ खाई गयो कुआँमर जड़ी ताहॉ आया साथ हाथी
हाथी, हाथी रिस करें रोटा, रोटी भान दिया,
ताह निकलीयो कालो नाग नाग का बेटा का नाम डुचकियो,
उदालाल, पानलाल, धामन सुरित निल बागरे छिट परनी,

मंत्र-2

माथे काटनी नी मुड़ल में मेकिस जिप काटीन आरती में
मेकिस हजुर जामनी दाँव पाय खड़ो रहीन धोग दिस

मंत्र-3

दरिया न काँटा वाकि वड़ली न चाहाँ बाधीयो हिरन हिडोलो
दरिया न काँटा वाकि वड़ली न चाहाँ हिचारू छिट परली नागन,
दरिया न काँटा वाकि वड़ली न चाहाँ हिचारू लाड़ी, बाड़ी नागन
फुफल, फुगारी
दरिया न काँटा वाकि वड़ली न चाहाँ बाधीयो हिरन हिडोलो,
ताहा हिचारू दिवेदो नागन धामन की नागन,
दरिया न काँटा वाकि वड़ली न चाहाँ बाँधीयो हिरन हिडोलो,
चाहा गुयरो गुहराव छीबरो नागन,
दरिया न काँटा वाकि वड़ली न चाहाँ बाधीयो हिरन हिंडोलो,
भुई सापन दरछायी
दरिया न काँटा वाकि वड़ली न चाहाँ बाधीयो हिरन हिंडोलो,
आम्बा-सम्बा हिदल नाखे भिलड़ बाबो धुराव न दखनाव,
हवा चाले हिड़ल हिचे, हिचे, हिचे दुट पड़ीयो,
दरियाम पड़यो, रहीयो मगर माछलो चुसि डासियो खाई गयो
धरती गुजपिय उतारू मारसी नि उतरेतो तो सवाँ हाथ डन्डो उतारू
सातपुड़ी जमीन माता इस्माल जोगी निकलियो
तो कपन गाय न गोह आयो, ग्वालीया पोरिया हतला ग्वालियर
पोरिया क इस्माइल जोगी पूछियो कि निल्लो, पिल्लो वासड़ो
देखियो नी पोरिया कहीयो कि भरिया डूँगर में छ बाबा
निलो, पिल्लो वासड़ो ढूंढतो-ढूंढतो गयो, भरिया डूँगर में
जड़ गयो वासड़ो सोलह लौंग, सुपारिया, हाथ में लेदी
गुगेड़ी लाकुड़ काखम में लेधा झोलना चोटियालो नारियल

अगरबत्ती लोबान चुनियो कुकड़ा कोरी भाटी नो दारू
काचा सुत, सुती देधो वासड़ा मर पूजा पाट
कर देदी दाऔ झाटको मारियो तो दुधियो तलाब बनियो
जेवडियो झाटको मारियो तो खुन न तलाव बनियो
वासड़ो काटिन दाबल बनाया, जाल बनाई, कालो नाग
फुक मारियो निल्ली, पिल्ली जमीन हईगई स्वर्ग में निल्लो, पिल्लो बाण
फुट गयो,

मंत्र–4

अम्बी न साम्बी जाल फेकेरे काला नागक धखा लागियो
काला नाग धरया गियो न दाबला भरने लागिया,
रामलो, धामलो तपन लागियो आबी न तुलवारा मार,
अदलिया फेरम रातु न दिसु गोबा वधवा लागिया,
कागनी फेरम रातु न दिसु गोबा वधवा लागिया,
आम्बी–साम्बी न जाल फेकेरे जोगी धुचकिया,
नागन काजे धरी लेदो न दाबल मे भरी लेधो,
चोकिया फेरन रातु न दिसु गोबा वधवा लागिया,
आम्बी रे साम्बी जाल रे फेकेरे जोगी, लाड़ी बान्ड़ी,
नागन फुफल फुगार,
मादल फेरू रातु न दिसु वधवा लागिया गोबा,
आम्बी रे साम्बी जाल रे फेकेरे जोगी उदालाल पानलाल,
रातु रे दिनु रे वधवा लागिया रे गोबा धोल फेरू,
रातु रे दिनु रे वधवा लागिया रे गोबा स्वर्ग ठलारो मार देधा,
गोबा वधबा लागिया चटकिया फुटकिया,
रामला गामला तपने लागिया,
तिरसठ जात न जनवार डोलन लागिया
तिरसठ जात न जनवार दाबला
म भरीन जोगी शोरी मामा न

झोपल गयो शोरी मामा
काई की काई भाई काई लाइयो जोगी बोलियो
तिरसठ जात ना जनवार दाबला
म भरीन लाईरियो शोरी मामा
कहियो की जोगी इन्छु कटियाला
जनवार काजे डुडिया में बसाड़ी न
समुद्र पली पार कर देजी
कापन गाय न गोह लागिया
बिच्च म गुवालिया पोरिया आया जोगी काजे पूछन लागियो,
इन्हु दाबला म काई लिजाई जोगी बाबा देधो दाबलो खोलिन
गुवालिया पोरिया देखिन घबराय गया
तिरसठ जनवार कहाँ ती लायो,
कुसल दाँत लहरीयो फेन वालो तो रेड़ भात
ना तो गुवालिया पोरिया
बोलिया कि जा बाबा इन्हूंक समुदु पली घड़ छोड़िया
दरिया न काट वाकि वरली
इस्माइल जोगी जाई हिडोल बाधियो
हिचत–हिचत दुट पड़यो गयो मगरमाच्छला
चुसी डसी खाई गयो,

– यह मंत्रों के बाद में सभी देवी–देवता काम नाम बोलते हैं।

सातपुड़ी जमीन मुण्डीया सी राफ वासींग नाग,
बैलाबाबा, कुण्डी राणादेव, नाक में कुहतादेव, खाक में भवरा,
एक तागीया बबल, थानिया सुपड़ काडिया, शिवाबाबा,
महेश्वर वाला डेरा, नर्मदा माई, फुलबाई माता, बाघेश्वरी माता,
काली माई, कालका माता, डामरा माता, महीमाता, गायमुख माता,
भिलड़ देव, खेड़ा देवती, रानी काजल, भेस्टा कुंवर देव,
नाहाराजा कुंवर।

ऊँकारजी बाबा, सिंगाजी बाबा, गणपति बाबा,
बलवारी बाबा, हनुमान, महाकालडेरा बाबा, हनुमान बाबा,
रामभगवान, भिमा, माता कुन्ती, सितामाता, महादेव गोरा,
चाँद, सूरज, मालदेव, उगवना, बुड़वना, तरफ मारा दरवाजे।

– यह मंत्र पूरा होने पर सर्प का जहर उतर जाता है, फिर उतारने वाला या बड़वा जंगल में जाता है और जंगली जड़ी–बूटी खोजकर लाता है। जड़ी–बूटी को बारीक पीसकर, पानी में घोलकर पिला देते हैं और वह सर्प का काटा हुआ अच्छा हो जाता है।

मृत्यु गीत

खोटो बेटो आज काम को
खोटो बेटो आज काम को, खोटो रूप्यो आज काम को।
एक दिन खोळो बांधि लिजियो राम॥ 2॥
खोटा रूप्या की ओरावणी करि दिजो राम,
खोटो रूप्यो आज काम को॥ 2॥
खोटी बहु आज काम की राम, एक दिन भोजन बणाइ देवो,
खोटी बहु आज काम की राम॥ 2॥
आज को वो भोजन जिमाड़ि देवो राम॥ 2॥
खोटी बेटी आज काम की, एक दिन मसरू ओढ़ाई दीजो॥
खोटी बेटी आज काम की राम॥ 2॥
खोटो जवाँई आज काम को, एक दिन काण मोड़ाइ देवो राम,
खोटो जवाँई आज काम को॥

भजन में कहा गया है कि– माता–पिता के अन्तिम संस्कार के लिए खोटा पुत्र, खोटा रुपया, खोटी बहू, खोटी बेटी, खोटा जवाँई सभी काम के हैं। खोटा पुत्र भी अन्तिम संस्कार के लिए आवश्यक है क्योंकि माता–पिता का अन्तिम संस्कार अगर पुत्र न करे तो उसकी आत्मा को शान्ति नहीं मिलती

है। खोटा रुपया भी शव पर काम आ सकता है। खोटी बहू भी काम की है। मृतक के लिए भोजन बनाती है। बेटी भी मसरू शव पर ओढ़ा देती है। जवाँई भी अन्तिम संस्कार के लिए काम का है, क्योंकि नुक्ते में काण भाँजने के लिए बकरा लाता है। तात्पर्य यह है कि इनके बिना मृतात्मा को शान्ति नहीं मिलती है।

मृत्यु गीत

पावो फाटियो ने सूरिमल उगियो रे भँवरा।
पावो फाटियो ने सूरिमल उगियो रे भँवरा॥
जीवता क तो नि दी रोटी रे भँवरा।
जीवता क तो नि दी रोटी रे भँवरा॥
मरिया पाछे बेटो लाडु उड़ाया रे भँवरा।
मरिया पाछे बेटो लाडु उड़ाया रे भँवरा॥
जीवता क तो बेटो कपड़ा नि पेराया रे भँवरा।
जीवता क तो बेटो कपड़ा नि पेराया रे भँवरा॥
मर्‌या पाछे बेटो मसरू ओढ़ाया रे भँवरा।
मर्‌या पाछे बेटो मसरू ओढ़ाया रे भँवरा॥
जिवता क तो बहु हिचके नि हिचाड्‌यो रे भँवरा।
जिवता क तो बहु हिचके नि हिचाड्‌यो रे भँवरा॥
मर्‌या पाछे बहु हिचके हिचाड़े रे भँवरा।
मर्‌या पाछे बहु हिचके हिचाड़े रे भँवरा॥
जिवता क तो बेटो कुद्‌यां नि ऊँघळायो रे भँवरा।
जिवता क तो बेटो कुद्‌यां नि ऊँघळायो रे भँवरा॥
मर्‌या पाछे बेटो खुब ऊँघळावे रे भँवरा।
मर्‌या पाछे बेटो खुब ऊँघळावे रे भँवरा॥

महिलाएँ जनसामान्य को शिक्षा देती हैं- हे जीव! प्रभात और सूर्योदय होता है। जीवित रहते माता-पिता को पुत्र ठीक से भोजन नहीं देता है और

नुक्ते में लड्डू जिमाता है। जीवित रहते हुए पुत्र माता-पिता को ठीक से वस्त्र लाकर नहीं पहनाता है और मरने के बाद मसरू ओढ़ाता है। जब तक सास-ससुर जीवित रहें, तब तक बहू ने झूले पर नहीं झुलाया और मरने के बाद खूब झुलाती है। (इस क्षेत्र के आदिवासियों में मरने के बाद झूले पर झुलाया जाता है। कुटुम्ब के लोगों के अलावा दूसरे मातम के लिए आने वाले भी मृत शरीर को झूला देकर झुलाते हैं।)

जीवित रहते हुए माता-पिता को नहलाया नहीं और मरने के बाद खूब नहलाते हैं।

गीत में यह बताया गया है कि माता-पिता की सेवा पुत्र और पुत्रवधू को ठीक से करना चाहिए। मरने के बाद के कार्य तो चली आ रही परम्परा है।

मृत्यु गीत

दुख सागर भरिया दुख-सुख मन मा नि लावणा॥
राम सरीका रे राजा हुया, हारे जे घरे सतवन्ती नारी
आया रे रावण सीता लय गया
हाँ रे जिनका बुरा हया हाल, दुख-सुख मन मा नि लावणा।
हाँ रे हरिशचन्द्र सरीका रे राजा की, जे घर तारावन्ती नारी
आपना रे सत का कारणे, हाँ रे नीच घर भरियो पाणी।
दुख-सुख मन मा नि लावणा।
हाँ रे पाण्डव सरीका रे राजा वी।
हाँ रे जिन घर द्रोपती राणी
दुशासन चीर रे खेचिया, हरी पुरायो चीर
दुख-सुख मन मा नि लावणा।
संत कबीर की वीणती अरे सायब सुणलेणा
दास धना की विणती, हाँ रे रघुपति गुण गावणा।
दुख-सुख मन मा नि लावणा।

– किसी की मृत्यु होने पर गीत गाते हैं। संसार रूपी समुद्र दु:खों से भरा है। दु:ख-सुख मन में नहीं लाना चाहिए। जो जीव पैदा हुआ है उसकी मृत्यु होनी ही है, उसके लिए दु:ख नहीं होना चाहिए। उदाहरण देकर समझाया है कि- राजा राम जिनके यहाँ सती नारी थी, रावण आया और सीता का हरण कर ले गया। रावण का कैसा बुरा हाल हुआ? तात्पर्य यह है कि मनुष्य को अच्छे कर्म करना चाहिए, पाप नहीं करना चाहिए।

सतयुग में हरिश्चन्द्र राजा हुए, उनके यहाँ तारामती रानी थी। अपने सत्य के निर्वाह में (सपने में ब्राह्मण को राज्य का दान कर दिया था) उन्हें राजपाट छोड़ना पड़ा और दान के साथ दक्षिणा देने के लिए स्वयं और पत्नी बिक गए और मरघट की रखवाली की। कितना दु:ख झेला, किन्तु हिम्मत नहीं हारी। पुत्र के मृत्यु दु:ख को जाना। इसलिए मरने वाले के प्रति दु:खी नहीं होना चाहिए।

पाण्डव समान द्वापर में राजा हुए, उन पर कितना दु:ख पड़ा था, राजपाट हार गए, खुद हारे और पत्नी द्रोपदी को हार गए। दु:शासन द्रोपदी का चीर खींचने लगा था, उसे नग्न करना चाहता था, किन्तु भगवान श्रीकृष्ण ने चीर को बढ़ाया और उसकी लज्जा रखी। दु:ख संसार में सभी पर पड़ता है उसको मन में नहीं लाना चाहिए।

संत कबीर विनती करते हैं कि सुनो! भगवान का राम नाम लेना चाहिए, जिससे मृतात्मा को शान्ति प्राप्त होती है। गीत का मुख्य उद्देश्य परिवार वालों का ध्यान दु:ख से दूर हटाना है।

मृत्यु गीत

चुइण्यो चुइण्यो महलो गंधये राम।
चुइण्यो चुइण्यो महलो गंधये राम।
बणिया रे श्री राम पोपट
एक दिन रइणें नि पायो, राम को बुलावो आयो।
एक दिन रइणें नि पायो, राम को बुलावो आयो।

लागि गयो द्वारिका री वाट राम, बणियो पोपट श्री राम को।
चुइण्यो-चुइण्यो हिचको बंधायो राम।
चुइण्यो-चुइण्यो हिचको बंधायो राम।
एक दिन हिचणें नि पायो राम।
एक दिन हिचणें नि पायो राम।
आइ गयो राम को बुलावो।
लागि गयो द्वारिका री वाट राम, बणिया रे श्री राम पोपट।
चुइणों चुइणों भोजन रंधाड्यो राम।
चुइणों चुइणों भोजन रंधाड्यो राम।
एक कवळ नि खाणें पायो राम, आइ गयो राम को बुलावो।
लागि गयो द्वारिका री वाट राम, बणियो रे पोपट श्री राम को।

– चुन-चुनकर महल बनाया। महल अच्छा बना। एक दिन भी रहने न पाया, मेरे राम। मेरे राम तो भगवान राम के पोपट बनकर उड़ गए। मेरे राम ने द्वारिका का रास्ता पकड़ लिया।

अच्छा झूला बँधाया मेरे राम ने, पर एक दिन भी झूलने नहीं पाये और राम का बुलावा आ गया। मेरे राम भगवान राम के पोपट बनकर उड़ गए। मेरे राम ने द्वारिका का रास्ता पकड़ लिया।

मेरे राम ने अच्छा भोजन बनवाया, किन्तु एक कौर भी नहीं खा पाये, भगवान राम का बुलावा आ गया। वे पोपट बनकर उड़ गए और द्वारिका का रास्ता पकड़ लिया। पत्नी इस प्रकार पति की मृत्यु पर रो-रो कर दु:ख प्रगट करती है।

मृत्यु गीत

राम भजो रे, भगवान मारो मन काई म लागी रयो।
राम भजो रे, भगवान मारो मन काई म लागी रयो।
राम भजो रे, भगवान राम भजो रे।

राम भजो रे, भगवान राम भजो रे।
भगवान मारो मन बेटा-बहु म रमी रयो रे राम।
भगवान मारो मन बेटा-बहु म रमी रयो रे राम।
भगवान मारो मन कई मा लागी रयो।
राम भजो रे, भगवान राम भजो रे।
राम भजो रे, भगवान राम भजो रे।
भगवान मारो मन खेती-वाड़ी म लगी रयो।
भगवान मारो मन खेती-वाड़ी म लगी रयो।
राम भजो रे, भगवान राम भजो रे॥
मारो मन छोरी जवाँई म लगी रयो॥
राम भजो .....
मारा मन कइ मा लगी रयो॥
राम भजो .....
मारो मन नाती-पोती म लगी रयो॥
राम भजो .....
मारो मन कइ मा लगी रयो॥
राम भजो .....
मारो मन घर-बार म लगी रयो॥
राम भजो .....

– मानव के अन्तिम क्षणों में जब केवल श्वाँस बाकी रहती है, उस समय की दशा का इस मृत्यु गीत में वर्णन किया गया है।

राम का भजन करो। हे भगवान! मेरा मन किसमें लगा हुआ है जिससे मेरा जीव अटका है। मरणासन्न दशा वाले मनुष्य से कहलाया गया है कि मेरा मन अपने पुत्रों और बहुओं में लगा हुआ है। इन सभी का मोह मेरी आत्मा को रोके हुए है। आगे कहा गया है कि मेरा मन खेती-बाड़ी के मोह में अटका हुआ है। मेरी खेती-बाड़ी इतनी बड़ी और अच्छी है। यह संसार की मोह माया है इसमें जीव अटका है। लड़की और जवाँई के मोह में मेरा जीव

अटका है। नाती और पोती का मोह भी रोके हुए है। घर-बार का मोह भी रुकावट डालता है।

गीत का मुख्य उद्देश्य यह है कि माया मोह के सांसारिक बंधनों में मनुष्य पड़ा रहता है। (राम का भजन करना चाहिए जिससे मनुष्य को मुक्ति प्राप्त होती है।) लोगों को भगवान के भजन की ओर प्रेरित करने के प्रयास में ये उदाहरण दिये हैं।

मृत्यु गीत

पाप धरम की गाठड़ी रे दयाराम, गाठड़ी काहाँ उतारां रे जी॥
गाठड़ी त ढोल्या नीचे उतारो रे, दयाराम भगवान लेखो मांगेगा॥
भगवान लेखो त तुम पछ लीजो रे, हम त भूखा चली आया॥
ताजा भोजन की थाली परसेली रे राम,
कोई के जिमाड़्या होय त जीमो राम
निहिं ते भूख्या चली जाओ राम॥
भगवान लेखो मांगे राम॥
पाप धरम की गाठड़ी रे राम,
गाठड़ी काहाँ उतारां रे राम,
काठड़ी त ढोल्या हेट उतार दो राम,
भगवान लेखो मांगे राम॥
लेखो तो तुम पाछे लेजो, तीसा मरता आया जी॥
कोरा-कोरा मटका भरिया रे राम,
तुमने पिलाया होय तो पीवो जी।
नि तो तीस्या चली जावो राम॥
पाप धरम की गाठड़ी रे दयाराम,
गाठड़ी काहाँ उतारूँ॥
गाठड़ी तो ढोल्या हेट उतारो राम,
भगवान लेखो मांगे जी॥

लेखो तो तुम पाछे लेजोजी।
हम तो उघाड़ा आया जी॥
कोरा-कोरा कपड़ा गाठड़ा बंदिया पड़िया राम,
कोई के पेहराया होय त पेरो राम,
नहीं तो उघाड़ा चल्या जाओ राम॥
भगवान लेखो मांगे जी॥
पाप धरम की गाठड़ी रे दयाराम गाठड़ी काहाँ उतारूँ॥
गाठड़ी तो ढोल्या हेट उतारो राम,
भगवान लेखो मांगे जी॥
लेखो तो तुम पाछे लीजो
हम तो पायं बलता आया राम॥
नवी नवी मोजड़िया गाठड़ा मा बंधी
कोई के पेहराया होय त पेरो जी,
नहीं तो अलवाणा चल्या जाओ राम
भगवान लेखो मांगे जी॥

– मनुष्य इस देह को छोड़कर जब धर्मराज के यहाँ जाता है तो वहाँ क्या कहता है? क्या उत्तर मिलता है? यह इस गीत में बताया गया है।

मनुष्य इस संसार में खूब धन अर्जित करता है, कोई मेहनत करके कमाता है और कोई चोरी, भ्रष्टाचार, मिलावट से धन अर्जित करता है। कोई अपनी मेहनत की कमाई से धर्म कार्य करता है, दान देता है। कोई दुनिया वालों पर प्रभाव डालने के लिए पाप की कमाई को धार्मिक कार्यों में लगाकर अपने को आदर्श दानी कहलाता है, किन्तु इस संसार से जब जाता है तो धन-दौलत, पुत्र-बहू आदि सभी यहीं रह जाते हैं, कोई भी साथ में नहीं ले जा सकता। उसके साथ तो केवल पाप और धर्म की गठरी जाती है। जिसने अपने परिश्रम की कमाई से जीवन-यापन करते हुए यथाशक्ति धरम किया है, वही साथ जाता है। पाप की कमाई वाला पाप की गठरी ले जाता है। वहाँ जाकर विनय करता है कि दयालु पाप-धरम की गठरी साथ में लाया हूँ इसे

कहाँ उतारूँ? उसे उत्तर मिलता है- दयाराम गठरी तो पलंग के नीचे रख दो, भगवान हिसाब माँगेंगे। तुमने कितना धरम किया है और कितना पाप किया है? मनुष्य वहाँ कहता है कि- हिसाब तो आप बाद में लेना, मैं दुनिया से भूखा आया हूँ, मुझे भोजन चाहिए। उत्तर मिलता है कि ताजे भोजन की थाली परोसी हुई है, तुमने अपनी मेहनत की कमाई से किसी अपंग, अनाथ, गरीब, साधू, ब्राह्मण को जिमाया हो तो जीम लो, नहीं तो भूखे चले जाओ। अरे राम! भगवान तो हिसाब माँगते हैं, तुम्हें पात्रता आती हो तो जीमो।

आगे इसी प्रकार प्रश्न करके कहता है कि- मैं प्यासा आया हूँ, मुझे पानी चाहिए। उत्तर मिलता है कि किसी प्यासे को पानी पिलाया हो तो पी लो, नहीं तो प्यासे जाओ। यहाँ ठंडे पानी के मटके भरे हैं, तुम्हें पात्रता हो तो पी लो।

आगे जीव कहता है- मैं उघाड़ा आया हूँ वस्त्र चाहिए। उत्तर मिलता है कि यहाँ नये-नये कपड़ों के गाठड़े बँधे हैं। तुमने किसी गरीब, असहाय, को वस्त्र दान किया हो तो पहन लो, नहीं तो उघाड़े चले जाओ। आगे कहता है कि मेरे पैर जलते हैं- मोजड़िया चाहिए। उत्तर वही मिलता है कि तूने किसी को मोजड़िया पहनाई हो तो पहन लो, नहीं तो वैसे ही चले जाओ। भगवान तो हिसाब माँगते हैं।

इस मृत्यु गीत का मुख्य उद्देश्य यह है कि दुनिया में अपने परिश्रम की कमाई से जीवन-यापन करते हुए उसमें से बचे तो यथाशक्ति गरीब, अपंग, ब्राह्मण, साधु को दान देना चाहिए। इस प्रकार दान की ओर प्रेरित किया गया है।

मृत्यु गीत

टेक- *अरे थारो बहुत दिन म आयो दाव,*
म्हारा हंसा समली न चौपट खेल रे।

चौक-1 *अरे चोपट मांडि सान मेरे हंसा खेलर्‌यो*

घड़ि चार रे, अरे हंसा खेलर्‌यो घड़ी चार रे,
समली न चोपट खेलो मेंरे हंसा, यो जुग मांडिया को दाव
म्हारा हंसा समली न चोपट खेल।

चौक–2 *चार खाणी की चोपट, बणी रे हंसा चौरासी*
घर को यो दाव रे, अरे हंसा चौरासी घर को यो दाव रे,
अरे जीत तो सुर पुर मरे जासे
नहिं तो फिर चौरासी म जाय, म्हारा हंसा समली न खेल

चौक–3 *चौरासी घर की चौरासी सार हंसा ब्रह्मा न फासो यो डालियो रे,*
अरे हंसा ब्रह्मा ने यो फासो डालियो रे,
सम्हली न सार चलो रे मेंरे हंसा,
यो ताकीर्‌यो यमराज मेंरे हंसा, समली न चोपट खेल रे,
अरे यारो बहुत दिन म दाव आयो रे, समली न चोपट खेल।

छाप– *कहे कबीरा सुणो धरमदास ये पंथ हे निरवाणी रे*
यहि रे पंथ की करो रे परीक्षा, थारो हांसो गये सतलोक
मेंरे हंसा समली न चोपट खेल।

– अरे मानव! चौरासी लाख योनियों के बाद तुझे यह मानव जन्म प्राप्त हुआ है, यह अवसर तुझे बहुत वर्षों बाद प्राप्त हुआ है। इस पवित्र योनी में बहुत सम्हलकर चौपड़ खेल, मतलब यह है कि इस काया पर दाग मत लगने दे।

अरे मानव! छान में (बरामदे में) चौपड़ बिछी है, चार घड़ी खेल रहा है। यह संसार अल्प समय के लिए मिला है, इसमें सम्हलकर खेलो, अगर चूक गए तो अवसर चूक जाओगे। अर्थात् भक्ति कर अच्छे कार्य करो, इस काया पर कलंक न लगने दो। चार खानों की चौपड़ खेलने की चौकड़ी बनी है, उसमें चौरासी घर हैं। अरे! जीत गया तो स्वर्ग में जायेगा और हार गया तो फिर चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ेगा, इससे तू सम्हलकर चल।

चौपड़ में चौरासी घर हैं, चौरासी सार हैं। ब्रह्माजी ने यह पासा डाला है। सम्हलकर सार चलो, यमराज ताक रहा है। मानव बहुत दिन में अवसर तेरे हाथ आया है। चूक गया तो यमराज ले जायेगा और नरक में डालेगा।

कबीरदासजी कहते हैं– धरमदास सुनो! यह पंच निरवाणी है, इस पंथ की परीक्षा करो, तेरा हंसा सतलोक में गया, हंसा सम्हलकर खेलो।

मृत्यु गीत

टेक– *क्यों झुरवो न मेरी माई ममता क्यों झुरवो मेरी माई।*

चौक–1 *जंगल–जंगल की जड़ी बुलाई,*
वेद्य करो मेरा भाई, अरे हंसा वैद्य करो मेरा भाई।
अरे ये जड़ियां कछु काम नी आई।
एसी आदल राम घर की आई,
ममता क्यों झुरवो मेरी माई।

चौक–2 *पाँच हाथ को रेजो बुलायो, सुन्दर काया ढकाई,*
अरे हंसा सुन्दर काया ढकाई,
अरे चार मिली चवरग्या उबीया,
एसो छछ म लियो उटाई, ममता क्यों झुरवो मेरी माई

चौक–3 *डेल लगुण थारी त्रिया संगाती,*
झोपड़ा लगुण तेरि माता, अरे हंसा झोपड़ा लगुण तेरि माता
नंदी लगुण तेरा कुटुम कबीला, ऐसो वहां छोड़िया रे अकेला
ममता क्यों न झुरवो मेरी माई

चौक–4 *माता रोवे थारी जलम जोगणी,*
बइण वार तिवार, त्रिया रोव तीन घड़ी रे।
ऐसो दूसरो करग घर वास, ममता क्यों न झुरवो।

चौक–5 *जंगल–जंगल की लकड़ी बुलाई, त्योको सल रचाई,*
अरे हंसा त्योको सल रचाई।

चार मिलि न चवरंग्या ऊब्या
ऐसी उल्टी आग लगाई, ममता क्यों झुरवो मेरी माई।

चौक-6 *हाड़ जले जो बन्द की लकड़िया*
बाल जले रे हरिया घास, आरे हंसा हरिया घास।
अरे हीरा सरीकी काया जलत है,
ऐसो कोई नी आवेगा पास, ममता क्यों न झुरवो।

छाप- *कये कबीरा सुणो भई साधो यो पंथ है निरवाणी।*

- माता की ममता क्यों दु:खी हो रही है। कई जंगलों से जड़ी-बूटियाँ बुलाकर वैद्यों ने उपचार किया, किन्तु कोई काम नहीं आया। ऐसा राम के पार का बुलावा आया और हंसा (जीव) चला गया।

पाँच हाथ का कफन बुलाया और सुन्दर शरीर को ढांका। अर्थी के चारों खूँट पर चार लोग खड़े हुए और शीघ्र उठा लिया। ममता क्यों दु:खी हो।

दरवाजे तक पत्नी साथ गई, झोपड़ों तक माता गई, नदी तक कुटुम्ब गया और वहाँ क्रियाकर्म कर अकेला छोड़ आये।

तेरी माता पूरे जीवन रोती है और बहन त्यौहार पर रोती है। पत्नी तीन घड़ी रोती है और दूसरा घर कर लेती है।

जंगल की लकड़ी बुलाई और आग लगा दी।

शरीर लकड़ी के समान और बाल घास के समान, हीरे के समान काया जल रही है, कोई पास नहीं आता है।

मृत्यु गीत

टेक- *आर तुन मनक्या जनम गमायो हंसा, नाम नहिं जाण्यो राम को।*

चौक-1 *हारे खाई न दिन गमाविया रे हंसा,*
सोइ न गमाइ तुन रात रे, आरे हंसा सोइन गमाइ तुन रात रे

हीरा सरीका तुन जलम गमाया,
एको कवड़ी मोल नइ पायो हंसा नाम नहिं जाण्यो राम को।

चौक-2 *तन की बणाइ तुन ताकड़ी, हांसा रे हांसा,*
मन को बणायो सेर रे, आरे हांसा मनको बणायो तुनसेर रे।
सुरत नुरत दोनो डांडी लगाई, हांन थारा तोलणम कछु फेर
हांसा नाम निजाण्यो राम को।

चौक-3 *सकर विखरी रेत म रे हंसा, कसि पाछि आवे हाथ रे।*
अरे हंसा कसि पछि आवे हाथ रे।
सरग सुवागणी ऊतरी रे, ऐसी किड़ियां बणकर चुंग।
हंसा नाम नि जाण्यो राम को।

छाप- *तिरगुणी घाट संत का मेळा*
कसि पत उतरेगा पार रे।
कसि पत उतरेगा पार रे।
गऊ का दान तुम देवो मोरे हंसा।
तेरा धरम उतारेगा पार,
हंसा नाम नि जाण्यो राम को।

अरे जीव! तूने मानव जन्म खो दिया, राम का नाम नहीं जाना।

अरे मानव! तूने खाकर दिन खो दिए और सोकर रात खो दी। हीरे के समान तूने जन्म खो दिया। मानव जीवन का मूल्य एक कौड़ी के बराबर न पाया। राम का नाम न जाना।

इस शरीर की तूने तराजू बनाई और मन का सेर बनाया। सुरत-निरत दोनों डांडी लगाई और तेरे तौलने में कुछ कपट है, तूने राम का नाम न जाना।

अरे जीव! शक्कर रेत में बिखर गई, वह अब हाथ में नहीं आ सकती, समय चला गया अब क्या? उस रेत में बिखरी शक्कर को चीटियाँ बनकर चुग अर्थात् और चौरासी लाख योनियों में भटक। त्रिगुण घाट पर संतों का मेला

किस प्रकार पार उतरेगा? गोदान करो, तेरा धरम पार उतारेगा। तूने राम का नाम न जाना।

मृत्यु गीत

टेक– दल खोलो कमल का फूल हंसा, सायब रे न मिलावण ना होय रे।

चौक–1 गऊ न का दूध नीबजे रे हंसा, दूध का दही होय रे।
आरे हंसा दूध न का दही होय रे।
मयड़ो रोळो माखण नीबजे रे, ऐसो फिर नहिं दहिड़ो होय
सायब रेन मिलावण होय।

चौक–2 फूल फूलियो गुलाब को हंसा, भँवरो गयो लोभाय रे,
आरे हंसा भँवरो गयो लोभाय रे।
कली–कली भँवरो गुँजी रह्यो हंसा,
ऐसो फूल गयो कुम्हलाय।
सायब रे न मिलावण ना होय रे।

चौक–3 पाटियां पाड़ी रूड़ा प्रेम की रे हंसा, सोभती बिंदिया सजाई रे।
आरे हंसा रे न मिलावण ना होय रे।
चूंदड़ ओढ़ कोई प्रेम की रे, वकि मुक्ति का होय कल्याण,
सायब रेन मिलावण ना होय रे।

चौक–4 नंदी किनारे घर कर्यो हंसा, नहावत निरमल नीर रे।
आरे हंसा नहावत निरमल नीर रे।
धरमी राजा पार उतरिया, ऐसो पापी गोता खाय
सायब से मिलावण ना होय रे।

छाप– कइये कमाली कबिर सा की लड़की, ऐसा खत अमरापुर पाया।

– हंस कमल दल का फूल खोलो, भगवान से मिलना न हो। गौ से दूध उत्पन्न होता है, दूध से दही बनता है, छाछ बनाई, मक्खन निकाला,

उसके बाद दही नहीं हो सकता, इसी प्रकार समय खो दिया फिर भगवान से मिलना नहीं हो सकता।

गुलाब का फूल खिला, उस पर भँवरा लुभाया। कली–कली पर भँवरा गुंजार करता रहा और ऐसा करते फूल मुरझा गया। इस प्रकार ऐसा करते हुए अरे मानव! उस फूल के समान तेरी जिन्दगी खत्म हो गई। भगवान का भजन न किया, इससे भगवान का सामीप्य नहीं हुआ। फिर चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ेगा।

अरे हंसा (जीव)! महिलाओं को सम्बोधन किया गया है– स्नान किया, सिर के बालों की पाटियाँ प्रेम से पाड़ी। ललाट पर सुन्दर बिन्दी लगाई, इससे भगवान का सामीप्य नहीं मिलता है। अरे! भगवान से लगन की चूनरी ओढ़ यानी भगवान का भजन भी कर, जिससे मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो। आनन्दपूर्वक जीवन के साथ भजन भी कर।

अरे जीव! नदी के किनारे घर बनाया और खूब निर्मल जल से स्नान किया, किन्तु धर्म नहीं किया? धर्म करने वाले पार उतर गए अर्थात् इस संसार रूपी नदी से पार उतर गये। तात्पर्य यह कि मुक्ति पा गये और पापी बीच में ही गोते खाते हैं। कबीरदासजी की पुत्री कमाली कहती है कि धर्म करने वालों को अमरापुर की प्राप्ति होती है।

मृत्यु गीत

टांडो लाद चल्यो बणजारो।

टेक– अरे मन लोभी थारो काई रयण को पतियारो।

चौक–1 गिर पड़्यो कोट, बिखर गइ माटी॥
माटी को हुइ गयो गारो, थारो कइ रयण को पतियारो।
मन लोभी थारो कइ रयण को पतियारो।

चौक-2 वाड़ लगायो तुन बहुत रसीलो भाई
जेकि पेरी को रस न्यारो-न्यारो।
थारो रयण को कइ पतियारो।

चौक-3 बुझ गयो दीपक जळ गइ बाती॥
भाई थारा महल म पड़ि गयो अंधियारो।
थारो काइ रयण को पतियारो
मन लोभी, टांडो लाद चल्यो बणझारो,
थारो काइ रयण को पतियारो

चौक-4 लेय कटोरो भिक मांगण निकल्यो॥
भाइ कोइ न नि दियो उधारो,
थारो रयण को काइ पतियारो।
टांडो लाद चल्यो बणझारो,
थारो रयण को काइ पतियारो।

छाप- कई ये कबीर सुणो भई साधु
ऐसा संत अमरापुर पाया,
थारो रयण को कइ पतियारो।

- बणजारा अपना टांडा बैलों पर लादकर चला। अरे मानव! तू उस बणजारे की बालद के समान अल्प समय के लिए इस संसार में आया है। बणजारा अपने मार्ग पर जाते हुए रात्रि में ठहरता है और सबेरा होते ही अपने गंतव्य की ओर टाण्डा (माल- असबाब) बैलों पर लादकर चल पड़ता है, उसी के समान मानव तू भी दुनिया में आया है और समय पूरा होने पर चल पड़ेगा। अरे मन! तेरे रहने का क्या भरोसा है, यानी कब दुनिया से जाना पड़ेगा, क्या भरोसा है?

यह शरीर पंचतत्व का बना है, कच्ची मिट्टी के कोट के समान है। जिस प्रकार कच्ची मिट्टी का किला गिरकर बिखर जाता है और उस माटी का

गारा हो जाता है, उसी प्रकार कब जीव इस घर को छोड़कर चला जायेगा और यह पंचतत्व द्वारा निर्मित देह मिट्टी (गारा) हो जायेगी। तेरा रहने का क्या भरोसा है? अरे लोभी मन! तेरा रहने का क्या भरोसा है? तात्पर्य है जो भी भजन, धरम-पुण्य, भले कार्य करके अपने मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त कर।

अरे लोभी मानव! तूने बहुत मीठे रस वाला गन्ने का खेत भरा, उस गन्ने की पेरी (गन्ने में कुछ-कुछ दूरी पर गठानें होती हैं, उन गठानों के बीच के भाग को पेरी कहते हैं) के रस की मिठास अलग होती है। जड़ के ऊपरी हिस्से की पेरी का रस ज्यादा मीठा होता है और ऊपर जैसे-जैसे पेरी आती है क्रमशः उन पेरियों के रस की मिठास कम होती जाती है।

मनुष्य तू प्रारम्भ से ही भगवान की भक्ति में लग जा और उस भक्ति की मिठास को प्राप्त कर, उसमें मजा ले। आगे क्या भरोसा है, कब तक दुनिया में रहना होगा?

अरे मानव! दीपक बुझ जाता है और फिर रही-सही बत्ती भी जल जाती है। अरे भाई! दीपक बुझा और तेरे महल में अंधेरा हुआ। जीव चला गया तो इस शरीर में अंधेरा हुआ और शरीर की हलचल समाप्त हो जाती है। मानव मन तेरे रहने का क्या भरोसा है? इसलिए प्रारम्भ से ही चेत जा। कबीरदास जी कहते हैं कि जो मनुष्य प्रारम्भ से ही चेत कर भगवान की भक्ति और भले कर्म, धरम-पुण्य कर लेते हैं, ऐसे संत अमरापुर पा लेते हैं।

मृत्यु गीत

हाड़ मास का बणा रे पींजरा, भीतर भर्‌या भंगारा
ऊपर रंग सुरंग लगायो, अजब करी करतारा,
जोबन धन पावणा दिन चारा, अने जाता नि लागे वारा,
जोबन धन पावणा दिन चारा॥
पशु चाम के बाजा बने रे, नोबत बने नंगारा।

नर तेरि चाम काम नहिं आवे, नर तेरि चाम काम नहिं आवे
जळ भळ होइ अंगारा, जोबन धन पावणा दिन चारा॥
गरब कर्‌यो रतनागर सागर, केसा नीर मतवाळा
एसा-एसा वीर गरब माय गळिया, आधा मीठा आधा खारा
जोबन धन पावणा दिन चारा, अने जाता नि लागे वारा,
जोबन धन पावणा दिन चारा।
दस मस्तक वनी वीस भुजा रे, कुटम बहुत परिवारा
एसा-एसा नर गरब माय गलिया, लंका रा सरदारा
जोबन धन पावणा दिन चारा।
यो संसार ओस वाळो पाणी, अने जाता नि लागे वारा।
कहत कबीर सुणों भइ साधू, कहत कबीर सुणो भइ साधू
हर भज उतरोला पारा, जोबन धन पावणा दिन चारा॥

- यह मनुष्य का शरीर एक हड्डी और माँस का पिंजरा है, इसके भीतर भँगार भरा है। इस शरीर पर ऊपर अच्छा रंग-रोगन कर सुन्दरता प्रदान की है, यह भगवान की माया गजब की है। जवानी और धन-दौलत चार दिन की मेहमान है, इसे जाते देर न लगेगी। मानव तू इस हड्डी और माँस के पिंजरे पर तथा धन-दौलत पर अभिमान न कर, ये चार दिन के मेहमान हैं।

मानव! तू विचार तो कर। अरे! पशुओं के चमड़े के बाजे, नोबत, नगारे और भट्टी की धम्मन बनती है, परन्तु तेरा चमड़ा तो जलकर खाक होने वाला है। किसी के भी कुछ भी काम नहीं आने वाला है। तू उस परमात्मा का भजन कर, जिससे तू इस संसार रूपी समुद्र से पार उतर जायेगा।

रत्नाकर समुद्र ने घमण्ड किया था, किस पर घमण्ड किया था अपने निर्मल नीर पर, तो भगवान ने उसके जल को आधा खारा और आधा मीठा बना दिया। इस जीवन में अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि यह थोड़े समय का है, किसे मालूम कब राम के घर का बुलावा आ जाये।

लंका में राजा रावण, वह बहुत मायावी और बलशाली था। उसके

दस सिर और बीस भुजा थी और बहुत बड़ा कुटुम्ब था। रावण ने बहुत अत्याचार, अनाचार किया, कितने ही साधुओं को मारा। उसके पुत्र मेघनाथ ने इन्द्र को भी जीत लिया था। देवताओं को जीता। रावण ने सीता का हरण किया, किन्तु अपने बुरे कर्मों के कारण कुटुम्ब सहित मारा गया। जैसा उसका भाई विभीषण भगवान का भगत था, वैसा आचरण रावण भी रखता तो आज तक लंका पर उसके वंश का राज्य रहता। मनुष्य को अभिमान नहीं करना चाहिए। यह जवानी और धन-दौलत चार-दिन की मेहमान है।

इस दुनिया में मनुष्य ओस के पानी के समान अल्पकाल के लिए आया है। जैसे प्रात:काल पृथ्वी और पेड़-पौधों पर ओस का पानी दिखाई देता है और सूर्य की किरणों से अल्पकाल में उड़ जाता है। अरे मनुष्य! इस हड्डी और माँस के पिंजरे पर घमण्ड नहीं करना चाहिए। मनुष्य को अपने परिश्रम की कमाई से जीवन-यापन करते हुए भगवान का भजन भी करना चाहिए जिससे सद्‌गति प्राप्त हो। यह जवानी और दौलत चार दिन की मेहमान है।

मृत्यु गीत

मायारो मोटो जाळ देखन डोलो जियो।
भजियो नहिं भगवान गाफल भूलो जियो।
जिवड़ा रे जोइ ने हाल आखर मरनु जियो।
लोभी सोच विचार दोरो तरनों जियो।
जल ऊंडो सेंसार दोनों तरनों रे हो जी॥
थारे बांदण पचरंग पाग, सेली सोहे जियो।
मोतिड़ा तपे ले ललार, लुणिया लड़के जियो।
जिवड़ा से जोइ ने हाल, आखर मरनु जियो।
लोभी सोच विचार, आखर मरन्हु जियो।
जल उंडो सेंसार, दोरो तरनू रे हो जी॥
सांवलिया घर नार, मेलां बेटी जियो।

दरपण लेती हाथ मुखड़ो मुखड़ो देखे हो जी।
जिवड़ा रे जोइ ने हाल, आखर मरनु जियो।
लोभी सोच विचार नेसे मरणु जियो।
जळ उंडो सेंसार दोरो तरणों रे हो जी॥
आंधळा रे भजले राम, रटले माळा जियो।
सुरता रे भजले राम, रटले माळा जियो।
बोलिया कसन मुरार, बंसी वाळा रे हो जी।
जिवड़ा रे जोइ ने हाल, आखर मरनु जियो।
लोभी सोच विचार नेसे मरणु जियो।
जळ उंडो सेंसार दोरो तरणू रे हो जी॥

– इस दुनिया में माया मोह का जाल बहुत बड़ा है। अरे मानव! तू इस जाल में पड़कर मस्त हो रहा है। मेरा लड़का, मेरा घर, मेरा धन, मेरी पत्नी– ये सब माया ने जाल बिछा रखा है और मनुष्य इसी में उलझकर उस कर्ता भगवान को भूल जाता है और उसका भजन नहीं करता है। अरे जीव! तू यह जानकर चल कि आखिर मरना तो है। यह धन, पुत्र, पौत्र, पत्नी सब यहीं छूट जायेंगे, कोई साथ नहीं आयेगा। तू अपने मोक्ष के लिए भी कुछ काम कर अर्थात् भगवान का भजन भी कर। तू यह विचार कर कि यह संसार रूपी समुद्र बहुत गहरा है, इससे पार उतरना बहुत कठिन है। बस एक मात्र उपाय है तू भगवान को मत भूल। भजन में मानव को शिक्षा दी है कि– तू बहुत धनवान हो गया और सिर पर पचरंगी पगड़ी शोभायमान हो रही है, गले में स्वर्ण की कंठी पहने है। पगड़ी के तिल्लों के मोती झूल रहे हैं और खूब शोभा पा रहा है। अरे लोभी! तू यह जानकर चल कि आखिर मरना है। यह संसार रूपी समुद्र खूब गहरा है, इससे पार उतरना यानी मोक्ष प्राप्ति कठिन है। भगवान की भक्ति ही तुझे पार उतार सकती है।

मानव! तेरे घर में सुन्दर स्त्री है, महल में निवास है, हाथ में दर्पण लेकर अपना मुख निहारती है। तू सुख–भोग में लिप्त है। तूने कभी विचार किया कि अन्त में मरना है। आगे के लिए क्या किया? मुक्ति हेतु कुछ किया

कि नहीं। अरे! उस भगवान का भजन कर, जो तुझे पार उतारेगा।

अरे मनुष्य! तू इस माया–मोह में अंधा हो रहा है। भगवान का भजन कर ले, उनके नाम की माला जप ले। कृष्ण मुरारी बंशीवाले ने भी गीता में उपदेश दिया है कि शुद्ध भाव से मुझमें मन लगा लो तो मुक्ति हो जायेगी। अरे लोभी! सोच ले, मरना तो है ही और मरकर पार उतरना कठिन है इसलिए माया–मोह के फंदे से निकलकर भगवान का भजन कर ले। नहीं तो फिर चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ेगा।

मृत्यु गीत

पवाँ फाटियो ने सुरिमल उगियो राम।
पवाँ फाटियो ने सुरिमल उगियो राम॥
सास नणद क कइ क मीराबाई लात नहिं मारना राम।
सास नणद क कइ क मीराबाई लात नहिं मारना राम॥
उनको नाके गदड़ी को अवतार व, मीरा बाई राम।
उनको नाके गदड़ी को अवतार व, मीरा बाई राम॥
गदड़ी तो रूखड़े लुलाइ रा, मीराबाई राम।
गदड़ी तो रूखड़े लुलाइ रा, मीराबाई राम॥
सासू नणद क जूठो भोजन नि देणू राम, मीरा बाई राम।
सासू नणद क जूठो भोजन नि देणू राम, मीरा बाई राम॥
वको नाखसे मांजरी को अवतार राम, मीरा बाई राम।
वको नाखसे मांजरी को अवतार राम, मीरा बाई राम॥
मांजरी ते घेर–घेर दूध दहि उष्टो चाटे राम, मीरा बाई राम।
मांजरी ते घेर–घेर दूध दहि उष्टो चाटे राम, मीरा बाई राम॥
मीरा बाई कहे राम भजो रे राम।
आपणी देराणी–जेठाणी का कारा नहिं करनु रे राम।
वको नाखसे कुतरी नो अवतार व राम।
कुतरी बणिन घरे–घर भुखसे रे राम।
घरवाळा कथि छिपिन नि खाणूं राम।

वको नाखसे वागळी नो अवतार राम।
वागळी ते औंधी झाड़के लटके रे राम।
जिना मुहंडे खाय पलाज मुहंडे हागे रे राम।
मीरा बाई कहे राम भजो रे राम॥

– इस गीत में महिलाओं ने महिलाओं से कहा है कि भगवान राम का भजन करो उसी में कल्याण है। सवेरा हुआ और सूर्योदय हुआ। राम का भजन करो। अपनी सास व ननद को लात नहीं मारना, नहीं तो भगवान गधी का अवतार देगा, गधी बनकर घूरे पर लोटोगी। सास–ननद को जूठा भोजन न खिलाना, नहीं तो भगवान बिल्ली का अवतार देगा, बिल्ली बनकर घर–घर के दूध–दही के बर्तन व जूठा चाटना पड़ेगा। अपनी देरानी–जेठानी की बुराई नहीं करना, नहीं तो भगवान कुत्ती का अवतार देगा और घर–घर भूँकोगी। अपने पति से छिपकर नहीं खाना, नहीं तो भगवान चमगादड़ का अवतार देगा, दिन में नहीं दिखेगा और पेड़ पर औंधी लटकी रहोगी, एक ही मुँह से खाओगी और उसी से मल त्याग करोगी। मीराबाई का कहना है कि राम का भजन करो।